यीशु मसीह का जीवन चरित

Rajesh Arya

जकर्याह को स्वर्गदूत का दर्शन [स्थान: यरुशलेम]

उन दिनों जब यहूदिया (Judea) पर राजा हेरोदेस (Herod) का राज था तब वहाँ जकर्याह (Zacharias) नामक एक यहूदी याजक (priest) हुआ करता था। उसकी पत्नी का नाम एलीशिबा (Elisabeth) था। वे दोनों धार्मिक (righteous) प्रकृति के थे, और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों का पालन करते थे। किन्तु उनके कोई सन्तान नहीं थी, क्योंकि एलीशिबा बाँझ (barren) थी और वे दोनों बूढ़े हो चुके थे। *[Luke 1:5-7]*

एक दिन जब वह प्रभु के मन्दिर में जाकर धूप (incense) जला रहा था और लोग बाहर प्रार्थना कर रहे थे, उसी समय प्रभु का एक स्वर्गदूत (angel) उसके सामने प्रकट हुआ और धूप की वेदी (altar) की दाहिनी ओर खड़ा हो गया। दूत को देखकर वह घबरा गया, परन्तु दूत ने उससे कहा, *"हे जकर्याह, भयभीत न हो, क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है। तेरी पत्नी एलीशिबा एक पुत्र को जन्म देगी और तू उसका नाम यूहन्ना (John) रखना। वह प्रभु की दृष्टि में महान होगा और अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा (Holy Ghost) से परिपूर्ण होगा।" [Luke 1:8-15]*

इस पर जकर्याह ने प्रभु के दूत से पूछा, *"मैं कैसे जानूँ कि यह सच है? क्योंकि मैं तो एक बूढ़ा आदमी हूँ और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो गई है।"* स्वर्गदूत ने उसको उत्तर देते हुए कहा, *"मैं परमेश्वर का दूत जिब्राईल (Gabriel) हूँ और मैं तुझे*

यह सुसमाचार सुनाने को भेजा गया हूँ। और देख, क्योंकि तूने मेरी बातों पर विश्वास नहीं किया, इसलिये प्रभु के वचन पूरे न हो जाये, उस दिन तक तू गूँगा हो जायेगा, और बोल न सकेगा।" [Luke 1:18-20]

उधर बाहर लोग जकर्याह की प्रतीक्षा करते रहे और उन्हें अचरज हो रहा था कि वह इतनी देर तक मन्दिर में क्यों रुका हुआ है? फिर जब वह बाहर आया, तो वह बोल नहीं पा रहा था। लोग जान गए कि उसने मन्दिर में कोई दर्शन पाया है। फिर जब मन्दिर में उसकी सेवा के दिन पूरे हुए, तो वह वापस अपने घर चला गया। कुछ दिनों बाद उसकी पत्नी एलीशिबा गर्भवती हुई। *[Luke 1:21-24]*

कुँआरी मरियम (Virgin Mary) को स्वर्गदूत का दर्शन [स्थान: नासरत]

एलीशिबा को जब छठा महीना चल रहा था तब परमेश्वर द्वारा जिब्राईल को गलील (Galilee) के एक नगर नासरत (Nazareth) में एक कुँवारी के पास भेजा गया, जिसकी यूसुफ (Joseph) नामक एक व्यक्ति से सगाई हो चुकी थी। उस कुँवारी का नाम मरियम (Mary) था। स्वर्गदूत ने उसके पास आकर कहा, *"तुझ पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है! प्रभु तेरे साथ है!" [Luke 1:26-28]*

यह वचन सुनकर वह बहुत घबरा गई और सोचने लगी कि इस अभिवादन का क्या अर्थ हो सकता है? फिर स्वर्गदूत ने उससे कहा, *"हे मरियम, भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। और देख, तू गर्भवती होगी और एक पुत्र को जनेगी; तू उसका नाम यीशु (Jesus) रखना। वह महान होगा और परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा और प्रभु परमेश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन प्रदान करेगा। उसके राज्य का अन्त कभी नहीं होगा।" [Luke 1:29-33]*

इस पर मरियम ने स्वर्गदूत से पूछा, *"यह कैसे हो सकता है? मैं तो अभी कँवारी हूँ (I know not a man.)"* उत्तर देते हुए स्वर्गदूत ने कहा, *"पवित्र आत्मा (Holy*

Ghost) तुझ पर उतरेगा और परमेश्वर की सामर्थ्य तुझे अपनी छाया में ले लेगी; इस प्रकार जन्म लेनेवाला वह पवित्र बालक परमेश्वर का पुत्र (Son of God) कहलाएगा। और देख, तेरे ही कुनबे की एलीशिबा, जो बाँझ कहलाती थी, उसके गर्भ में भी एक पुत्र है; उसके गर्भ का यह छठा महीना है। परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।" इस पर मरियम ने कहा, *"देख, मैं प्रभु की दासी हूँ। तेरे वचन के अनुसार मेरे साथ ऐसा हो।"* तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया। *[Luke 1:34-38]*

मरियम का एलीशिबा के पास जाना [स्थान: Juttah]

शीघ्र ही मरियम यहूदिया के एक नगर को गई और जकर्याह के घर में जाकर एलीशिबा को अभिवादन किया। जैसे ही एलीशिबा ने मरियम का अभिवादन सुना, वैसे ही बच्चा उसके पेट में उछल पडा और एलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई। और उसने (एलीशिबा ने) ऊँची आवाज में पुकारकर कहा, *"तू सभी स्त्रियों में धन्य है, और जिस बच्चे को तू जन्म देगी वह भी धन्य है! यह अनुग्रह मुझे कहाँ से हुआ कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई? देख, जैसे ही तेरे अभिवादन का शब्द मेरे कानों में पड़ा वैसे ही बच्चा मेरे पेट में आनन्द से उछल पड़ा। तू धन्य है, जिसने यह विश्वास किया कि प्रभु ने जो कुछ कहा है वह हो कर रहेगा।"[Luke 1:39-45]*

मरियम कोई तीन महीने तक एलीशिबा के साथ रही और फिर अपने घर लौट आयी। *[Luke 1:56]*

बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना (John the Baptist) का जन्म [स्थान: Juttah]

एलीशिबा के प्रसव का समय पूरा हुआ और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। उसके पड़ोसियों और कुटुम्बियों ने यह सुन कर उसके साथ आनन्द मनाया। और आठवें दिन जब बालक का खतना (circumcision) करने के लिए लोग वहाँ आए और बालक नाम उसके पिता के नाम पर जकर्याह रखने जा रहे थे, तभी एलीशिबा ने कहा, *"नहीं,*

उसका नाम यूहन्ना रखा जाना है।" उन्होंने उससे कहा, *"तेरे परिवार में तो किसी का यह नाम नहीं है।"* तब उन्होंने जकर्याह से संकेत करके पूछा कि तू उसका नाम क्या रखना चाहता है? उसने लिखने की पट्टी मंगाकर उस पर लिख दिया, *"उसका नाम है यूहन्ना।",* और तुरन्त उसका मुँह खुल गया; वह बोलने लगा और परमेश्वर की स्तुति करने लगा। इन सब बातों की चर्चा यहूदिया के सारे पहाड़ी देश में होने लगी। *[Luke 1:57-65]*

और वह बालक (यूहन्ना) बढ़ने लगा और आत्मा में बलवान होता गया। वह जनता में प्रकट होने के दिन तक निर्जन स्थानों में रहा। *[Luke 1: 80]*

यूसुफ को स्वर्गदूत का दर्शन [स्थान: नासरत]

यीशु मसीह (Jesus Christ) की माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो चुकी थी, परंतु उनके "इकट्ठे होने" के पहले से वह पवित्र आत्मा (Holy Spirit) की ओर से गर्भवती पाई गई। यह जानकर उसका धार्मिक पति उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, इसलिए उसने उसे चुपके से त्याग देने की मंशा की। परंतु जब वह इन बातों पर सोच ही रहा था तब परमेश्वर का स्वर्गदूत (angel) उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, *"हे यूसुफ! तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ ले आने से मत डर, क्योंकि उसके गर्भ में जो है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह एक पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।"* वास्तव में यह सब कुछ इसलिए हुआ ताकि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता (prophet) के द्वारा कहा था, वह पूरा हो। वह भविष्यवाणी यह थी, *"देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल (Immanuel) रखा जाएगा, जिसका अर्थ है 'परमेश्वर हमारे साथ है'।" (यशा. 7:14)* तब यूसुफ नींद से जागकर परमेश्वर के दूत की आज्ञा अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहाँ ले आया, और जब पुत्र का जन्म हुआ तो उसने उसका नाम 'यीशु' रखा। *(यीशु का जन्म राजा हेरोदेस (Herod) के*

शासन के दिनों में यहूदिया (Judea) के बैतलहम (Bethlehem) नगर में हुआ था।) [Matthew 1:18-25; Luke 1:26-38]

यीशु का जन्म और नामकरण [स्थान: बैतलहम]

लूका रचित सुसमाचार के अनुसार, उन दिनों में औगुस्तुस कैसर (Caesar Augustus) की ओर से आज्ञा निकली कि सारे रोमी साम्राज्य के लोगों की जनगणना (census) अंकित की जाये। [यह पहली गणना उस समय हुई जब क्विरिनियुस (Cyrenius) सीरिया का राज्यपाल था।] सो गणना के लिए सब लोग अपने-अपने नगर को गए। अतः यूसुफ भी अपनी मंगेतर मरियम के साथ गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया (क्योंकि यूसुफ दाऊद के परिवार व वंश का था।) मरियम उस समय गर्भवती थी और उनके वहाँ रहते हुए ही उसके जनने के दिन पूरे हुए और उसने अपने पहलौठे पुत्र को जन्म दिया। क्योंकि उनके लिये सराय (inn) में जगह नहीं थी, इसलिए उन्होंने बच्चे को कपड़े में लपेटकर एक चरनी (manger) में लिटा दिया। *[Luke 2:1-7]*

गड़ेरियों को स्वर्गदूत का दर्शन [स्थान: बैतलहम के निकट]

जिस स्थान में यीशु का जन्म हुआ था उसके आसपास कुछ गड़ेरिये रहते थे जो रात को अपने झुण्डों का पहरा देते थे। उसी समय परमेश्वर का एक दूत उनके सामने प्रकट हुआ, और वे बहुत डर गए। तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, *"मत डरो; मैं तुम्हारे लिये बड़े आनन्द का सुसमाचार लाया हूँ, जिसे सुनकर लोगों को आनन्द होगा, क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे उद्धारकर्ता (Savior) प्रभु मसीह का जन्मा हुआ है। तुम उस बालक को कपड़े में लिपटा हुआ और चरनी में पड़ा पाओगे।"[Luke 2:8-12]*

जब स्वर्गदूत उन्हें छोडकर स्वर्ग लौट गया तो वे गड़ेरिये आपस में कहने लगे, *"चलो हम बैतलहम जाकर देखें।"* और वे शीघ्र चल दिये और वहाँ पहुँचकर उन्होंने

मरियम और यूसुफ को पाया और देखा कि बालक चरनी में लेटा हुआ है। गड़ेरियों ने जब उसे देखा तो इस बालक के विषय में जो संदेश उन्हें दिया गया था, उसे उन्होंने वहाँ सब को बता दिया। सब सुननेवालों ने गड़ेरियों की बातों से आश्चर्य किया, परन्तु मरियम ये सब बातें अपने मन में रखकर सोचती रही। उधर वे गड़ेरिये जो कुछ उन्होंने सुना था और देखा था, उस सब के लिए परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गए। *[Luke 2:15-20]*

और जब आठ दिन पूरे हुए और बालक के खतने का समय आया तो उसका नाम यीशु रखा गया। यह नाम स्वर्गदूत द्वारा, उसके गर्भ में आने से पहले दिया गया था। *[Luke 2:21]*

यीशु मन्दिर में अर्पित [स्थान: यरूशलेम]

जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार सूतक के दिन पूरे हुए और मरियम के शुद्ध होने का समय आया तो यूसुफ और मरियम शीशु यीशु को प्रभु को समर्पित करने और प्रभु की व्यवस्था के अनुसार कपोत (turtledove) का एक जोड़ा या कबूतर के दो बच्चे बलि चढाने के लिए यरूशलेम में ले गए। *[Luke 2:22-24]*

शमौन (Simeon) को यीशु का दर्शन [स्थान: यरूशलेम]

उस समय यरूशलेम में शमौन नामक एक धर्मी और भक्त व्यक्ति हुआ करता था। वह इस्राएल की शान्ति की प्रतीक्षा कर रहा था। पवित्र आत्मा द्वारा उसे बताया गया था कि जब तक वह प्रभु के मसीह के दर्शन नहीं कर लेगा तब तक मृत्यु को नहीं देखेगा। वह आत्मा से प्रेरित होकर मन्दिर में आया और जब यीशु को मन्दिर के भीतर लाया गया तो शमौन यीशु को अपनी गोद में उठा कर परमेश्वर की स्तुति करने लगा: *“हे प्रभु, अब तू अपने वचन के अनुसार मुझ अपने दास को शान्ति से मुक्त कर, क्योंकि मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है।”* फिर शमौन ने उन्हें आशीर्वाद दिया और

उसकी माँ मरियम से कहा, *''यह बालक इस्राएल में बहुतों के पतन और उत्थान का कारण बनेगा और उसका विरोध किया जायेगा।'' [Luke 2:25-30, 34]*

हन्नाह को यीशु का दर्शन [स्थान: यरूशलेम]

वहीं यरूशलेम में हन्नाह (Anna) नामक एक भविष्यद्वक्तिन (prophetess) रहती थी। वह चौरासी वर्ष से बूढ़ी विधवा थी और रात-दिन उपवास और प्रार्थना करते हुए मन्दिर में ही रहती थी। उसी समय वह शीशु यीशु और उसके माता-पिता के पास आकर परमेश्वर का धन्यवाद करने लगी और जो लोग यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोह रहे थे, उन सब से उस बालक के बारे में बातें करने लगी। *[Luke 2:36-38]*

यूसुफ और मरियम का घर लौटना [स्थान: नासरत]

प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सारा अपेक्षित विधि-विधान पूरा करके यूसुफ और मरियम गलील में अपने नगर नासरत (Nazareth) लौट आये। उधर बालक यीशु बढ़ता और हृष्ट-पुष्ट होता गया। वह बुद्धि से परिपूर्ण होता गया। परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था। *[Luke 2:39-40]*

हेरोदेस और पूर्व से आये ज्योतिषी लोग [स्थान: यरूशलेम]

माथ्थी रचित सुसमाचार के अनुसार, जब यीशु का जन्म हुआ तब पूर्व से कुछ ज्योतिषी लोग (astrologers / wise men) यरूशलेम (Jerusalem) में हेरोदेस के पास आकर पूछने लगे, *''यहूदियों का राजा जिसका अभी अभी जन्म हुआ है, वह कहाँ है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और हम उसको झुककर प्रणाम करने आए हैं।''* यह सुनकर हेरोदेस और सारा यरूशलेम बेचैन हो गया। उसने तुरंत सब प्रमुख याजकों (chief priests) और धर्म-शास्त्रियों (scribes / teachers of the Law) को इकट्ठा करके उनसे पूछा, *''मसीह (Messiah) का जन्म कहाँ होना चाहिए?''* उन्होंने कहा, *''यहूदिया के बैतलहम में, क्योंकि भविष्यद्वक्ता के द्वारा लिखा*

गया है: 'हे बैतलहम, तुझ में से एक शासक प्रकट होगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा बनेगा'।" [Matthew 2:1-6]

तब हेरोदेस ने पूर्व से आये उन लोगों को चुपके से बुलाकर यह कहकर उन्हें बैतलहम भेजा, *"जाकर उस शिशु के विषय में ठीक-ठीक पता लगाओ और जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो ताकि मैं भी आकर उसकी उपासना कर सकूँ।"* वे राजा हेरोदेस की बात सुनकर चले गए, और जो तारा उन्होंने आकाश में देखा था वह भी उनके आगे-आगे चलने लगा और जब वह स्थान आया जहाँ बालक था, उसके ऊपर पहुँचकर ठहर गया। वहाँ पहुँचकर उन्होंने उस दिव्य बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और दण्डवत् होकर बालक की उपासना की, और अपनी-अपनी पिटारी खोलकर उसे सोना, लोबान (frankincense) और गन्धरस (myrrh) की भेंट चढ़ाई, और बाद में स्वप्न में परमेश्वर की ओर से यह चेतावनी पा कर कि *'हेरोदेस के पास फिर न जाना'*, वे दूसरे मार्ग से होकर अपने देश को लौट गए। *[Matthew 2:7-12]*

मिस्र की ओर... [स्थान: मिस्र]

माथ्थी रचित सुसमाचार के अनुसार, ज्योतिषी लोगों के चले जाने के बाद, परमेश्वर के एक दूत ने स्वप्न में प्रकट होकर यूसुफ से कहा, *"उठ! उस बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र (Egypt) चला जा, और जब तक मैं तुझ से न कहूँ, तब तक वहीं रहना, क्योंकि हेरोदेस इस बालक को मरवा डालने के लिए ढूँढेगा।"* वह रात ही को उठकर बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र की ओर चल दिया (और हेरोदेस की मृत्यु तक वहीं रहा)। *[Matthew 2:13-15]*

बालकों की हत्या [स्थान: बैतलहम]

जब हेरोदेस को पता चला कि ज्योतिषियों ने उसके साथ धोखा किया है तब वह क्रोध से आग बबूला हो उठा, और (ज्योतिषियों के बताये समय को आधार बनाकर)

उसने अपने लोगों को भेजकर बैतलहम और उसके आस-पास के स्थानों के दो वर्ष या उससे छोटे सभी बालकों को मरवा डाला। *[Matthew 2:16]*

पुनः इस्राएल में [स्थान: नासरत]

कुछ वर्षों जब हेरोदेस मर गया, तब प्रभु के दूत ने मिस्र में यूसुफ को स्वप्न में प्रकट होकर कहा, *"उठ, बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल के देश में चला जा, क्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते थे, वे मर गए है।"* इस आज्ञा के अनुसार बालक यीशु और उसकी माता को साथ लेकर वह इस्राएल के देश में आया। वहाँ पहुँचकर जब उन्हें पता चला कि हेरोदेस का पुत्र अरखिलाउस (Archelaus) यहूदिया पर राज्य कर रहा है, तो वह वहाँ जाने से डर गया, किन्तु स्वप्न में परमेश्वर से चेतावनी पाकर वह गलील (Galilee) प्रदेश में चला गया और नासरत (Nazareth) नामक नगर में जा बसा। *[Matthew 2:19-23] (लूका रचित सुसमाचार [2:39] के अनुसार, यरुशलेम के मंदिर में सारे अपेक्षित विधि-विधान पूरा करके यूसुफ और मरियम सीधे गलील में अपने नगर नासरत लौट आये थे।)*

बालक यीशु मन्दिर में [स्थान: यरूशलेम]

फसह (Passover) के पर्व पर प्रति वर्ष यीशु के माता-पिता यरूशलेम जाया करते थे। जब यीशु बारह वर्ष का हुआ तो सदा की तरह वे उसे साथ लेकर पर्व के लिए यरूशलेम गए। जब पर्व समाप्त हुआ और वे लौट रहे थे तो बालक यीशु यरूशलेम में ही रह गया, किन्तु उसके माता-पिता यह नहीं जानते थे। यह समझकर कि वह और यात्रियों के साथ होगा, वे दिन भर यात्रा करते रहे। फिर वे उसे अपने कुटुम्बियों और जान-पहचान वालों में खोजने लगे, पर जब वह उन्हें नहीं मिला तो उसे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वे यरूशलेम फिर लौट आये। और फिर हुआ यह कि तीन दिन बाद उन्होंने उसे मन्दिर में उपदेशकों (doctors) के बीच में बैठे, उन्हें सुनते और उनसे प्रश्न करते हुए पाया। जो भी उसे सुन रहे थे वे सब उसकी समझ और उसके प्रश्नोत्तरों से आश्चर्यचकित थे। जब

उसके माता-पिता ने उसे देखा तो वे भी गंद रह गये। फिर उसकी माता ने उससे पूछा, *"बेटे, तूने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? देख, तेरा पिता और मैं तुझे कितनी व्याकुलता से ढूँढ़ते थे।"* तब यीशु ने उनसे कहा, *"तुम मुझे क्यों ढूँढ़ रहे थे? क्या तुम नहीं जानते कि मुझे मेरे पिता के घर में ही होना चाहिये?"* किन्तु वे यीशु के इस गूढ उत्तर को नहीं समझ पाये। अंततः वह माता-पिता के साथ नासरत लौट आया और उनकी आज्ञा का पालन करता रहा। उसकी माता इन सब बातों को अपने मन में रखती जा रही थी। उधर यीशु बुद्धि में, डील-डौल में और परमेश्वर तथा लोगों के प्रेम/अनुग्रह में बढता गया। *[Luke 2:41-52]*

बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना (John the Baptist) का सन्देश

जिस समय तिबिरियुस कैसर (Tiberius Caesar) के शासन का पन्द्रहवाँ वर्ष चल रहा था; पुन्तियुस पिलातुस (Pontius Pilate) यहूदिया का राज्यपाल (governor) था, हेरोदेस (Herod Antipas) गलील का शासक (ruler) था और कैफा (Caiaphas) महायाजक (high priests) था, उन्ही दिनों यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला उपदेश देता हुआ यहूदिया के जंगल (wilderness) में आया। वह कहता था, *"मन फिराओ (पश्चाताप करो)! क्योंकि स्वर्ग का राज्य आने को है।" (Repent! for the Kingdom of Heaven is at hand.)* यह यूहन्ना ऊँट के ऊन का वस्त्र पहनता था, और अपनी कमर में चमड़े का कमरबन्द (girdle) बाँधता था, और उसका भोजन टिड्डियाँ और जँगली शहद था। यरूशलेम और सारे यहूदिया के, और यरदन (Jordan) नदी के आस-पास के सारे क्षेत्र के लोग उसके पास आने लगे, और अपने-अपने पापों को स्वीकार कर यरदन नदी में यूहन्ना से बपतिस्मा (baptism) लेने लगे। *[Matthew 3:1-6; Luke 3:1-3]*

एक दिन जब उसने देखा कि बहुत से फरीसी (Pharisees) और सदूकी (Sadducees) उसके पास बपतिस्मा लेने आ रहे है, तो उसने उनसे कहा, *"हे सपोलों, तुम्हें किसने चेता दिया कि तुम प्रभु के भावी क्रोध से बच निकलो?... पेड़ों की जड़ पर कुल्हाड़ा रखा जा चुका है, और हर वह पेड़ जो अच्छा फल नहीं देता, काटा जायेगा और आग में झोंक दिया जायेगा।" [Matthew 3:7-10; Luke 3:7-9]*

जब लोगों ने उससे पूछा, *"तो हम क्या करें?"* तो उसने उतर दिया, *"जिस किसी के पास दो कुर्ते हों वह उन्हें, जिसके पास न हों, उनके साथ बाँट ले, और जिसके पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही करे।"* जब चुंगी (कर) लेनेवाले (publicans / tax collectors) भी बपतिस्मा लेने आए और उससे पूछा, *"हे गुरु, हम क्या करें?"* तो उसने उनसे कहा, *"जितना तय किया गया है उससे अधिक कर एकत्र मत करो।"* और जब कुछ सैनिकों ने उससे यह पूछा, *"और हम क्या करें?"* तो उसने उनसे कहा, *"किसी पर उपद्रव मत करो, और न किसी पर झूठा दोष लगाओ। अपने वेतन से संतुष्ट रहो।" [Luke 3:10-14]*

यह सुनकर सब लोग जब अपने अपने मन में यूहन्ना के विषय में यह सोच रहे थे कि कहीं यही तो मसीह नहीं है, तभी यूहन्ना ने यह कहते हुए उन सबको उत्तर दिया, *"मैं तो तुम्हें पानी से मन फिराव (पश्चाताप) का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है वह मुझसे भी अधिक शक्तिशाली है; मैं तो उसके जूतों की तनी खोलने योग्य भी नहीं हूँ, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप/छाज (fan) उसके हाथ में है, जिससे वह अनाज को भूसे से अलग करता है। अपने खलिहान से अच्छी रीति से साफ किये समस्त अनाज को इकट्ठा कर वह कोठियों में भरेगा, परन्तु भूसे को ऐसी आग में झोंक देगा जो कभी बुझाए नहीं बुझेगी।" [Matthew 3:11-12; Luke 3:15-17]*

यीशु का यूहन्ना से बप्तिस्मा लेना

एक दिन यीशु गलील से चलकर यरदन के किनारे यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया, किन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, *“मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, फिर तू मेरे पास क्यों आया है?”* यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, *“अभी तो इसे इसी प्रकार होने दो। हमें जो परमेश्वर चाहता है उसे पूरा करने के लिए यही करना उचित है।”* तब उसने यीशु की बात मान ली और उससे बपतिस्मा लिया। जैसे ही वह जल से बाहर आया, कि तुरंत आकाश खुल गया और उसने परमेश्वर की आत्मा को कबूतर के समान नीचे उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और तभी यह आकाशवाणी हुई, *“यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।”* *[Matthew 3:13-17; Luke 3:21-22]*

यीशु की परीक्षा

तब वह पवित्र आत्मा यीशु को एकांत जंगल में ले गया ताकि शैतान (devil) के द्वारा उसे परखा जा सके। चालीस दिन और चालीस रात तक निराहार रहने के बाद जब उसे भूख बहुत सताने लगी तो उसे लुभाने वाला (tempter / devil) उसके पास आया और कहा, *“यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इन पत्थरों से कह दे कि ये रोटियाँ (loaves) बन जायें।”* यीशु ने उत्तर दिया, *“शास्त्र में लिखा है, ‘मनुष्य केवल रोटी से नहीं, परन्तु परमेश्वर के मुख से निकलते हर एक वचन से जीवित रहता है।”*

तब शैतान यीशु को पवित्र नगर यरुशलेम में ले गया और मन्दिर की सबसे ऊँची बुर्ज पर खड़ा किया और कहा, *“यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने आप को यहाँ से नीचे गिरा दे, क्योंकि शास्त्र में लिखा है, ‘वह तेरी देखभाल के लिए अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे ताकि तेरे पैरों में पत्थर से कोई ठेस तक न लगे’।”* तब यीशु ने उससे कहा, *“शास्त्र में यह भी लिखा है, ‘तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर’।”*

फिर शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और उसे सारे जगत के राज्य और उसका वैभव दिखाकर उससे कहा, *"यदि तू मेरे आगे गिरकर मेरी उपासना करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूँगा।"* तब यीशु ने उससे कहा, *"हे शैतान! दूर हो, क्योंकि शास्त्र कहता है: 'तू अपने प्रभु परमेश्वर की उपासना कर, और केवल उसी की सेवा कर।'"*

अंततः शैतान वहाँ से चला गया, और स्वर्गदूत आकर यीशु की सेवा करने लगे। *[Matthew 4:1-11; Luke 4:1-13; Mark 1:12-13]*

यीशु के कार्य का आरम्भ

लूका और यूहन्ना रचित सुसमाचारों के अनुसार, परीक्षा के बाद यीशु पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से भरा हुआ गलील में नासरत को लौट आया जहाँ उसका पालन-पोषण हुआ था, और आराधनालय में उपदेश करने लगा। उसकी चर्चा आस-पास के सारे क्षेत्र में फैल गई। *[Matthew 4:12; Luke 4:14]*

पानी को दाखरस में परिवर्तित करना [स्थान : गलील का काना गाँव]

एक दिन गलील के काना में किसी के यहाँ विवाह था। यीशु और उसके चेले भी उस विवाह में निमंत्रित थे। यीशु की माता भी वहाँ उपस्थित थी। वहाँ जब दाखरस (wine) खत्म हो गया, तो यीशु की माँ ने उससे कहा, *"उनके पास अब दाखरस नहीं है।"* इस पर यीशु ने उससे कहा, *"हे स्त्री, यह तू मुझसे क्यों कह रही है? मेरा समय अभी नहीं आया है।"* फिर उसकी माता ने सेवकों को बुलाकर कहा, *"जो कुछ वह तुम से कहे, वैसा करो।"* वहाँ पानी भरने के लिए पत्थर के छः मटके रखे हुए थे। तब यीशु ने सेवकों से कहा, *"मटकों को पानी से भर दो।"* और उन्होंने मटकों को पानी से लबालब भर दिया। फिर उसने उनसे कहा, *"अब थोडा पानी निकालकर दावत का प्रबन्ध कर रहे प्रधान के पास ले जाओ।"* और वे उसे ले गए। जब दावत के प्रबन्धक ने उस पानी को चखा, जो अब दाखरस बन गया था। वह नहीं जानता था कि वह

दाखरस कहाँ से आया हैं, परन्तु वे सेवक जानते थे। यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहला चमत्कार दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की। *[John 2:1-9, 11]*

फसह (Passover) के पर्व पर यरूशलेम में

इसके बाद यीशु उसकी माता, उसके भाई और उसके चेले के साथ **कफरनहूम** चला गया और वहाँ कुछ दिन रहा। यहूदियों का **फसह** पर्व निकट था, इसलिये यीशु **यरूशलेम** को गया। वहाँ मन्दिर में यीशु ने देखा कि लोग मवेशियों, भेड़ों और कबूतरों की बिक्री कर रहे है और सिक्के बदलने वाले सर्राफ (money changers) अपनी गद्दियों पर बैठे हुए हैं। इसलिये उसने रस्सियों का एक कोड़ा बनाया और मवेशियों और भेड़ों समेत सबको मन्दिर से बाहर खदेड़ दिया, और सर्राफों के सिक्के बिखेर दिये और उनकी चौकियाँ पलट दी। कबूतर बेचने वालों से उसने कहा, *"इन्हें यहाँ से बाहर ले जाओ। मेरे परमपिता के घर को व्यापार की जगह मत बनाओ।" [John 2:13-16]*

इस पर यहूदियों ने उससे पूछा, *"तू यह जो कर रहा है वह किस अधिकार से कर रहा हैं?"* यीशु ने उत्तर में कहा, *"इस मन्दिर को ढा दो, और मैं इसे तीन दिन में पुनः खड़ा कर दूँगा।"* यह सुनकर यहूदियों ने कहा, *"इस मन्दिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा?" [John 2:18-20]* फसह के पर्व के दिनों जब यीशु यरूशलेम में था, तब उसने बहुत से लोगों ने उसके अद्भुत चिन्हों और कर्मों को देखकर उसमें विश्वास किया। किन्तु यीशु ने अपने आपको उन लोगों के भरोसे नहीं छोड़ा, क्योंकि लोगों के मन में क्या है, इसे वह जानता था। *[John 2:23-24]*

यीशु और नीकुदेमुस (Nicodemus)

फरीसियों में नीकुदेमुस नाम का एक व्यक्ति था, जो यहूदियों का नेता था। उसने रात के समय यीशु के पास आकर कहा, *"हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की*

ओर से गुरु होकर आया है, क्योंकि ऐसे चमत्कार जैसे तू दिखाता है परमेश्वर की सहायता के बिना कोई नहीं दिखा सकता।" उत्तर में यीशु ने उसको कहा, "मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ कि यदि कोई नये सिरे से जन्म न ले तो वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।" इस पर नीकुदेमुस ने उससे कहा, "कोई आदमी बूढ़ा हो जाने के बाद फिर जन्म कैसे ले सकता है? क्या वह अपनी माँ की कोख में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?" यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्म न ले तब तक वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं पा सकता। जो शरीर (माँस) से जन्मता है वह शरीर (माँस) होता है, और जो आत्मा से जन्मता है वह आत्मा होता है। मनें तुमसे जो कहा कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना होगा, इस पर आश्चर्य न कर। हवा जिधर चाहती है उधर चलती है। तू उसकी आवाज़ सुनता है, परन्तु यह नहीं जान सकते कि वह कहाँ से आ रही है और किधर जा रही है। आत्मा से जन्म हुआ हर व्यक्ति भी ऐसा ही है।" इस पर नीकुदेमुस ने पूछा, "यह कैसे को सकता हैं?" इसके उत्तर में यीशु ने कहा, "तू इस्राएलियों का गुरु होकर भी यह नहीं समझता? मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ कि हम जो जानते हैं, वही बोलते हैं, और वही बताते है जो हमने देखा हैं, पर तुम लोग हमारी गवाही स्वीकार नहीं करते। मैंने तुमसे पृथ्वी की बातें कहीं, पर तुमने उस पर विश्वास नहीं किया, अब यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूँ तो उन पर तुम कैसे विश्वास करोगे? स्वर्ग में उपर कोई नहीं गया, सिवाय उसके जो स्वर्ग से उतर कर आया है, अर्थात् मनुष्य का पुत्र। जैसे मूसा ने रेगिस्तान में साँप को उपर उठा लिया था, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी उपर उठा लिया जायेगा। ताकि जो कोई उसमें विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर को जगत से इतना प्रेम था कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि हर वह आदमी जो उस पर विश्वास रखता है, वह नष्ट न हो, बल्कि उसे अनन्त जीवन मिले। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत वह दुनिया दुनियाको अपराधी ठहराये, बल्कि उसे इसलिए भेजा कि उसके द्वारा दुनिया का उद्धार हो। जो उस पर विश्वास

करता है उसे दोषी न ठहराया जाय, पर जो उस पर विश्वास नहीं करता, उसे दोषी ठहराया जा चुका है, क्योंकि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। इस निर्णय का आधार यह है कि ज्योति जगत में आ चुकी है, पर ज्योति के बजाय लोग अंधकार को अधिक महत्व देते है, क्योंकि उनके काम बुरे हैं। हर कोई जो बुराई करता है वह ज्योति से घृणा रखता है और ज्योति के निकट नहीं आता, ताकि उसके पाप उजागर न जाए। पर जो कोई सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि यह प्रकट हो जाये कि उसके कर्म परमेश्वर के द्वारा कराये गए हैं।'' [John 3:1-21]

इसके बाद यीशु अपने अनुयायियों के साथ **यहूदिया** के इलाके में चला गया और वहाँ वह उनके साथ ठहर कर बपतिस्मा देने लगा। वहीं सालेम के निकट ऐनोन (Aenon) में यूहन्ना भी बपतिस्मा दिया करता था, क्योंकि वहाँ बहुत जल था। लोग वहाँ आकर बपतिस्मा लेते थे। *(यूहन्ना अभी तक तक जेलखाने में नहीं डाला गया था।) [John 3:22-24]*

वह जो स्वर्ग से उतरा

वहाँ यूहन्ना के कुछ शिष्यों का एक यहूदी के साथ शुद्धि (purifying) के विषय में वाद-विवाद हुआ। इसलिये वे यूहन्ना के पास आये और पूछा, *''हे रब्बी, जो व्यक्ति यरदन के पार तेरे साथ था और जिसके बारे में तूने बताया था, वह लोगों को बपतिस्मा देता है और सब लोग उसके पास जा रहे हैं।''* यूहन्ना ने उत्तर दिया, *''जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए तब तक वह कुछ नहीं पा सकता। तुम सब गवाह हो कि मैंने कहा था 'मैं मसीह नहीं, परन्तु मैं तो उससे पहले भेजा गया हूँ।'* जो ऊपर से आता है *वह सबसे महान है और जो धरती से है वह धरती से जुडा है और धरती की ही बातें कहता है। जो स्वर्ग से उतरा है वह सब के ऊपर है। जो कुछ उसने देखा और सुना है*

वह उसकी साक्षी देता है, पर उसकी साक्षी कोई ग्रहण नहीं करना चाहता। जो उसकी साक्षी ग्रहण करता है वह प्रमाणित करता है कि परमेश्वर सच्चा है। क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की ही बातें कहता है। पिता अपने पुत्र को प्यार करता है और उसी के हाथों में उसने सब कुछ सौंप दिया हैं। इसलिये जो उसके पुत्र पर विश्वास करता है वह अनन्त जीवन पाता है, परन्तु वह जो परमेश्वर के पुत्र की बात नहीं मानता उसे वह जीवन नहीं मिलेगा। इसके बजाय उस पर परमेश्वर का क्रोध बना रहता है।" [John 3:25-36]

यीशु और सामरी स्त्री [स्थान: सामरिया में सूखार]

जब यीशु को पता चला कि फरीसियों ने सुना है कि यीशु यूहन्ना से अधिक लोगों को बपतिस्मा दे रहा है और उन्हें शिष्य बना रहा है (यद्यपि यीशु स्वयं बपतिस्मा नहीं दे रहा था, बल्कि उसके शिष्य दे रहे थे) तो वह यहूदिया को छोड़कर एक बार फिर वापस गलील को चला आया। इस बार उसे सामरिया (Samaria) होकर जाना पडा। चलते चलते एक दिन वह सामरिया के एक नगर सूखार (Sychar) में आया। याकूब का कुआँ इस नगर के पास था। यीशु इस यात्रा में बहुत थक गया था, इसलिये वह उस कुएँ के पास बैठ गया। समय लगभग दोपहर का था। इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने उस कुएँ पर आई। यीशु ने उससे कहा, *"मुझे पानी पिला।"* (शिष्य भोजन खरीदने के लिए नगर में गए हुए थे।) उस सामरी स्त्री ने यीशु से कहा, *"तू यहूदी होकर भी मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों माँगता है?"* (क्योंकि यहूदी लोग सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं करते थे।) यीशु ने उत्तर दिया, *"यदि तू केवल इतना जानती कि परमेश्वर कौन है जो तुझ से कह रहा है, 'मुझे पानी पिला,' तो तू उससे माँगती और वह तुझे स्वच्छ जीवन-जल प्रदान करता।"* स्त्री ने उससे कहा, *"हे स्वामी, तेरे पास जल भरने को कोई बर्तन तक नहीं है और कुआँ भी बहुत गहरा है, फिर जीवन का*

जल तेरे पास कैसे हो सकता है? क्या तू हमारे पिता याकूब (Jacob) से भी बड़ा है, जिसने हमें यह कुआँ दिया और अपने सन्तान और अपने पशुओं समेत खुद इसका जल पीया था?'' उत्तर में यीशु ने उससे कहा, ''जो कोई इस कुएँ का पानी पीता है उसे फिर प्यास लगेगी, किन्तु जो कोई उस जल को पीएगा, जिसे मैं दूँगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा नहीं होगा, वरन् जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता (झरना) बन जाएगा जो उमड़-घुमड़ कर उसे अनन्त जीवन प्रदान करेगा।'' तब उस स्त्री ने उससे कहा, ''हे महाशय, मुझे वह जल दे ताकि मैं फिर कभी प्यासी न होऊँ और न जल भरने मुझे इतनी दूर आना पडे।'' इस पर यीशु ने उससे कहा, ''जा, अपने पति को बुलाकर यहाँ ले आ।'' स्त्री ने उत्तर दिया, ''मेरा कोई पति नहीं है।'' यीशु ने उससे कहा, ''तू ठीक कहती है, 'मेरा कोई पति नहीं है।' क्योंकि तू पाँच पति कर चुकी है और जिस पुरुष के साथ तू अब रहती है वह भी तेरा पति नहीं है, इसलिये तुमने जो कहा है सच कहा है।'' इस पर स्त्री ने उससे कहा, ''महाशय, मुझे तो लगता है कि तू अन्तर्यामी है। हमारे पूर्वजों ने इसी पहाड़ पर आराधना की है, पर तुम कहते हो कि यरूशलेम ही आराधना की जगह है।'' यीशु ने उससे कहा, ''हे नारी, मेरा विश्वास कर। वह समय आ रहा है जब तुम परम पिता की आराधना न इस पहाड़ पर करोगे और न यरूशलेम में। तुम सामरी लोग उसे नहीं जानते जिसकी आराधना करते हो, पर हम यहूदी उसे जानते हैं जिसकी आराधना हम करते हैं, क्योंकि उद्धार यहूदियों से ही है। पर वह समय आ रहा है, वरन् आ ही गया है, जब सच्चे भक्त पिता परमेश्वर की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता परमेश्वर अपने लिये ऐसे ही उपासक चाहता है। परमेश्वर आत्मा है और इसलिये जो उसकी आराधना करें उन्हें आत्मा और सच्चाई से ही उसकी आराधना करनी होगी।'' फिर स्त्री ने उससे कहा, ''मैं जानती हूँ कि मसीह (ख्रिस्त) आने वाला है; जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बताएगा।'' इस पर यीशु ने उससे कहा, **''मैं, जो तुझसे बात कर रहा हूँ, वही हूँ।''** इतने में उसके शिष्य वहाँ लौट आये और उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह एक स्त्री से बातें कर

रहा है, पर किसी ने भी उससे नहीं पूछा, *"तुझे इस स्त्री से क्या लेना है या तू इससे बातें क्यों कर रहा है?"* वह स्त्री अपना घड़ा वहीं छोड़कर वापस नगर में चली गई और लोगों से कहने लगी, *"आओ और देखो, एक ऐसा पुरुष है जिसने, मैंने जो कुछ किया है, वह सब कुछ मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है?"* इस पर लोग नगर से निकलकर यीशु के पास आने लगे। इसी समय यीशु के शिष्य उससे विनती कर रहे थे, *"हे रब्बी, कुछ खा ले।"* पर यीशु ने उनसे कहा, *"मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसके बारे में तुम कुछ भी नहीं जानते।"* इस पर शिष्य आपस में एक दूसरे से पूछने लगे, *"क्या कोई उसके खाने के लिये कुछ लाया होगा?"* यीशु ने उनसे कहा, *"मेरा भोजन उसकी इच्छा को पूरा करना है जिसने मुझे भेजा है, और उस काम को पूरा करना है जो मुझे सौंपा गया है। तुम अक्सर कहते हो, 'चार महीने और है तब फसल आयेगी।' देखो, मैं तुम से कहता हूँ कि अपनी आँखें खोलो और खेतों पर दृष्टि डालो। फसल कटनी के लिए तैयार हो चुकी हैं। जो कटाई करता है वह अपनी मजदूरी पाता है और अनन्त जीवन के लिये फसल इकट्ठी करता है, ताकि फसल बोने वाला और काटने वाला दोनों ही मिलकर आनन्द करें। यह कहावत वास्तव में सच है: 'एक व्यक्ति बोता है और दूसरा व्यक्ति काटता है।' मैंने तुम्हें उस फसल को काटने के लिये भेजा है जिसमें तुम ने परिश्रम नहीं किया है, पर दूसरों ने परिश्रम किया है और उनके परिश्रम का फल तुम्हें मिला है।"* उस नगर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री की साक्षी के आधार पर यीशु पर विश्वास किया। सामरियों की विनती पर यीशु वहाँ दो दिन तक ठहरा। उसके वचन से प्रभावित होकर बहुत से और लोग भी उसके विश्वासी हो गये। उन्होंने उस स्त्री से कहा, *"अब हम केवल तुम्हारी साक्षी के कारण ही विश्वास नहीं करते, बल्कि अब हमने स्वयं उसे सुना है, और हम जान गए हैं कि सचमुच में यही वह व्यक्ति है जो जगत् का उद्धारकर्ता है।" [John 4:1-42]*

फिर उन दो दिनों के बाद यीशु वहाँ **गलील** की ओर चल पडा।

राजकर्मचारी के बेटे को जीवन-दान [स्थान: गलील में काना]

जब वह गलील में आया तो गलीली लोगों ने उसका स्वागत किया, क्योंकि उन्होंने वह सब कुछ देखा था जो यीशु ने यरूशलेम में पर्व के समय किया था (क्योंकि वे सब भी इस पर्व में शामिल थे।) यीशु एक बार फिर गलील के काना गाँव में गया, जहाँ उसने पानी को दाखरस में बदला था। वहाँ राजा का एक राजकर्मचारी (nobleman) था जिसका पुत्र कफरनहूम में बीमार था। जब राजकर्मचारी ने सुना कि यीशु यहूदिया से गलील में आ गया है, तो वह उसके पास आया और उससे विनती करने लगा कि वह कफरनहूम जाकर उसके बीमार पुत्र को चंगा कर दे। इस पर यीशु ने उससे कहा, *"जब तक तुम अद्भुत चिन्ह और चमत्कार नहीं देखोगे तब तक तुम कदापि विश्वास नहीं करोगे।"* राजकर्मचारी ने उससे कहा, *"हे महोदय, मेरा बेटा मर जाये इससे पहले मेरे साथ चल।"* यीशु ने उससे कहा, *"जा, तेरा पुत्र जीवित है।"* इस पर वह व्यक्ति यीशु की बात पर विश्वास कर अपने घर की ओर चल दिया। वह घर लौटते हुए अभी मार्ग में ही था कि उसके कुछ नौकर उससे मिले और कहने लगे, *"आपका पुत्र ठीक हो गया है।"* यह सुनकर उसने अपने नौकरों से पूछा, *"किस घड़ी से वह ठीक होने लगा?"* उन्होंने उत्तर दिया, *"कल सातवीं घड़ी में उसका ज्वर उतर गया।"* तब उसे याद आया कि यह ठीक वही समय था जब यीशु ने उससे कहा था, *"तेरा पुत्र जीवित है।"* इस तरह अपने सारे परिवार के साथ वह विश्वासी हो गया। यह यीशु का दूसरा चमत्कार था जो उसने यहूदिया से गलील में आने पर दिखाया। *[John 4:46-54]*

सब्त (Sabbath-विश्राम) के एक दिन वह **नासरेत** के आराधनालय में जाकर शास्त्र पढ़ने के लिये खड़ा हुआ। नबी यशायाह की पुस्तक उसे पढ़ने के लिये दी गई, और उसने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहाँ यह लिखा था: *"प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक*

किया है, और मुझे इसलिए भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ।" [Luke 4:18]

तब वह पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में देकर बैठ गया, और आराधनालय में एकत्र हुए लोगों से कहने लगा, *"आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है।... मैं तुम से सच कहता हूँ कि कोई नबी अपने देश में मान-सम्मान नहीं पाता। एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन वर्ष तक आकाश बन्द रहा, यहाँ तक कि सारे देश में बड़ा अकाल पड़ा, तब इस्राएल में बहुत सी विधवाएँ थीं, पर एलिय्याह को उनमें से किसी के पास नहीं भेजा गया; केवल सीदोन के सारफत में एक विधवा के पास भेजा गया। और एलीशा भविष्यद्वक्ता के समय इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, पर सीरिया वासी नामान को छोड़ उनमें से किसी को शुद्ध नहीं किया गया।"[Luke 4:20-21, 24-27]*

ये बातें सुनते ही लोग क्रोध से भर गए और यीशु को नगर से बाहर निकालकर जिस पहाड़ पर उनका नगर बसा हुआ था उसकी चोटी पर ले गये चले, ताकि वे उसे वहाँ से नीचे गिरा दें। पर वह उनके बीच में से निकलकर कफरनहूम (Capernaum) नगर में चला गया। *[Luke 4:28-31]*

मत्ती रचित सुसमाचार के अनुसार, परीक्षा के बाद जब यीशु ने यह सुना कि यूहन्ना को जेल में डाल दिया गया है, तब वह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से भरा हुआ गलील लौट आया, परन्तु वह नासरत में न ठहर कर सीधा झील के पास कफरनहूम में जाकर रहने लगा। उस समय से यीशु ने यह सुसंदेश का प्रचार आरम्भ किया, *"मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।" (Repent, for the Kingdom of Heaven is at hand.)* उस समय वह लगभग तीस वर्ष की आयु का था। *[Matthew 4:12, 17]*

यीशु द्वारा शिष्यों का चुना जाना

एक दिन गलील की झील के किनारे फिरते हुए उसने दो मछुए - शमौन पतरस (Simon called Peter) और उसके भाई अन्द्रियास (Andrew) - को झील में जाल डालते देखा, और उनसे कहा, *"मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।"* वे तुरन्त अपनी जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए। वहाँ से आगे बढ़कर, उसने और दो भाइयों अर्थात् जब्दी के पुत्र याकूब (James) और यूहन्ना (John) को अपने पिता के साथ नाव पर अपने जालों की मरम्मत करते देखा। यीशु ने उन्हें भी बुलाया, और वे तुरन्त नाव और अपने पिता को छोड़कर उसके पीछे चल दिये। *[Matthew 4:18-20]*

लूका रचित सुसमाचार के अनुसार, एक दिन ऐसा हुआ कि यीशु ने **गन्नेसरत** की झील के किनारे दो नावें लगी हुई देखीं और मछुए उन पर से उतरकर जाल धो रहे थे। उन नावों में से एक पर, जो शमौन की थी, चढ़कर, उसने उससे कहा, *"गहरे में ले चल और मछलियाँ पकड़ने के लिये अपने जाल डाल।"* शमौन ने उसको उत्तर दिया, *"हे स्वामी, हमने सारी रात मेहनत की है और कुछ न पकड़ पाए है,; तो भी तेरे कहने से जाल डालूँगा।"* जब उसने ऐसा किया, तो बहुत सी मछलियाँ उसकी जाल में आ गई, और उसकी जाल फटने लगी। इस पर उसने अपने साथियों को, जो दूसरी नाव पर थे, संकेत किया कि आकर हमारी सहायता करो, और उन्होंने आकर दोनों नाव मछलियों से यहाँ तक भर लीं कि वे डूबने लगीं। इतनी मछलियों के पकड़े जाने से उसे और उसके साथियों को बहुत अचम्भा हुआ; और वैसे ही जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को भी, जो शमौन के सहभागी थे, अचम्भा हुआ। यह देखकर शमौन पतरस यीशु के पाँवों पर गिर पडा, और कहने लगा, *"हे प्रभु, मेरे पास से चला जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूँ!"* तब यीशु ने शमौन से कहा, *"मत डर, अब से तू मनुष्यों को जीविता पकड़ा करेगा।"* और वे नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर यीशु के पीछे हो लिए। *[Luke 5:1-11]*

कफरनहूम के आराधनालय में

एक दिन वह आराधनालय में लोगों को उपदेश दे रहा था, तो वे उसके उपदेश सुनकर चकित रह गए क्योंकि उसका वचन अधिकार सहित था। वहीं आराधनालय में एक व्यक्ति था, जिसमें अशुद्ध आत्मा थी। यीशु को देखकर वह ऊँची आवाज में चिल्ला उठा, *"हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूँ तू कौन है? तू परमेश्वर का पवित्र जन है!"* यीशु ने उसे डाँटकर कहा, *"चुप रह और उसमें से निकल जा!"* यीशु के ये शब्द सुनते ही वह दुष्टात्मा उस व्यक्ति को पटककर बिना हानि पहुँचाए उसमें से निकल गई। यह देखकर लोग आश्चर्यचकित रह गए और आपस में बातें करके कहने लगे, *"यह कैसा वचन है? वह अधिकार और सामर्थ्य के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं!"* अतः चारों ओर हर जगह यीशु के सामर्थ्य की चर्चा होने लगी। *[Luke 4:31-37]* जिन-जिनके यहाँ लोग नाना प्रकार की बीमारियों में पड़े हुए थे, वे सब उन्हें यीशु के पास ले आएँ, और उसने एक-एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया। दुष्टात्माएं चिल्लाती और यह कहती हुई कि *"तू परमेश्वर का पुत्र है, मसीह है"* बहुतों में से निकल गई!

यीशु का लोगों को चंगा करना

यीशु समूचे गलील क्षेत्र में यहूदी आराधनालयों (synagogues) में उपदेश करता, स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार का उपदेश देता, और लोगों के हर प्रकार के रोगों, दुर्बलताओं और संतापों को दूर करता घूमने लगा। अल्प काल में ही चारों ओर उसका यश फैल गया, और लोग ऐसे सभी व्यक्तियों को जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों और दुःखों में जकड़े हुए थे, और जिन पर दुष्टात्माएँ सवार थीं, जिन्हें मिर्गी आती थी और जो लकवे के मारे थे, उसके पास लाने लगे, और वह उन्हें चंगा करने लगा। इसलिये गलील, दिकापुलिस (Decapolis), यरूशलेम, यहूदिया और यरदन नदी के पार से

लोगों की भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली। सब उसे छूना चाहते थे, क्योंकि उसमें से सामर्थ्य निकलकर सब को चंगा कर देती थी। *[Matthew 4:23-25]*

पर्वत पर उपदेश (The Sermon on the Mount)

यीशु ने जब यह भीड़ देखी तो एक पहाड़ पर चढ़कर वहाँ वह बैठ गया। उसके चेले भी उसके पास आ गये। तब यीशु ने उपदेश देते हुए कहा:

"धन्य हैं वे जो मन/हृदय से दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएँगे। धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएँगे। धन्य हैं वे जो दयालु हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। धन्य हैं वे जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे। धन्य हैं वे जो अपनी धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें और सताएँ और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें।" [Matthew 5:3-11; Luke 6:20-22]

"आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल (reward) है। इसलिए कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था। तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए। तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। लोग दीया जलाकर बर्तन के नीचे या खाट के नीचे नहीं, परन्तु जब दीवट (lampstand) पर रखते हैं, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुँचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे

तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें।'' [Matthew 5:12-16; Mark 9:50; Luke 6:23, 14:34-35]

''यह न समझो कि मैं व्यवस्था (the law) या भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षाओं को लोप करने आया हूँ; लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ। मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। इसलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उनका पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा। मैं तुम से कहता हूँ कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे। [Matthew 5:17-20]

''तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि 'हत्या न करना' और 'जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा और जो कोई अपने भाई को अपमानित करेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा, और जो कोई कहे 'अरे मूर्ख' तो वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा। इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे कि मेरे भाई के मन में मेरे प्रति कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर, और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा। तू अपने शत्रु (adversary) के साथ झटपट मेल मिलाप कर ले, कहीं ऐसा न हो कि शत्रु तुझे न्यायाधीश को सौंपे, और न्यायाधीश तुझे सिपाही को सौंप दे और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए। मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक तू पाई-पाई चुका न दे तब तक वहाँ से छूटने न पाएगा।'' [Matthew 5:21-26]

"तुम सुन चुके हो कि, 'व्यभिचार न करना।' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका। यदि तेरी दाहिनी आँख तुझसे पाप काराये तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझसे पाप काराये तो उसको काटकर अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।" [Matthew 5:27-30]

"यह भी कहा गया था, 'जो कोई अपनी पत्नी को त्याग दे, तो उसे त्यागपत्र दे।' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से तलाक दे, तो वह उससे व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे, वह भी व्यभिचार करता है।" [Matthew 5:31-32; Mark 10:11-12; Luke 16:18]

"फिर तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था, 'झूठी शपथ न खाना, परन्तु परमेश्वर के लिये अपनी शपथ को पूरी करना।' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि कभी शपथ न खाना; न स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। न धरती की, क्योंकि वह उसके पाँवों की चौकी (footstool) है; न यरूशलेम की, क्योंकि वह महाराजा का नगर है। अपने सिर की भी शपथ न खाना, क्योंकि तू एक बाल को भी न उजला, न काला कर सकता है। तुम्हारी बात हाँ की हाँ, या नहीं की नहीं हो, क्योंकि जो कुछ इससे अधिक होता है वह बुराई से होता है।" [Matthew 5:33-37]

"तुम सुन चुके हो कि 'आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत (An eye for an eye and a tooth for a tooth.)' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना (Do not resist an evildoer), परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। यदि कोई तुझ पर मुकद्दमा करके तेरा कुर्ता

लेना चाहे तो उसे अंगरखा भी ले लेने दे। (जो तेरी दोहर छीन ले, उसको कुर्ता लेने से भी न रोक।) जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए तो उसके साथ दो कोस चला जा। जो कोई तुझ से कुछ माँगे तो उसे दे, और जो तुझ से उधार लेना चाहे तो उससे मुँह न मोड़ (फिर पाने की आस न रखकर उधार दो।)" [Matthew 5:38-42; Luke 6:29-30]

"तुम सुन चुके हो, 'अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर।' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि अपने बैरियों से भी प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो (जो तुम से बैर करें, उनका भला करो; जो तुम्हें श्राप दें, उनको तुम आशीष दो; जो तुम्हारा अपमान करें, उनके लिये तुम प्रार्थना करो), जिससे तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी पर मेंह बरसाता है। यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिये क्या लाभ होगा? (क्योंकि पापी भी अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखते हैं) और यदि तुम केवल अपने भाइयों को ही नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो? क्या विधर्मी (the heathen) भी ऐसा नहीं करते? (और यदि तुम अपने भलाई करनेवालों ही के साथ भलाई करते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं। और यदि तुम उसे उधार दो, जिनसे फिर पाने की आशा रखते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी पापियों को उधार देते हैं और उतना ही फिर पाएँ है।) इसलिए चाहिये कि तुम परिपूर्ण बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता परिपूर्ण है। (जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो।)" [Matthew 5:43-47; Luke 6:27-28, 32-36]

"सावधान रहो! तुम लोगों को दिखाने के लिये (दिखावे के लिए) अपने धार्मिकता के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे। इसलिए जब तू दान करे, तो अपना ढिंढोरा न पिटवा, जैसे कपटी (hypocrites) आराधनालयों

और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उनकी बड़ाई करें। मैं तुम से सच कहता हूँ कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है, उसे तेरा बायाँ हाथ न जानने पाए, ताकि तेरा दान गुप्त रहे, और तब तेरा पिता, जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।'' [Matthew 6:1-4]

''जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये आराधनालयों में और सड़कों के चौराहों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उनको अच्छा लगता है। मैं तुम से सच कहता हूँ कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा और द्वार बन्द कर के अपने पिता से प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता तुझे प्रतिफल देगा। प्रार्थना करते समय विधर्मी (the heathen) के समान बक-बक न करो, क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बार-बार बोलने से उनकी सुनी जाएगी। तुम उनके समान न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि तुम्हारी क्या-क्या आवश्यकताएँ है।'' [Matthew 6:5-8]

''अतः तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो: 'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में हैं; तेरा नाम पवित्र माना जाए; तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे पृथ्वी पर भी हो। हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे। और जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर। हमारी कठीन परीक्षा मत ले, परन्तु बुराई से बचा; [क्योंकि राज्य और महीमा सदा तेरे ही है। आमीन।]'' [Matthew 6:9-13; Luke 11:2-4]

''यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेगा।'' [Matthew 6:14-15]

''जब तुम उपवास करो, तो कपटियों के समान तुम्हारे मुँह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुँह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें। मैं तुम से सच

कहता हूँ कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल मल और मुँह धो, ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता तुझे उपवासी जाने। इस दशा में तेरा पिता तुझे प्रतिफल देगा।" [Matthew 6:16-18]

"अपने लिये पृथ्वी पर धन/भंडार इकट्ठा न करो; उसे कीडे और जंग बिगाड़ देते हैं, और चोर सेंध लगाकर चुरा सकते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहाँ उसे न तो कीड़ा और न जंग बिगाड़ सकते हैं, और जहाँ चोर न सेंध लगाते और न चुरा सकते हैं। क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा।" [Matthew 6:19-21; Luke 12:33-34]

"शरीर का दीया आँख है। इसलिए यदि तेरी आँख अच्छी हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा। परन्तु यदि तेरी आँख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अंधियारा होगा। इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है यदि अंधकार हो तो वह अंधकार कैसा बड़ा होगा!" [Matthew 6:22-23; Luke 11:34-36]

"कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से निष्ठावान रहेगा और दूसरे का तिरस्कार करेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि अपने प्राण/जीवन के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएँगे और क्या पीएँगे, और न अपने शरीर के लिये कि हम क्या पहनेंगे? क्या प्राण/जीवन भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं? आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न कोठारों में अनाज भरते हैं, तो भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनका पेट भरता है। क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते? तुम में ऐसा कौन है जो चिन्ता करके अपने जीवनकाल में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?" [Matthew 6:24-27; Luke 16:13]

"और तुम अपने वस्त्रों के लिए क्यों चिन्ता करते हो? सोसनों के फूलों (lilies) पर ध्यान करो कि वे कैसे खिलते हैं; वे न तो परिश्रम करते हैं, न अपने लिए कपडे

बनाते हैं। वैभवी सुलैमान भी उनमें से किसी एक के समान नहीं सज सका। इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहनाता है, तो हे अल्पविश्वासियों, तुम को वह क्यों न पहनाएगा? इसलिए तुम चिन्ता करते हुए यह मत कहो कि हम क्या खाएँगे, क्या पीएँगे, या क्या पहनेंगे? क्योंकि विधर्मी लोग (heathens / Gentiles) इन सब वस्तुओं की खोज में दौडते रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है। इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और धार्मिकता की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें मिल जाएँगी। अतः कल के लिये चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिये आज ही का दुःख बहुत है।" [Matthew 6:28-34; Luke 12:22-31]

"दूसरों पर दोष मत लगाओ, क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा (Do not judge, so that you may not be judged.)जिस नाप से तुम दूसरों को नापते हो, उसी नाप से तुम्हें भी नापा जाएगा। (तुम दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: लोग पूरा नाप दबा-दबाकर और हिला-हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी झोली में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।) तू क्यों अपने भाई की आँख के तिनके (speck) को देखता है, और अपनी आँख का लट्ठा (log) तुझे नहीं सूझता? जब तेरी ही आँख में लट्ठा है तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, 'ला मैं तेरी आँख से तिनका निकाल दूँ?' हे कपटी, पहले अपनी आँख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आँख का तिनका भली भाँति देखकर निकाल सकेगा।" [Matthew 7:1-5; Luke 6:37-38, 41-42]

"पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो; कहीं ऐसा न हो कि वे उन्हें पाँवों तले रौंद दें और पलटकर तुम को ही फाड़ डालें।" [Matthew 7:6]

"माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई माँगता है, उसे मिलता है; और जो ढूँढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।" [Matthew 7:7-8; Luke 11:9-10]

"तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी माँगे, तो वह उसे पत्थर दे? या मछली माँगे, तो उसे साँप दे? अतः जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा? जैसा व्यवहार अपने लिए तुम दूसरे लोगों से चाहते हो, वैसा ही व्यवहार तुम भी उनके साथ करो।" [Matthew 7:9-12; Luke 11:11-13]

"तंग दरवाजे से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह दरवाजा और सरल है वह मार्ग जो विनाश की ओर ले जाता है; और बहुतेरे लोग हैं जो उसे पसंद करते हैं। और संकरा है वह दरवाजा और कठिन है वह मार्ग जो जीवन की ओर ले जाता है, और थोड़े हैं वे लोग जो उसे पाते हैं।" [Matthew 7:13-14; Luke 13:24]

"झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में खूँखार भेड़िए होते हैं। तुम उन्हें उनके कर्मों के फलों से पहचान लोगे। क्या लोग कँटीली झाड़ियों (thorns) से अंगूर, या ऊँटकटारों (thistles) से अंजीर इकट्ठा कर सकते हैं? इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है। जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग

में डाला जाता है। अतः उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।'' [Matthew 7:15-20; Luke 6:43-44]

''जो मुझसे 'हे प्रभु, हे प्रभु' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है वही उसमें प्रवेश पायेगा। उस दिन बहुत लोग मुझसे कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की? क्या तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला? और क्या तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम (miracles) नहीं किए?' तब मैं उनसे खुलकर कह दूँगा, 'मैं तुम्हें नहीं जानता। हे कुकर्मियों, मेरे पास से चले जाओ।' इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन पर चलता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया है; बारिश हुई, बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और उस घर से टकराई, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस मूर्ख मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर रेत पर बनाया। और बारिश हुई, बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और उस घर से टकराई और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।'' [Matthew 7:21-27; Luke 6:47-49]

जब यीशु ने ये बातें कह कर पूरी की, तो उसके इन उपदेशों पर भीड़ के लोगों को बडा अचरज हुआ, क्योंकि वह उन्हें यहूदी शास्त्रियों के समान नहीं, परन्तु एक अधिकारी के समान उपदेश देता था! *[Matthew 7:28-29]*

कोढ़ी को चंगा करना

जब यीशु उस पहाड़ से उतरा, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। वहीं एक कोढ़ी (leper) भी था। उसने यीशु के पास आकर प्रणाम करते हुए कहा, *''हे प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।''* यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, *''निश्चय ही मैं चाहता हूँ कि तू शुद्ध हो जा''* और तुरन्त उस कोढ़ी का कोढ़ जाता रहा!

इस पर यीशु ने उससे कहा, *"देख, इस चमत्कार के बारे में किसी से कुछ मत कहना, परन्तु जाकर अपने आप को याजक (priest) को दिखा। फिर मूसा (Moses) के आदेश के अनुसार भेंट चढ़ा, ताकि लोगों को तेरे चंगा होने की साक्षी मिले।" [Matthew 8:1-4; Mark 1:40-45; Luke 5:12-14]*

रोमी सेनानायक के सेवक को चंगा करना

फिर जब यीशु कफरनहूम में आया तो एक रोमी सेनानायक (सूबेदार / centurion) ने उसके पास आकर उससे विनती की, *"हे प्रभु, मेरा सेवक घर में लकवे (palsy) का मारा बहुत दुःखी पड़ा है।"* तब यीशु ने उससे कहा, *"मैं आकर उसे चंगा करूँगा।"* यह सुनकर सूबेदार ने उत्तर दिया, *"हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं हूँ कि तू मेरे घर में आए, पर केवल आज्ञा दे दे तो भी मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। यह मैं जानता हूँ क्योंकि मैं भी किसी बडे अधिकारी के नीचे काम करता हूँ, और मेरे नीचे भी दूसरे सिपाही हैं। जब एक से कहता हूँ 'जा' तो वह चला जाता है, और दूसरे से कहता हूँ 'आ' तो वह आ जाता है; और जब मैं अपने दास से कहता हूँ कि 'यह कर' तो वह उसे करता है।"* जब यीशु ने यह सुना तो चकित होते हुए उसने उसके पीछे आ रहे लोगों से कहा, *"मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मैंने ऐसा गहरा विश्वास इस्राएल में भी किसी में नहीं पाया।"* तब यीशु ने सेनानायक से कहा, *"जा, जैसा तेरा विश्वास है वैसा ही तेरे लिये हो।"* और उसका सेवक उसी समय चंगा हो गया। *[Matthew 8:5-13; Luke 7:1-10]*

मृतक को जीवनदान

थोड़े दिन के बाद यीशु अपने चेलों और बड़ी भीड़ के साथ नाईन नामक एक नगर की ओर चल दिया। जब वह नगरद्वार के पास पहुँचा, तो उसने देखा कि लोग एक मुर्दे को ले जा रहे थे। मृतक अपनी विधवा माँ का एकलौता पुत्र था। उसे देखकर यीशु को उस पर दया आयी, और उसने कहा, *"मत रो।"* तब उसने पास जाकर ताबूत को छुआ। ताबूत उठानेवाले ठहर गए, तब उसने कहा, *"हे जवान, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ!"* सो

वह मुर्दा उठ बैठा और बोलने लगा! यीशु ने उसे उसकी माँ को सौंप दिया। इस पर वे लोग यह कहते हुए परमेश्वर की महीमा बखानने लगे कि, *"हमारे बीच में एक महान नबी प्रकट हुआ है। परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपादृष्टि की है।" [Luke 7:11-16]*

यीशु का बहुतों को ठीक करना

यीशु जब पतरस के घर पहुँचा तो उसने उसकी सास को तेज बुखार के साथ बिस्तर में पड़ा देखा। सो उसने उसका हाथ छुआ और उसका ज्वर उतर गया। फिर वह बिस्तर से उठकर यीशु की सेवा करने लगी। *[Matthew 8:14-15; Mark 1:30-31; Luke 4:38-39]*

जब संध्या हुई तब लोग यीशु के पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्ट आत्माएँ (devils) थीं। यीशु ने उन आत्माओं को अपनी एक आज्ञा से निकाल दिया, और सब रोगियों को चंगा कर दिया। यह इसलिये हुआ ताकि परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता यशायाह द्वारा जो वचन कहा था वह पूरा हो: *"उसने हमारे रोगों को ले लिया और हमारे संतापों को अपने पर लिया।" (यशायाह 53:4) [Matthew 8:16-17; Mark 1:32-33; Luke 4:40]*

यीशु का अनुयायी बनने की चाह

यीशु ने जब अपने चारों ओर एक बड़ी भीड़ देखी तो उसने अपने अनुयायियों को झील के उस पार जाने की आज्ञा दी। तब एक यहूदी धर्मशास्त्री (scribe) ने पास आकर उससे कहा, *"हे गुरु, जहाँ कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे-पीछे हो चलूँगा।"* इस पर यीशु ने उससे कहा, *"लोमड़ियों के खोह और पक्षियों के घोंसले होते हैं, परन्तु मनुष्य के पुत्र (son of man) के लिये सिर टिकाने की भी जगह नहीं है।"* तब एक शिष्य ने उससे कहा, *"प्रभु, मेरे पिताजी मर गए है। मुझे जाने की अनुमति दे ताकि मैं पहले अपने पिता को दफन कर आऊँ।"* किन्तु यीशु ने उससे कहा, *"तू मेरे पीछे चल। मुर्दों को अपने मुर्दे गाड़ने दे (Let the dead bury their dead) और तू परमेश्वर के राज्य की*

घोषणा कर।" फिर किसी और ने भी कहा, "प्रभु, मैं तेरे पीछे चलूँगा, किन्तु पहले मुझे अपने घरवालों से विदा ले आने दे।" यीशु ने उससे कहा, *"जो कोई अपना हाथ हल पर रखने के बाद पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।" [Matthew 8:18-22; Luke 9:57-62]*

यीशु का तूफान शांत करना

तब यीशु अपने उसके चेलों के साथ एक नाव पर चढ़ा और उसमें जा बैठा और कहा, *"आओ, झील के पार चलें।"* जब नाव चल रही थी, उसी समय झील में एक ऐसा बड़ा तूफान उठा कि नाव लहरों से ढँपने लगी, किन्तु यीशु सो रहा था। तब उसके चेलों ने उसे जगाया और कहा, *"प्रभु, हमें बचा ले; हम मरने वाले हैं।"* तब यीशु ने उनसे कहा, *"हे अल्पविश्वासियों, तुम इतने डरते क्यों हो? तुम्हारा विश्वास कहाँ गया?"* तब उसने उठकर आँधी और झील को डाँटा, और चारों ओर शांति छा गई! वे अचम्भित होकर आपस में कहने लगे, *"यह कैसा मनुष्य है कि तूफान और सागर तक उसकी आज्ञा मानते हैं!" [Matthew 8:23-27; Mark 4:35-41; Luke 8:22-25]*

दो व्यक्तियों का दुष्टात्माओं से छुटकारा

जब यीशु झील के उस पार गदरेनियों/गिरासेनियों (Gergesenes) के क्षेत्र में पहुँचा, तो उसे दो ऐसे मनुष्य मिले जिसमें दुष्टात्माएँ (evil spirits) थीं। वे इतने भयानक थे कि उस मार्ग से कोई निकल नहीं सकता था। यीशु को देखकर उन्होंने चिल्लाकर कहा, *"हे परमेश्वर के पुत्र यीशु, तू हमसे क्या चाहता है? क्या तू निश्चित समय से पहले ही हमें दंड देने यहाँ आया है?"* वहाँ कुछ ही दूरी पर बहुत से सूअरों (swine/pigs) का एक झुण्ड चर रहा था। उन दुष्टात्माओं ने यीशु से विनती करते हुए कहा, *"यदि तुझे हमें बाहर निकालना ही है, तो तू हमें सूअरों के उस झुण्ड में भेज दे।"* सो यीशु ने उनसे कहा, *"चले जाओ!"* और वे दुष्ट दुष्टात्माएँ उन व्यक्तियों में से बाहर

निकलकर सूअरों में घुस गई। फिर वह समूचा झुण्ड एक ढलान से लुढकते पुढकते भागता हुआ झील में जा गिरा और डूब मरा। यह देखकर सुअरों के चरवाहे डर के मारे भागते हुए नगर में आ गये और जो कुछ हुआ था उसका सारा हाल लोगों को कह सुनाया। फिर तो नगर के सभी लोग यीशु को देखने बाहर निकल आए। जब उन्होंने यीशु को देखा तो उससे विनती की कि वह उनकी सीमा से बाहर निकल कर कहीं और चला जाये। *[Matthew 8:28-34; Mark 5:1-17]*

लूका रचित सुसमाचार के अनुसार, जब यीशु किनारे पर उतरा तो उसने उस नगर के एक व्यक्ति को देखा, जिसमें दुष्टात्माएँ थीं; वह कई दिनों से न कपड़े पहनता था और न घर में रहता था, वरन् कब्रों में रहा करता था। अंततः उसमें से दुष्टात्माएँ निकली जाने पर वह यीशु से अपने साथ ले चलने की विनती करने लगा, परन्तु यीशु ने उसे यह कहते हुए विदा किया कि, *"अपने घर जा और जो कुछ परमेश्वर ने तेरे लिये किया है, उसे लोगों से कह।"[Luke 8:26-39]*

लकवे के रोगी को चंगा करना

फिर यीशु नाव पर में बैठकर अपने नगर में आया। एक दिन कई लोग एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को खाट पर लिटा कर उसके पास लाए। यीशु ने उनका विश्वास देखकर उस लकवे के रोगी से कहा, *"हे पुत्र, धैर्य रख; तेरे पाप क्षमा हुए।"* यह देखकर कुछ यहूदी धर्मशास्त्रि (scribes) आपस में कहने लगे, *"यह व्यक्ति (यीशु) तो परमेश्वर की निन्दा (blasphemy) कर रहा है। परमेश्वर के सिवा कौन पापों की क्षमा कर सकता है?"* उनके मन की बातें जानकर यीशु ने कहा, *"तुम लोग मन में बुरा क्यों सोचते हो? अधिक सरल क्या है? यह कहना कि 'तेरे पाप क्षमा हुए', या यह कहना कि 'उठ और चल पड?'* पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार मनुष्य के पुत्र (Son of Man) को है, यह सिद्ध करते हुए, उसने लकवे के रोगी से कहा, *"उठ, अपना*

बिस्तर उठा, और अपने घर चला जा।" वह उठकर अपने घर चला गया! *[Matthew 9:1-7; Mark 2:1-12]*

लूका रचित सुसमाचार के अनुसार, एक दिन कई लोग एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को खाट पर लिटाकर लाए, और वे उसे घर में भीतर ले जाने और यीशु के सामने रखने का उपाय ढूँढ़ रहे थे। जब भीड़ के कारण वे उसे भीतर न ले जा सके तो उन्होंने छत पर चढ़कर और खपरैल हटाकर उस रोगी को खाट समेत बीच में यीशु के सामने उतार दिया। यीशु ने उन लोगों का विश्वास देखकर रोगी से कहा, *"हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए।"* यह सुनकर शास्त्री और फरीसी, जो गलील और यहूदिया के हर एक गाँव से और यरूशलेम से आए थे, विवाद करने लगे, *"यह कौन है जो परमेश्वर की निन्दा कर रहा है? परमेश्वर के सिवा कौन पापों की क्षमा कर सकता है?"* यीशु ने उनके मन की बातें जानकर, उनसे कहा, *"तुम अपने मनों में क्या विवाद कर रहे हो? अधिक सरल क्या है? क्या यह कहना कि 'तेरे पाप क्षमा हुए,' या यह कहना कि 'उठ और चल पड?'"* फिर यह सिद्ध करते हुए मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है, उसने उस लकवे के रोगी से कहा, *"मैं तुझ से कहता हूँ, उठ और अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।"* वह तुरन्त उनके सामने उठा और जिस खाट पर वह पड़ा था उसे उठाकर अपने घर चला गया। *[Luke 5:18-25]*

यीशु का मत्ती (Matthew) को चुनना

वहाँ से आगे बढ़कर यीशु ने मत्ती (लेवी) नामक एक व्यक्ति को चुंगी नाके (tax booth) पर बैठे देखा, और उससे कहा, *"मेरे पीछे हो ले।"* वह उठकर उसके पीछे हो लिया। और जब यीशु मत्ती के घर भोजन करने के लिये बैठा तो बहुत सारे चुंगी वसूलने वाले और पापी लोग आकर यीशु और उसके चेलों के साथ खाना खाने बैठ गए। यह देखकर फरीसियों ने यीशु के चेलों से पूछा, *"तुम्हारा गुरु चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ खाना क्यों खा रहा है?"* यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा, *"स्वस्थ-चंगे लोगों*

को नहीं, परन्तु रोगियों को चिकित्सक की आवश्यकता होती है। इसलिए तुम लोग जाओ और समझो कि शास्त्र के इस वचन का अर्थ क्या होता है 'मैं बलिदान नहीं, परन्तु दया चाहता हूँ; क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने आया हूँ।" [Matthew 9:9-13; Mark 2:13-17; Luke 5:27-32]

यीशु बैतहसदा में [स्थान: यरूशलेम]

यहूदियों के एक पर्व में यीशु यरूशलेम गया। यरूशलेम में भेड़-द्वार के पास एक कुण्ड है, जिसे इब्रानी (हिब्रू) भाषा में 'बैतहसदा' (Bethesda) कहा जाता है। उसके पाँच बरामदे (porches) हैं, जिनमें बहुत से बीमार, अंधे, लँगड़े और सूखे अंगवाले लोग (पानी के हिलने की आशा में) पड़े रहते थे, क्योंकि नियुक्त समय पर परमेश्वर का स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करता था; पानी हिलते ही कुण्ड में उतरने वाला पहला व्यक्ति अपने सभी रोगों से छुटकारा पा जाता था। वहाँ एक व्यक्ति था, जो अड़तीस वर्ष से बीमार था। जब यीशु ने उसे वहाँ लेटे देखा और यह जाना कि वह इतने लम्बे समय से इस बीमार दशा में पड़ा है तो उसने उससे पूछा, *"क्या तूम नीरोग होना चाहते हो?"* इस पर उस रोगी ने उत्तर दिया, *"हे स्वामी, मेरे पास कोई नहीं जो जल के हिलने पर मुझे कुण्ड में उतार दे। जब जब मैं कुण्ड में उतरने का प्रयास करता हूँ, सदा कोई दूसरा मुझसे पहले उसमें उतर जाता है।"* यीशु ने उससे कहा, *"उठ, अपना बिस्तर उठा और चल पड़।"* वह बीमार व्यक्ति तत्काल चंगा हो गया, और अपना बिस्तर उठाकर चलने फिरने लगा! उस दिन सब्त का दिन था। इसलिए यहूदी लोग उससे, जो अभी अभी चंगा हुआ था, कहने लगे, *"आज तो सब्त का दिन है। आज तू अपना बिस्तर उठाए फिरता है, यह उचित नहीं (यह हमारे नियमों के विरुद्ध है)।"* इस पर उसने कहा, *"जिसने मुझे चंगा किया है उसने मुझसे कहा, 'अपना बिस्तर उठा और चल'।"* उन लोगों ने उससे पूछा, *"वह कौन व्यक्ति है जिसने तुझसे कहा,*

'अपना बिस्तर उठा और चल'?" पर वह व्यक्ति जो चंगा हुआ था, यह नहीं जानता था कि उसे चंगा करने वाला कौन था, क्योंकि उस जगह में बहुत भीड़ थी और यीशु वहाँ से चला गया था। इसके बाद यीशु ने उस व्यक्ति को मन्दिर में देखा और उससे कहा, *"देख, अब तू चंगा हो गया है, इसलिये फिर से पाप मत करना। नहीं तो इससे भी भारी कोई विपत्ति तुझ पर आ सकती है।"* फिर उस व्यक्ति ने यहूदियों के पास जाकर कहा कि उसे ठीक करने वाला यीशु था। क्योंकि यीशु ने ऐसे काम सब्त के दिन किये थे, इसलिए यहूदियों ने उसे सताना शुरू कर दिया। इस पर यीशु ने उनसे कहा, *"मेरा पिता परमेश्वर कभी काम बंद नहीं करता, इसीलिए मैं भी निरन्तर काम करता हूँ।"* इस कारण यहूदी उसे मार डालने का और भी अधिक प्रयत्न करने लगे। न केवल इसलिये कि वह सब्त के नियमों को तोड़ रहा था, बल्कि वह परमेश्वर को अपना पिता कहकर अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराता था। इस पर यीशु ने उनसे कहा, *"मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि पुत्र स्वयं अपने आप कुछ नहीं कर सकता है; वह केवल वही करता है जो पिता को करते देखता है। पिता जो कुछ करता है, पुत्र भी वैसे ही करता है। पिता पुत्र से प्यार करता है और वह सब कुछ उसे दिखाता है जो वह करता है, और जब वह इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा, तब तुम सब चकित रह जाओगे। जैसे पिता मरे हुओं को उठाकर उन्हें जीवन देता है, वैसे ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जीवन देता है। पिता किसी का भी न्याय नहीं करता, परन्तु उसने न्याय करने का अधिकार पुत्र को दे दिया है, इसलिए कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें; जो व्यक्ति पुत्र का आदर नहीं करता वह उस पिता का भी आदर नहीं करता जिसने उसे भेजा है। मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो मेरे वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, वह अनन्त जीवन पाता है और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होगी; वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश पा जाता है। मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि वह समय आएगा, बल्कि आ ही चुका है, जब मृतक भी परमेश्वर के पुत्र का वचन सुनेंगे, और जो उसे सुनेंगे वे जीवित हो जायेंगे, क्योंकि जैसे*

पिता जीवन का स्रोत है, वैसे ही उसने अपने पुत्र को भी जीवन का स्रोत बनाया है; वरन् उसने अपने पुत्र को न्याय करने का भी अधिकार दिया है, क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र (Son of man) है। वह समय आ रहा है जब वे सब जो अपनी कब्रों में हैं, उसका वचन सुनकर बाहर निकलेंगे। जिन्होंने अच्छे काम किये है वे पुनरुत्थान पर जीवन पायेंगे, पर जिन्होंने बुरे काम किये है उन्हें पुनरुत्थान पर दण्ड दिया जायेगा। मैं स्वयं अपने आप कुछ नहीं कर सकता; मैं परमेश्वर से जो सुनता हूँ उसी के आधार पर न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय उचित है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा से कुछ नहीं करता, बल्कि उसकी इच्छा से करता हूँ जिसने मुझे भेजा है। यदि मैं अपनी तरफ से गवाही दूँ तो मेरी गवाही सत्य नहीं है। मेरी ओर से गवाही देने वाला एक और है, और मैं जानता हूँ कि मेरी जो गवाही वह देता है वह सच्ची है। परम पिता ने जो काम पूरे करने के लिए मुझे सौंपे है, मैं उन्हीं कामों को कर रहा हूँ और वे काम ही मेरे गवाह हैं कि परम पिता ने मुझे भेजा है। परम पिता ने, जिसने मुझे भेजा है, मेरी गवाही दी है। तुम लोगों ने उसका वचन कभी नहीं सुना और न तुमने उसका रूप देखा है, और न ही तुम अपने भीतर उसके वचन धारण करते हो, क्योंकि तुम उस पर विश्वास नहीं करते हो जिसे उसने भेजा है। तुम पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते हो क्योंकि तुम समझते हो कि तुम्हें उनके द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त होगा, किन्तु ये सभी शास्त्र मेरी गवाही देते है। फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते। मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता, किन्तु मैं जानता हूँ कि तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं है। मैं अपने पिता परमेश्वर के नाम से आया हूँ, फिर भी तुम मुझे स्वीकार नहीं करते, किन्तु यदि कोई और अपने ही नाम से आए तो तुम उसे ग्रहण कर लोगे। तुम मुझमें विश्वास कैसे कर सकते हो, क्योंकि तुम तो आपस में एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो एकमात्र परमेश्वर की ओर से है उसे नहीं चाहते? यह न समझो कि मैं परम पिता के सामने तुम्हें दोषी ठहराऊँगा; जो तुम्हें दोषी सिद्ध करेगा वह तो मूसा होगा, जिस पर तुमने अपना भरोसा रखा है। यदि तुम वास्तव में मूसा पर विश्वास करते हो तो तुम मुझमें भी विश्वास करते, क्योंकि

उसने मेरे बारे में लिखा है। जब तुम उसकी (मूसा की) लिखी हुई बातों पर विश्वास नहीं करते, तो मेरी बातों पर विश्वास कैसे करोगे?" [John 5:1-47]

यीशु दूसरे यहूदी धर्मनेताओं से भिन्न है

यूहन्ना के कुछ चेलों ने यीशु के पास आकर पूछा, *"क्या कारण है कि हम और फरीसी इतना उपवास करते हैं, पर तेरे चेले उपवास नहीं करते?"* यीशु ने उनसे कहा, *"क्या बाराती, जब तक दुल्हा उनके साथ है, शोक मनाते हैं? पर वे दिन भी आएँगे जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा। उस समय वे दुखी होंगे और उपवास करेंगे। नये कपड़े का पैबन्द पुराने वस्त्र पर कोई नहीं लगाता, क्योंकि ऐसा करने से वस्त्र की खींच ओर बढ जाती है और वह पैबन्द वस्त्र को और अधिक फाड देता है। लोग नया दाखरस (wine) पुरानी मशकों (bottles) में नहीं भरते हैं, क्योंकि ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं और दाखरस बह जाता है, इसलिये लोग नया दाखरस नई मशकों में भरते हैं, जिससे दाखरस और मशक दोनों सुरक्षित रहते है।" [Matthew 9:14-17; Mark 2:18-22; Luke 5:33-39]*

रोगी स्त्री को चंगा करना

यीशु यूहन्ना के चेलों से ये बातें बता ही रहा था, तभी **याईर** नामक एक यहूदी, जो आराधनालय का मुखिया था, उसके पास आया और झुक कर विनती की, *"मेरी पुत्री अभी अभी मर गई है। तू चलकर यदि अपना हाथ उस पर रख दे, तो वह पुनः जीवित हो जाएगी।"* यीशु उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे चल दिया। वहीं एक ऐसी स्त्री भी थी जिसको बारह वर्ष से लहू बहने का रोग था। वह अपनी सारी जीविका वैद्यों के पीछे व्यय कर चुकी थी, फिर भी किसी के हाथ से चंगी न हो सकी थी। उसने पीछे से आकर यीशु के वस्त्र की कन्नी छू ली। वह अपने मन में सोच रही थी, *"यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी तो भी चंगी हो जाऊँगी।"* इस पर यीशु ने कहा, *"मुझे किस ने*

छुआ?" जब सभी मना कर रहे थे तब पतरस ने कहा, *"स्वामी, लोगों ने तुझे घेर रखा है और तुझ पर गिर पड़ते है।"* परन्तु यीशु ने कहा, *"किसी ने मुझे छुआ है क्योंकि मुझे लगता है कि मुझ में से शक्ति निकली है।"* जब स्त्री ने देखा कि अब वह छिप नहीं सकती तब काँपती हुई आई और यीशु के पाँवों पर गिरकर सब लोगों के सामने बताया कि उसने उसे क्यों छुआ था और कैसे तत्काल उसका लहू बहना थम गया और वह ठीक हो गई। इस पर यीशु ने मुड़कर उसे देखा और कहा, *"पुत्री, धैर्य रख; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। अब चैन से जा।" [Matthew 9:18-22; Mark 5:22-34; Luke 8:41-48]*

मृत कन्या को जीवन दान

वह यह कह ही रहा था कि किसी ने मुखिया के यहाँ से आकर कहा, *"तेरी बेटी मर गई है। सो गुरु को अब और कष्ट न दे।"* यह सुनकर यीशु ने उसे कहा, *"डर मत! विश्वास रख। वह बच जाएगी।"* उधर जब यीशु मुखिया के घर पहुँचा तो उसने देखा कि लोग लड़की की मृत्यु पर रो पीट कर शोर कर रहे थे। तब यीशु ने लोगों से कहा, *"यहाँ से हट जाओ। लड़की मरी नहीं है, पर वह सो रही है।"* यह सुनकर लोग उसकी हँसी उड़ाने लगे। घर में आकर यीशु ने पतरस, यूहन्ना, याकूब और लड़की के माता-पिता को छोड़ सबको घर से बाहर निकल जाने को कहा। जब भीड़ को घर से बाहर निकाल दी गई, तो यीशु ने लड़की के कमरे में जाकर उसका हाथ पकड़ा, और पुकारकर कहा, *"हे लड़की उठ!"* तुरंत उसके प्राण लौट आए और वह जी उठी! फिर उसने आज्ञा दी कि उसे कुछ खाने को दिया जाए। *[Matthew 9:23-25; Mark 5:35-43; Luke 8:49-56]*

यह सब कुछ देखकर लड़की के माता-पिता दंग रह गए, परन्तु यीशु ने उन्हें चेतावनी दी कि यह जो हुआ है, किसी से न कहना।

यीशु ने दो अंधे व्यक्ति को दृष्टि दी

जब यीशु वहाँ से जाने लगा तो दो अंधे व्यक्ति उसके पीछे यह पुकारते हुए चलने लगे, *"हे दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर।"* यीशु ने उनसे कहा, *"क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं यह कर सकता हूँ?"* उन्होंने उत्तर दिया, *"हाँ प्रभु।"* इस पर यीशु ने उनकी आँखें छूते हुए कहा, *"तुम्हारे लिए वैसा ही हो जैसा तुम्हारा विश्वास है।"* और अंधों को दृष्टि मिल गयी। फिर यीशु ने उन्हें सख्ती से चेतावनी देते हुए कहा, *"सावधान, इसके बारे में किसीको पता नहीं चलना चाहिए।"* पर उन्होंने वहाँ से जाकर सारे क्षेत्र में इस समाचार को फैला दिया। *[Matthew 9:27-31]*

यीशु ने गूँगे को वाचा दी

जब वे दोनों वहाँ से जा रहे थे तो कुछ लोग यीशु के पास एक गूँगे को लेकर आये। उस गूँगे में दुष्टात्मा समाई हुई थी और इसलिए वह कुछ बोल नहीं पाता था। यीशु द्वारा जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो वह गूंगा बोलने लगा। और भीड़ ने विस्मय में कहा, *"इस्राएल में ऐसा पहले कभी नहीं देखा गया।"* परंतु यह देखकर फरीसियों ने कहा, *"यह तो दुष्टात्माओं के सरदार (शैतान) की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।"* *[Matthew 9:32-34]*

यीशु को लोगों पर खेद

यीशु उस क्षेत्र के सब नगरों और गाँवों में फिरता रहा और आराधनालयों (synagogues) में उपदेश करता, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार का प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारियों को दूर करता रहा। वह जब किसी भीड़ को देखता तो उसके प्रति करुणा से भरा जाता, क्योंकि वे लोग वैसे ही सताये हुए, असहाय और भटके हुए से थे जैसे वे भेड़ होती हैं जिनका कोई चरवाहा नहीं होता। तब उसने अपने चेलों से कहा, *"फसल (harvest) तो बहुत हैं, पर मजदूर थोड़े हैं। इसलिए फसल के स्वामी से प्रार्थना करो कि वह अपनी फसल को काटने के लिये मजदूर भेजे।" [Matthew 9:35-38]*

सुसमाचार के प्रचार के लिए शिष्यों को भेजना

अब तक यीशु ने बारह चेले बना लिये थे जिनको उसने 'प्रेरित' (apostles) कहा। उनके नाम ये है: शमौन जो पतरस कहलाया (Simon, called Peter) और उसका भाई अन्द्रियास (Andrew); जब्दी का पुत्र याकूब (James) और उसका भाई यूहन्ना (John); फिलिप्पुस (Philip) और बरतुल्मै (Bartholomew), थोमा (Thomas) और मत्ती (Matthew), हलफईस का पुत्र याकूब (James Less) और तद्दै (Thaddeus / Lebbaeus / Judas); शमौन कनानी (Simon the Canaanite) और यहूदा इस्करियोती (Judas Iscariot).

यीशु ने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर उन्हें अशुद्ध आत्माओं (unclean spirits) को बाहर निकालने की और सब प्रकार की बीमारियों और दुर्बलताओं को दूर करेने की की सामर्थ्य और अधिकार दिया। *[Matthew 10:1-4; Mark 3:13-19; Luke 6:12-16]*

इन बारहों को यीशु ने यह निर्देश देकर बाहर भेजा, *"गैर-यहूदियों (Gentiles) के क्षेत्र में न जाना तथा सामरियों (Samaritans) के किसी नगर में प्रवेश न करना। केवल इस्राएल के परिवार ही की खोई हुई भेड़ों के पास जाओ, और उन्हें उपदेश दो कि स्वर्ग का राज्य निकट है। बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जीवन दो, कोढ़ियों को शुद्ध करो, और दुष्टात्माओं को निकालो। तुमने बिना कुछ दिये प्रभु का आशीष और शक्तियाँ पाई है, इसलिये उन्हें दूसरों को बिना कुछ लिये मुफ्त में बाँटो। अपने बटुओं में न तो सोना, न रूपा, और न तांबा रखना। यात्रा के लिये न झोला रखो, न दो कुर्ता, न जूते और न लाठी लो। जिस किसी नगर या गाँव में जाओ तो पता लगाओ कि वहाँ कौन योग्य है और जब तक वहाँ से न निकलो, उसी के यहाँ रहो। घर में प्रवेश करते हुए उसे आशीष देना। यदि उस घर के लोग योग्य होंगे तो तुम्हारा आशीर्वाद उनके साथ रहेगा, परन्तु यदि वे योग्य न हों तो तुम्हारा आशीर्वाद तुम्हारे पास लौट आएगा।*

यदि कोई तुम्हारा स्वागत न करे या तुम्हारी बात न सुने तो उस घर या उस नगर से निकलते हुए अपने पाँवों की धूल वहीं झाड़ डालो (shake off the dust of your feet)। मैं तुम से सत्य कहता हूँ कि न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा नगरों की दशा कहीं अधिक अच्छी होगी।" [Matthew 10:5-15; Mark 6:7-11; Luke 9:1-5; 10:4-12]

प्रेरितों को यीशु की चेतावनी

"देखो, मैं तुम्हें भेड़ों की तरह भेड़ियों के बीच में भेज रहा हूँ, इसलिए साँपों की तरह बुद्धिमान और कबूतरों की तरह भोले बनो। परन्तु लोगों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें बंदी बनाकर यहूदी पंचायतों (councils-सभाओं) को सौंप देंगे और अपने आराधनालयों में तुम्हें कोड़े मारेंगे। तुम्हें राज्यपालों (governors) और राजाओं (kings) के सामने पेश किया जायेगा, क्योंकि तुम मेरे अनुयायी हो। तुम्हें अवसर दिया जायेगा कि तुम उनको और गैर-यहीदियों (Gentiles) को मेरे बारे में गवाही दो। जब वे तुम्हें पकडे तो यह चिन्ता मत करना कि तुम्हें क्या कहना (बोलना) है और कैसे कहना है, क्योंकि उसी समय तुम्हें बता दिया जाएगा कि तुम्हें क्या कहना (बोलना) है। याद रखो कि बोलनेवाले तुम नहीं हो, परन्तु तुम्हारे परम पिता का आत्मा तुम्हारे द्वारा बोलेगा।" [Matthew 10:16-20; Mark 13:9-11; Luke 21:12-15]

"भाई अपने भाई को और माता-पिता अपने बच्चों को पकडवा कर मरवा डालेंगे, बच्चे अपने माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर/घृणा करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरेगा उसी का उद्धार होगा। जब लोग तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे नगर में चले जाना। मैं तुम से सत्य कहता हूँ कि इससे पहले कि तुम इस्राएल के सभी नगरों का चक्कर पूरा करो, मनुष्य का पुत्र दूबारा आ जाएगा (मैं दूबारा आ जाउंगा।)" [Matthew 10:21-23; Mark 13:12-13; Luke 21:16-17]

"चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं होता और न ही दास अपने स्वामी से बड़ा होता है। चेले का गुरु के बराबर और दास का स्वामी के बराबर होना ही पर्याप्त है; जब वे घर के स्वामी को ही शैतान (Beelzebub) कहते है तो उसके घर के दूसरे लोगों के साथ तो वे और भी बुरा व्यवहार करेंगे!" [Matthew 10:24-25]

"इसलिए उनसे मत डरो, क्योंकि जो कुछ छिपा है, वह सब उजागर होगा, और हर वह वस्तु जो गुप्त है उसे प्रकट की जाएगी। जो कुछ मैं तुम से अंधियारे में कहता हूँ, उसे तुम उजाले में कहो; और जो कुछ मैं तुम से तुम्हारे कानों में कहता हूँ, उसकी तुम छतों पर से घोषणा करो। जो शरीर को मार सकते है, पर आत्मा को मार नहीं सकते, उनसे मत डरो; पर उस परमेश्वर से डरो जो तुम्हारी आत्मा और तुम्हारे शरीर दोनों को नरक में डाल कर नाश कर सकता है। क्या एक पैसे में दो गौरैये / चिडिया नहीं बिकती है? फिर भी तुम्हारे पिता परमेश्वर की इच्छा के बिना उनमें से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती। अरे! तुम्हारे सिर का एक एक बाल तक गिना हुआ हैं। इसलिए, डरो नहीं। तुम्हारा मूल्य तो वैसी अनेक गौरैयों से कहीं अधिक है।" [Matthew 10:26-31; Luke 12:2-7]

"जो कोई सब लोगों के सामने मुझे अपनायेगा, मैं भी उसे अपने स्वर्गीय पिता के सामने अपनाउँगा। पर जो कोई लोगों के सामने मेरा इन्कार करेगा, मैं भी उसका अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूँगा। ***यह मत समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने / शांति लाने आया हूँ; मैं शांति लाने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूँ। मैं तो आया हूँ कि पुत्र को उसके पिता से, बेटी को उसकी माँ से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूँ। मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे। जो अपने माता या पिता को मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मेरा होने के योग्य नहीं है, और जो अपने बेटा या बेटी को मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मेरा होने के योग्य नहीं है।*** *जो यातनाओं का अपना क्रूस स्वयं उठाकर मेरे पीछे नहीं*

चलता वह मेरा होने योग्य नहीं है। जो अपनी जान बचाने की चेष्टा करता है, वह अपने प्राण खो देगा, किन्तु जो मेरे लिये अपना प्राण देगा, वह जीवन पाएगा। जो तुम्हें अपनाता है, वह मुझे अपनाता है और जो मुझे अपनाता है, वह मुझे भेजनेवाले परमेश्वर को अपनाता है।" [Matthew 10:32-40; Luke 12:8-9, 51-53; 14:26-27]

"जो किसी नबी को इसलिये अपनाता है कि वह नबी है, उसे वही प्रतिफल (reward) मिलेगा जो कि नबी को मिलता है। यदि तुम किसी भले आदमी (धर्मी) का इसलिये स्वागत करते हो कि वह भला आदमी है, तुम्हें सचमुच वही प्रतिफल मिलेगा जो किसी भले आदमी को मिलना चाहिए। यदि कोई मेरे इन भोले-भाले शिष्यों (little ones) में से किसी एक को भी इसलिये एक कटोरा ठण्डा पानी पिलाएगा कि वह मेरा अनुयायी है, तो मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उसे इसका प्रतिफल, निश्चय ही, बिना मिले नहीं रहेगा।" [Matthew 10:41-42; Luke 9:41]

यीशु और बप्तिस्मा देने वाला यूहन्ना

जब यीशु ने इस तरह अपने चेलों को निर्देश दे दिया, तो वह वहाँ से चल पडा और गलील क्षेत्र के नगरों में उपदेश देता और प्रचार करता घूमने लगा।

यूहन्ना ने जब बन्दीगृह में अपने चेलों से यीशु मसीह के कामों का समाचार सुना तो उसने अपने चेलों में से दो को यीशु से यह पूछने भेजा, *"क्या तू वही है जो आने वाला था, या हम किसी और (आने वाले) की प्रतीक्षा करें?"* उन्होंने यीशु के पास आकर पूछा, *"यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे पास यह पूछने को भेजा है कि क्या तू वही है जो आने वाला था, या हम किसी और (आने वाले) की प्रतीक्षा करें?"* इसके उत्तर में यीशु ने कहा, *"जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब कुछ जाकर यूहन्ना को बताओ कि अंधे को आँखें मिल रही हैं, लँगड़े चल पा रहे हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जा रहे हैं, बहरे सुन रहे हैं, मुर्दे जिलाए जा रहे हैं, और दीन दुखियों में सुसमाचार सुनाया जा रहा है।" [Matthew 11:2-5; Luke 7:19-22]*

जब यूहन्ना के शिष्य वहाँ से चल दिए तो यीशु यूहन्ना के बारे में लोगों से कहने लगा, *"तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलता सरकण्डा? नहीं! फिर तुम क्या देखने गए थे? क्या कोमल वस्त्र पहने हुए व्यक्ति को? देखो, जो कोमल और भड़कीले वस्त्र पहनते है और सुख-विलास से रहते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं। तो फिर तुम वहाँ क्यों गए थे? क्या किसी भविष्यद्वक्ता को देखने? हाँ, मैं तुम से कहता हूँ कि जिसे तुमने देखा है वह भविष्यद्वक्ता से कहीं ज्यादा है। यह वही है जिसके बारे में शास्त्रों में लिखा है: 'देख, मैं तुझसे पहले ही अपना दूत तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरे लिये मार्ग तैयार करेगा।' (मला. 3:1) [Matthew 11:7-10; Luke 7:24-27]*

"मैं तुम से सच कहता हूँ कि बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना से बड़ा कोई मनुष्य पैदा नहीं हुआ, फिर भी स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा व्यक्ति भी यूहन्ना से बड़ा है। (सब साधारण लोगों ने और चुंगी लेनेवालों ने भी यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर यह मान लिया कि परमेश्वर का मार्ग सत्य है, पर फरीसियों और व्यवस्था के जानकारों ने उससे बपतिस्मा न लेकर उनके सम्बंध में परमेश्वर की इच्छा को नकार दिया दिया। अतः मैं इस युग के लोगों की उपमा किस से दूँ कि वे कैसे हैं? वे उन बालकों के समान हैं जो बाजार में बैठे हुए एक दूसरे से पुकार कर कहते हैं, 'हमने तुम्हारे लिये बाँसुरी बजाई, पर तुम न नाचे, हमने विलाप गीत गाया, पर तुम न रोए!' क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला न रोटी खाता आया, न दाखरस पीता आया, फिर भी तुम कहते हो, 'उसमें दुष्टात्मा है'। फिर मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया, पर तुम कहते हो, 'देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, चुंगी लेनेवालों का और पापियों का मित्र।') [Matthew 11:11-19; Luke 7:28-34]

शमौन फरीसी

एक दिन किसी फरीसी ने अपने साथ खाने पर यीशु को निमंत्रित किया, अतः वह उस फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा। वहाँ उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह

जानकर कि यीशु फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, स्फटिक के एक पात्र में इत्र लाई और उसके के पास खड़ी होकर, रोती हुई, उसके पाँवों को आँसुओं से भिगोने लगी और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी और उसके पाँव बार-बार चूमकर उन पर इत्र मलने लगी। यह देखकर वह फरीसी अपने मन में सोचने लगा, *"यदि यह नबी होता तो जान जाता कि यह स्त्री जो उसे छू रही है वह कौन और कैसी है? क्योंकि वह स्त्री तो पापिन है।"* यह सुन कर यीशु ने उसके उत्तर में कहा, *"हे शमौन, मुझे तुझसे कुछ कहना है।"* वह बोला, *"हे गुरु, कह।"*

यीशु ने कहा, *"किसी साहूकर के दो देनदार थे, एक पाँच सौ का, और दूसरा पचास दीनार का देनदार था। क्योंकि उनके पास वापस लौटाने को कुछ नहीं था, तो साहूकर ने दोनों के कर्ज माफ कर दिये। अब बता, उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम रखेगा?"*

शमौन ने उत्तर दिया, *"मेरी समझ में वह, जिसका उसने अधिक कर्ज माफ किया।"* यीशु ने उससे कहा, *"तूने ठीक विचार किया है।"*

फिर उसने उस स्त्री की तरफ मुडकर शमौन से पूछा, *"क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया, परन्तु तूने मुझे पाँव धोने के लिये पानी न दिया, पर इस स्त्री ने मेरे पाँव आँसुओं से तर कर दिये और फिर अपने बालों से पोंछा। तूने स्वागतमें मुझे नहीं चूमा, किन्तु यह स्त्री जब से मैं तेरे घर में आया हूँ तब से मेरे पैरों को चूमती रही है। तूने मेरे सिर पर तेल मलकर अभिषेक नहीं किया, पर इसने मेरे पाँवों पर इत्र छिडका है। इसलिए इसके पाप, जो बहुत से थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया, किन्तु जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।"*

तब यीशु ने उस स्त्री से कहा, *"तेरे पाप क्षमा हुए। तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा।"* तब जो लोग उसके साथ भोजन करने बैठे थे वे मन ही मन में सोचने लगे, *"यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?" [Matthew 26:6-12; Mark 14:3-9; John 12:1-8]*

इसके बाद वह अपने बारह शिष्यों के साथ नगर-नगर और गाँव-गाँव में प्रचार करता हुआ और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ फिरने लगा। उसके साथ कुछ स्त्रियाँ भी हुआ करती थी, जिन्हें उसने दुष्टात्माओं और बीमारियों से छुटकारा दिलाया था। इनमे मरियम मगदलीनी नाम कि एक स्त्री थी, जिसे सात दुष्टात्माओं से छुटकारा मिला था। हेरोदेस के प्रबन्ध अधिकारी खुज़ा की पत्नी योअन्ना, सूसन्नाह और बहुत सी स्त्रियाँ भी जो यीशु और उसके शिष्यों की सेवा का प्रबन्ध करती थीं।

सब्त को लेकर यहूदियों द्वारा यीशु और उसके शिष्यों की आलोचना

लगभग उसी समय यीशु सब्त के दिन अनाज के खेतों में से होकर जा रहा था। उसके चेलों को भूख लगी और वे गेहूँ की कुछ बालें तोड़ कर हाथों से मल-मल कर खाने लगे। फरीसियों ने यह देखकर यीशु से कहा, *''देख, तेरे चेले वह काम कर रहे हैं जिसका सब्त के दिन किया जाना (मूसा की व्यवस्था के अनुसार) वैध (lawful) नहीं है।''* इस पर यीशु ने उनसे पूछा, *''क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि दाऊद और उसके साथियों ने, जब उन्हें भूख लगी थी, क्या किया था? उसने परमेश्वर के घर में घुस कर (परमेश्वर को चढाई) भेंट की पवित्र रोटियाँ खाई थी, जिसे खाना उसके और उसके साथियों के लिए अनुचित (मूसा की व्यवस्था के विरुद्ध) था। ये रोटियाँ खाना याजकों के सिवा किसी को उचित नहीं था। क्या तुम ने मूसा की व्यवस्था (law) में नहीं पढ़ा कि मन्दिर के याजक (priests) सब्त के दिन सब्त की विधि को तोड़ने पर भी निर्दोष ठहरते हैं? पर मैं तुम से कहता हूँ कि यहाँ कोई है, जो मन्दिर से भी महान है। यदि तुम शास्त्र के इस वचन का अर्थ जानते कि 'मैं दया से प्रसन्न होता हूँ, बलिदान से नहीं', तो तुम निर्दोष को दोषी न ठहराते। मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी स्वामी है।'' [Matthew 12:1-8; Marrk 2:23-28; Luke 6:1-5]*

सूखे (withered) हाथ को ठीक करना

वहाँ से चलकर यीशु एक आराधनालय में पहूँचा, जहाँ एक व्यक्ति था, जिसका हाथ सूख चुका था। कुछ शास्त्री और फरीसी यीशु पर दोष लगाने का अवसर पाने के लिये उसकी ताक में थे, कि देखें कि वह सब्त के दिन उसे चंगा करता है कि नहीं। सो उन्होंने (यीशु पर दोष लगाने के इरादे से) पूछा, *"क्या (मूसा के कानून के अनुसार) सब्त के दिन किसी को चंगा करना उचित है?"* यीशु ने उत्तर दिया, *"मैं तुम से यह पूछता हूँ कि सब्त के दिन क्या उचित है? भला करना या बुरा करना? किसी का प्राण बचाना या नाश करना? तुम में ऐसा कौन है, जिसकी एक भेड़ सब्त के दिन गड्ढे में गिर जाए, फिर भी वह उसे पकड़कर नहीं निकालेगा? फिर, मनुष्य तो एक भेड़ से कई अधिक महत्वपूर्ण है! इसलिए सब्त के दिन भलाई का काम करना (मूसा के कानून के अनुसार) उचित (lawful) है।"* फिर यीशु ने चारों ओर उन सभी को देखकर उस सूखे हाथ वाले व्यक्ति से कहा, *"अपना हाथ आगे बढ़ा।"* उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। वह हाथ दूसरे हाथ के समान पूरी तरह ठीक हो गया था। फिर वे शास्त्री और फरीसी वहाँ से चले गये और यीशु को मारने के लिए कोई रास्ता ढूँढने की तरकीब सोचने लगे। यह जानकर यीशु वहाँ से चला गया। बहुत से लोग भी उसके पीछे हो लिये, तब उसने सब को चेताया कि वे उसके बारे में लोगों को कुछ न बतायें। *[Matthew 12:9-14; Mark 3:1-6; Luke 6:6-11]*

यीशु में परमेश्वर की शक्ति

तब लोग यीशु के पास एक अंधे-गूँगे को लाये जिस पर एक दुष्टात्मा सवार थी। उसने उसे अच्छा किया और वह अंधा-गूँगा देखने और बोलने लगा। इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, *"यह क्या दाऊद का पुत्र नहीं है?"* जब फरीसियों ने यह सुना तो वे बोले, *"यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान (Beelzebub) की सहायता से दुष्टात्माओं निकालता है।"* यीशु को उनके विचारों का पता चल गया और कहा, *"यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो तुम्हारे वंश किसकी*

सहायता से उन्हें निकालते हैं? पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा (Spirit of God) की सहायता से दुष्टात्माओं को बाहर निकालता हूँ, तो समझ लो कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है।" [Matthew 12:22-28; Mark 3:20-30; Luke 11:14-23]

जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है

यीशु ने आगे कहा, *"जो मेरे साथ नहीं, वह मेरा विरोधी है। इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि मनुष्य के सब प्रकार के पाप और निन्दा क्षमा कर दिये जायेंगे, किन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा (blasphemy) कभी क्षमा नहीं की जाएगी। जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, तो उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, तो उसका अपराध न तो इस लोक में और न ही आनेवाले लोक में क्षमा किया जाएगा। यदि पेड़ को अच्छा कहते हो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो, या पेड़ को निकम्मा कहते हो, तो उसके फल को भी निकम्मा कहो; क्योंकि पेड़ अपने फल ही से पहचाना जाता है। ओ साँप के बच्चों, जब तुम बुरे हो तो अच्छी बातें कैसे कह सकते हो? जो मन में भरा है, वही मुँह पर आता है। किन्तु न्याय के दिन प्रत्येक व्यक्ति को अपने हर व्यर्थ में बोले शब्द का हिसाब देना होगा। तुझे तेरी बातों के आधार पर ही निर्दोष या दोषी ठहराया जाएगा।" [Matthew 12:30-37]*

यीशु से आश्चर्य चिन्ह (sign/miracle) की माँग

फिर कुछ धर्मशास्त्रियों और फरीसियों ने यीशु से कहा, *"हे गुरु, हम तुझे एक चिन्ह प्रकट करते देखना चाहते हैं।"* उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, *"इस युग के बुरे और दुराचारी लोग चिन्ह देखना चाहते हैं, परन्तु भविष्यद्वक्ता योना (Jonah) के चिन्ह के अलवा कोई और चिन्ह उन्हें नहीं दिया जाएगा। जैसे योना तीन रात और तीन दिन महामच्छ (whale) के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन रात और तीन दिन पृथ्वी के*

भीतर रहेगा। वह तो योना से भी बड़ा है।" [Matthew 12:38-41; Mark 8:11-12; Luke 11:29-30]

यीशु के अनुयायी ही उसका परिवार

वह अभी भीड़ से बातें कर ही रहा था कि उसकी माता और भाई-बन्धु वहाँ आकर बाहर खड़े हो गये। वे उससे बातें करना चाहते थे। किसी ने यीशु से कहा, *"देख, तेरी माता और तेरे भाई-बन्धु बाहर खड़े हैं और तुझ से बात करना चाहते हैं।"* यह सुन उसने कहा, *"कौन मेरी माँ? और कौन मेरे भाई-बन्धु?"* फिर अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ा कर कहा, *"मेरी माता और मेरे भाई-बन्धु तो ये हैं। मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर जो चलता है, वही मेरा भाई, बहन और माँ है।" [Matthew 12:46-50; Mark 3:31-35; Luke 8:19-21]*

किसान और बीज की दृष्टान्त-कथा (parable)

उसी दिन यीशु घर से निकलकर झील के किनारे उपदेश देने जा बैठा। बहुत से लोग उसके चारों ओर इकट्ठे हो गये, सो वह एक नाव पर चढ़ कर बैठ गया, और भीड़ किनारे पर खड़ी रही। उसने उन्हें दृष्टान्तों (parables) में बहुत सी बातें कही।

उसने कहा कि *"एक किसान (sower) बीज बोने निकला। जब बुवाई कर रहा था तो कुछ बीज मार्ग के किनारे जा गिरे और पक्षियों ने आकर उन्हें चुग लिया। कुछ बीज पत्थरीली भूमि पर जा गिरे, जहाँ वे जल्द उग आए, पर सूरज निकलने पर वे पौधे झुलस गये और गहरी जड़ न पकड़ने से सूख गए। कुछ बीज झाड़ियों में गिरे, पर झाड़ियों ने बढ़कर उन पौधों को दबा डाला। पर कुछ बीज जो अच्छी भूमि पर गिरे थे वे अच्छी फसल देने लगे। फसल, जितना बोया था, उससे कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना हुई। जिसके कान हों वह सुन ले।" [Matthew 13:1-9; Mark 4:1-9; Luke 8:4-8]*

दृष्टान्त-कथाओं का प्रयोजन

फिर यीशु के शिष्यों ने उसके पास जाकर पूछा, *"तू उन (लोगों) से बातें करते हुए दृष्टान्त-कथाओं में क्यों बातें करता है?"* उत्तर में उसने कहा, *"केवल तुम्हें स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, उन (लोगों) को नहीं। इसलिए सावधान रहो, कि तुम किस रीति से सुनते हो? क्योंकि जिसके पास थोडा बहुत है, उसे और भी दिया जाएगा और उसके पास बहुत हो जाएगा, पर जिसके पास कुछ नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है, वह भी छीन लिया जाएगा। मैं उनसे दृष्टान्तों में इसलिये बातें करता हूँ, ताकि वे देखते हुए भी न देख सकें और सुनते हुए भी न सुन और समझ सकें। पर धन्य है तुम्हारी आँखें और तुम्हारे कान कि वे देख और सुन सकते हैं। बहुत से भविष्यवक्ता और धर्मात्मा जिन बातों को देखना और सुनना चाहते थे, पर देख या सुन न सके, उन्हें तुम देख और सुन रहो हो।" [Matthew 13:10-17; Mark 4:10-12; Luke 8:9-10]*

बीज बोने की दृष्टान्त-कथा का अर्थ

"बीज तो परमेश्वर का वचन है। जो कोई स्वर्ग के राज्य का सुसंदेश सुनता है, पर उसे समझता नहीं है, उसके मन में जो कुछ बोया गया था उसे वह दुष्ट (शैतान) आकर उखाड (उठा) ले जाता है कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएँ। यह वही बीज है जो मार्ग के किनारे गिर पडा था। और जो बीज पत्थरीली भूमि पर बोये गये थे वे वे लोग है जो सुसंदेश सुनकर उसे तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेते है, पर अपने भीतर उसकी जड़ नहीं जमने देते। जब सुसंदेश के कारण उन पर क्लेश या उत्पीड़न होता है, तो वे तुरन्त डगमगा जाते है। झाड़ियों में गिरे बीज का अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश को सुनता तो है, पर संसार की चिन्ता और धन का लोभ सुसंदेश को दबा देता है, और वह बीज फल नहीं लाता। अच्छी भूमि में गिरे बीज से अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश

को सुनकर समझता है।" [Matthew 13:18-23; Mark 4:13-20; Luke 8:11-15]

गेहूँ (wheat) और खरपतवार (tares) का दृष्टान्त

तब यीशु ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया: *"स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छे बीज बोये थे। पर जब लोग सो रहे थे तब उस व्यक्ति का शत्रु आकर गेहूँ के बीच खरपतवार बोकर चला गया। जब गेहूँ में अंकुर निकले और बालें लगी, तो खरपतवार के पौधे भी दिखने लगे। इस पर खेत के मालिक के पास आकर उसके सेवकों ने उससे कहा, 'हे स्वामी, क्या तूने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था? फिर खरपतवार के पौधे उसमें कहाँ से आ गए?' तब उसने उनसे कहा, 'यह किसी शत्रु का काम है।' सेवकों ने उससे पूछा, 'क्या हम खरपतवार उखाड़ दें?' इस पर स्वामी ने कहा, 'नहीं, कहीं ऐसा न हो कि खरपतवार के पौधे बटोरते हुए तुम उनके साथ गेहूँ भी उखाड़ लो। फसल की कटनी (harvest) तक दोनों को साथ साथ बढ़ने दो, फिर कटनी के समय मैं फसल काटनेवालों (reapers) से कहूँगा कि पहले खरपतवार के पौधे की पुलियाँ बना कर उन्हें जला दो, और फिर गेहूँ को बटोर कर मेरे खत्ते (barn) में इकट्ठा कर दो।" [Matthew 13:24-30]*

कई अन्य दृष्टान्त-कथाएं

यीशु ने उनके सामने एक और दृष्टान्त-कथा रखी: *"स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी ने लेकर अपने खेत में बो दिया। वह सब बीजों से छोटा तो है, पर वह जब बढ़ जाता है तब सब साग-पात से बड़ा हो जाता है और ऐसा पेड़ हो जाता है कि पक्षी आकर उसकी शाखाओं पर बसेरा करने लगते हैं।" [Matthew 13:31-32]*

यीशु ने एक और दृष्टान्त-कथा सुनायी: *"स्वर्ग का राज्य ख़मीर (leaven) के समान है जिसे किसी स्त्री ने तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते-होते वह सब ख़मीर हो गया।" [Matthew 13:33]*

यीशु ने लोगों से ये सब बातें दृष्टान्तों में कहीं। वास्तव में, बिना दृष्टान्त वह उनसे कुछ भी नहीं कहता था, ताकि भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया यह वचन पूरा हो: *"मैं दृष्टान्त कहने को अपना मुँह खोलूँगा। मैं उन बातों को प्रगट करूँगा जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रही हैं।" [Matthew 13:34-35]*

गेहूँ और खरपतवार के दृष्टान्त का अर्थ

फिर जब यीशु उस भीड़ को विदा कर घर चला आया, तब उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा, *"खरपतवार के दृष्टान्त का अर्थ हमें समझा।"* उत्तर में यीशु ने कहा, *"अच्छे बीज का बोनेवाला मनुष्य का पुत्र (Son of man) है। खेत यह संसार है। अच्छे बीज का अर्थ है, स्वर्ग के राज्य के सन्तान, और खरपतवार का अर्थ है, दुष्ट के सन्तान। वह शत्रु जिसने खरपतवार के बीज बोये थे वह शैतान है और कटनी के समय का अर्थ है जगत का अन्त, और काटनेवाले स्वर्गदूत हैं। जैसे खरपतवार बटोरे और जलाए जाते हैं वैसा ही सृष्टि के अन्त में होगा। मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य से सभी पापियों को और उनको, जो लोगों को पाप के लिये प्रेरित करते है, इकट्ठा करेंगे और उन्हें धधकती आग के कुण्ड (furnace) में झोंक देंगे जहाँ केवल दाँत पीसना और रोना ही रोना होगा। उस समय धार्मिक (the righteous) अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। जिसके कान हों वह सुन ले।" [Matthew 13:36-43]*

धन का भण्डार (treasure) और मोती (pearls) की दृष्टान्त-कथा

"स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पा कर वहीं छिपा दिया, और आनन्द के मारे अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया।

स्वर्ग का राज्य एक ऐसे व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। जब उसे एक अनमोल मोती मिला तो जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया।" [Matthew 13:44-46]

मछली पकड़ने का जाल

"स्वर्ग का राज्य मछली पकड़ने के लिए झील में फेंके गए एक जाल के समान है, जो हर प्रकार की मछलियों को समेट लाया। जब जाल पूरा भर गया तो मछुए उसे किनारे पर खींच लाए। और वहाँ बैठकर अच्छी-अच्छी मछलियाँ छाँट कर बरतनों में भर ली गयी, किन्तु बेकार मछलियाँ फेंक दी गयी। जगत के अन्त में ऐसा ही होगा; स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे, और उन्हें आग के कुण्ड में डाल देंगे।"

फिर यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा, *"क्या तुम ये सब बातें समझ गए?"* उन्होंने उत्तर दिया, *"हाँ।" [Matthew 13:47-51]*

यीशु का अपने नगर लौटना

इन दृष्टान्त-कथाओं को समाप्त कर यीशु वहाँ से चल दिया और अपने नगर में आकर आराधनालय में उपदेश देने लगा। इसे सुनकर हर कोई चकित होकर कहने लगे, *"इसको यह ज्ञान और चमत्कारी शक्ति कहाँ से मिली? क्या यह वही बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या इसकी माता का नाम मरियम और इसके भाइयों के नाम याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं है? क्या इसकी सब बहनें हमारे बीच में नहीं रहती है? फिर इसको यह सब कहाँ से मिला?"*

सो उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया, पर यीशु ने उनसे कहा, *"किसी नबी का, अपने नगर और अपने घर को छोड़, और कहीं निरादर नहीं होता।"* सो उनके अविश्वास के

कारण उसने वहाँ अधिक सामर्थ्य के काम (आश्चर्य कर्म / चमत्कार) नहीं किए। *[Matthew 13:53-57]*

यूहन्ना की भ्रान्ति

उस समय गलील के शासक हेरोदेस ने जब यीशु के कार्यों की चर्चा सुनी तो वह घबरा गया, क्योंकि कुछ लोगों द्वारा कहा जा रहा था, *"यूहन्ना पुन: जी उठा है; उसमें वह सामर्थ्य है जिनसे यह चमत्कारों को कर सकता है।"* कुछ कह रहे थे, *"एलिय्याह प्रकट हुआ है।"* और कुछ लोग यह कहते थे कि *"पुराने बनीयों में से कोई जी उठा है।"* परन्तु हेरोदेस ने कहा, *"यूहन्ना को तो मैंने सिर कटवा दिया था, फिर यह कौन है, जिसके बारे में ऐसी बातें सुन रहा हूँ?"* सो हेरोदेस ने उसे देखने की इच्छा की।

हेरोदेस ने अपने सौतेले भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास (Herodias) के कहने पर यूहन्ना को पकड़कर बन्दीगृह में डाल दिया था, क्योंकि यूहन्ना हेरोदेस से प्रायः कहा करता था, *"इस (हेरोदियास) को साथ रखना तेरे लिए उचित (lawful) नहीं है।"* सो हेरोदेस यूहन्ना को मार डालना चाहता था, पर वह लोगों से डरता था, क्योंकि वे यूहन्ना को भविष्यद्वक्ता (prophet) मानते थे। पर जब हेरोदेस का जन्मदिन आया तो हेरोदियास की बेटी ने हेरोदेस और उसके मेहमानों के सामने नाच दिखाकर हेरोदेस को इतना खुश कर दिया कि उसने (हेरोदेस ने) उसे (हेरोदियास की बेटी को) वचन दे दिया कि, *"जो कुछ तू माँगेगी, मैं तुझे दूँगा।"* अपनी माँ के सिखावे में आकर उसने माँगा, *"बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना का सिर थाल में रख कर मुझे दो।"* यद्यपि यह माँग सुनकर राजा दुःखित हुआ, पर अपनी शपथ और अपने मेहमानों के कारण, उसने उसकी माँग पूरी करने की आज्ञा दे दी। उसने जेलखाने में अपने लोगों को भेजकर यूहन्ना का सिर कटवा दिया। यूहन्ना का सिर थाल में लाया गया और उसे लड़की को दे दिया गया, और वह उस सिर को अपनी माँ के पास ले गई। अंततः यूहन्ना के चेलों

ने आकर उसके शव को दफना दिया और फिर उन्होंने जाकर यीशु को यह सब बताया। *[Matthew 14:1-12; Mark 6:14-29; Luke 9:7-9]*

यीशु का पाँच हजार से अधिक को खाना खिलाना [स्थान: गलील की झील अर्थात् तिबिरियुस की झील के पार]

यहूदियों के फसह का पर्व निकट था। जब यीशु ने यूहन्ना की हत्या की चर्चा सुनी तो वह नाव में बैठकर वहाँ से किसी सुनसान स्थान पर एकान्त में चला गया, किन्तु जब लोगों को इसका पता चला तो वे नगर-नगर से पैदल ही उसके पीछे हो लिए। यीशु जब नाव से बाहर निकल कर किनारे पर आया तो उसने एक बड़ी भीड़ देखी। उसने उन पर तरस खाया, और उनके बीमारों को चंगा किया।

जब सांझ हुई तो उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा, *"यह तो सुनसान जगह है और बहुत देर हो चुकी है, सो लोगों को विदा किया जाए, ताकि गाँवों में जाकर वे अपने लिये भोजन मोल लें।"* किन्तु यीशु ने उनसे कहा, *"इन्हें (लोगों को) कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है! तुम ही इन्हें कुछ खाने को दो।"* उन्होंने उससे कहा, *"यहाँ हमारे पास पाँच रोटी (loaves) और दो मछलियों के सिवा और कुछ नहीं है।"* यीशु ने कहा, *"उनको यहाँ मेरे पास ले आओ।"* फिर उसने लोगों को घास पर बैठने को कहा, और उन पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हाथ में ले कर स्वर्ग की ओर देखा और भोजन के लिये परमेश्वर का धन्यवाद किया। फिर यीशु ने रोटियाँ तोड़-तोड़कर चेलों को देने लगा, और चेलें लोगों में बाँटने लगे। सभी ने छक कर खाया। इसके बाद बचे हुए टुकड़ों से शिष्यों ने बारह टोकरियाँ भरी! स्त्रियों और बालकों के अलावा, वहाँ खानेवाले कोई पाँच हजार पुरुष थे। इस चमत्कार को देखकर लोग कहने लगे, *"वह भविष्यद्वक्ता जो जगत में आनेवाला था निश्चय यही है।" [Matthew 14:13-21; Mark 6:34-44; Luke 9:10-17; John 6:1-14]*

यीशु का पानी पर चलना [स्थान : गलील की झील]

इसके तुरंत बाद यीशु ने अपने चेलों को नाव पर चढ़ाया, और जब तक वह लोगों को विदा करे, उनसे गलील की झील के पार कफरनहूम अपने से पहले ही जाने को कहा। लोगों को विदा कर यीशु अकेले में प्रार्थना करने को पहाड़ पर चला गया। सांझ होने पर वह वहाँ अकेला था। तब तक नाव किनारे से बहोत (तीन चार मील) दूर झील के बीच लहरों से थपेडे खाती डगमगा रही थी। सामने की हवा चल रही थी। रात के चौथे पहर यीशु झील पर चलता हुआ उनके पास आया। उसके चेले उसको झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए, और आपस में कहने लगे, *"यह तो कोई भूत है!"* और वे डर के मारे चीख उठे। यीशु ने तुरन्त उनसे बात करते हुए कहा, *"हिम्मत रखो, मैं हूँ; डरो मत।"* इस पर पतरस ने उत्तर देते हुए उससे कहा, *"प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।"* यीशु ने कहा, *"चला आ!"* तब पतरस नाव से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। पर उसने जब तेज हवा देखी तो वह घबरा गया, और वह जब डूबने लगा तो चिल्लाकर कहा, *"हे प्रभु, मुझे बचा।"* यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर पतरस को थाम लिया और उससे कहा, *"ओ अल्प विश्वासी, तूने सन्देह क्यों किया?"* जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई। नाव पर के लोगों ने यीशु की उपासना की और कहा, *"सचमुच, तू परमेश्वर का पुत्र है।" [Matthew 14:22-33; Mark 6:45-52; John 6:16-21]*

गन्नेसरत में रोगियों को ठीक किया

यीशु और उसके चेले झील पार करके गन्नेसरत (Gennesaret) के तट पर उतरे। जब वहाँ के लोगों ने यीशु को पहचान लिया तो उन्होंने उनके आने का समाचार आस-पास के सारे क्षेत्र में फैला दिया। लोग रोगियों को उसके पास लाने लगे और उसने सबको चंगा किया। *[Matthew 14:34-36; Mark 6:53-56]*

जीवन की रोटी मैं हूँ [स्थान : कफरनहूम]

फिर लोगों कि वह भीड़, जो झील के उस पार रह गयी थी, नावों पर सवार होकर यीशु को ढूँढ़ते हुए कफरनहूम पहुँची और उससे मिलकर पूछा, *"हे रब्बी, तू यहाँ कब आया?"* उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, *"मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि तुम मुझे इसलिए नहीं खोज रहे हो कि तुम ने चमत्कार देखे है, बल्कि इसलिए कि तुम रोटियाँ खाकर तृप्त हुए थे। नाशवान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये परिश्रम करो जो सदा उत्तम बना रहता है और अनन्त जीवन देता है, जिसे तुम्हें मनुष्य का पुत्र देगा, क्योंकि परम पिता परमेश्वर ने उसी पर अपनी मोहर लगायी है।"* फिर उन्होंने यीशु से पूछा, *"परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें?"* उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, ***"परमेश्वर जो चाहता है वह यह है कि तुम उस पर विश्वास करो जिसे उसने भेजा है।"*** तब उन्होंने उससे कहा, *"फिर तू कौन सा चमत्कार दिखाएगा जिसे देखकर हम तुझ पर विश्वास करें? हमारे पूर्वजों ने रेगिस्तान में मन्ना (manna) खाया था जैसा कि शास्त्रों में लिखा है, 'उसने उन्हें खाने के लिये स्वर्ग से रोटी दी'।"* इस पर यीशु ने उनसे कहा, *"मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि मूसा ने तुम्हें स्वर्ग से वह रोटी नहीं दी थी, परन्तु मेरा पिता तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी देता है। परमेश्वर की रोटी वही है जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।"* तब लोगों ने उससे कहा, *"हे स्वामी, अब वह रोटी हमें सदा दिया कर।"* यीशु ने उनसे कहा, ***"जीवन की रोटी मैं हूँ; जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा नहीं रहेगा और जो मुझ पर विश्वास करता है वह कभी प्यासा नहीं रहेगा।*** *मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि तुमने मुझे देख लिया है, फिर भी तुम मुझमें विश्वास नहीं करते। हर वह व्यक्ति जिसे परम पिता ने मुझे सौंपा है वह मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा। क्योंकि* ***मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूँ।*** *और मुझे भेजनेवाले की यही इच्छा यह है कि जिनको परमेश्वर ने मुझे सौंपा है उनमें से मैं किसी को भी न खोऊँ और अन्तिम दिन उन सब को फिर जिला दूँ। क्योंकि मेरे परम पिता की इच्छा यह है कि हर वह व्यक्ति जो पुत्र को देखता*

है और उस पर विश्वास करता है, वह अनन्त जीवन पाए और अन्तिम दिन मैं उसे फिर जिला उठाऊँ।" इस पर यहूदियोंने यीशु पर कुड़कुड़ाना शुरू कर दिया, क्योंकि वह कहता था, *"वह रोटी मैं हूँ जो स्वर्ग से उतरी है।"* और उन्होंने कहा, *"क्या यह यूसुफ का बेटा यीशु नहीं है? क्या हम उसके माता-पिता को नहीं जानते हैं? फिर यह कैसे कह सकता है कि यह स्वर्ग से उतरा है?"* उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, *"आपस में बड़बड़ाना बंद करो। मेरे पास तब तक कोई नहीं आ सकता जब तक मुझे भेजने वाला परम पिता उसे मेरे प्रति आकर्षित न करे। मैं अन्तिम दिन उसे पुनर्जीवित करूँगा। नबियों ने लिखा है, 'हर वह व्यक्ति जो परम पिता की सुनता है और उससे सीखता है, मेरे पास आता है।' (किन्तु वास्तव में परम पिता को किसी ने नहीं देखा है, सिवाय उसके जिसे उसने भेजा है; परम पिता परमेश्वर को केवल उसी ने देखा है।) मैं तुम्हें सच-सच कहता हूँ कि* ***जो कोई विश्वास करता है वह अनन्त जीवन पाता है। जीवन की रोटी मैं हूँ।*** *तुम्हारे पूर्वजों ने रेगिस्तान में मन्ना खाया था, फिर भी वे मर गए। जबकि स्वर्ग से उतरी इस रोटी को यदि कोई खाए तो वह कभी नहीं मरेगा। जीवन की वह रोटी जो स्वर्ग से उतरी, मैं ही हूँ। यदि कोई इस रोटी को खाता है तो वह सर्वदा जीवित रहेगा; और* ***वह रोटी मेरा माँस (शरीर) है।*** *इसी से संसार जीवित रहेगा।"* यह सुनकर यहूदी लोग यह कहते हुए आपस में बहस करने लगे, *"यह अपना शरीर हमें खाने के लिए कैसे दे सकता है?"* इस पर यीशु ने उनसे कहा, *"मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का माँस नहीं खाओगे और उसका लहू नहीं पिओगे तब तक तुम में जीवन नहीं होगा। जो मेरा माँस खाता रहेगा और मेरा लहू पीता रहेगा, अनन्त जीवन उसी का है, और अन्तिम दिन मैं उसे पुनः जीवित करूँगा। मेरा माँस सच्चा भोजन है और मेरा लहू ही वास्तव में सच्चा पेय है। जो मेरे माँस को खाता है और मेरा लहू पीता है, वह मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उसमें। जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा है और मैं परम पिता के कारण ही जीवित हूँ, वैसे ही हर कोई जो मुझे खाएगा वह मेरे ही कारण जीवित रहेगा। जो रोटी स्वर्ग से उतरी है वह यही है। यह वैसी नहीं जैसी*

हमारे पूर्वजों ने खायी थी। वे सब तो मर गए, पर जो कोई इस रोटी को खाएगा, वह सर्वदा जीवित रहेगा।" यीशु ने ये बातें कफरनहूम के एक आराधनालय में उपदेश देते हुए कहीं। *[John 6:25-59]*

अनन्त जीवन की शिक्षा

यीशु के बहुत से अनुयायियों ने इन बातों को सुनकर कहा, *"यह तो कठोर शिक्षा है; इसे कौन सुन सकता है?"* यीशु को अपने आप ही पता चल गया कि उसके अनुयायी उसकी बातों पर आपस में क्यों कुड़कुड़ाते हैं, इसलिये उसने उनसे पूछा, *"क्या तुम मेरी इन बातों से परेशान हो? यदि ऐसा है तो तुमको तब क्या होगा जब तुम्हें मनुष्य के पुत्र को वहाँ वापस लौटते देखना पडे जहाँ वह पहले था? आत्मा ही जीवनदायक है; शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो वचन मैंने तुमसे कहे वे आत्मा है, और वे ही जीवन देते हैं। परन्तु तुम में से कुछ ऐसे भी हैं जो विश्वास नहीं करते।"* (यीशु तो पहले से ही जानता था कि वे कौन है जो उस पर विश्वास नहीं करते है और वह कौन है जो उसे धोखा देगा।) यीशु ने आगे कहा, *"इसलिए मैंने तुमसे कहा था कि **मेरे पास तब तक कोई नहीं आ सकता जब तक परम पिता उसे मेरे पास आने की अनुमति नहीं दे देता।"*** इस पर यीशु के बहुत से अनुयायी उसे छोडकर वापस चले गए। तब यीशु ने अपने बारह शिष्यों से पूछा, *"क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?"* शमौन पतरस ने उत्तर दिया, *"हे प्रभु, तुझे छोडकर हम किसके पास जायेंगे? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं। अब हमने विश्वास कर लिया है और जान लिया है कि **तू ही वह पवित्रतम है जिसे परमेश्वर ने भेजा है।"*** यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, *"क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुना है? फिर भी तुममें से एक व्यक्ति शैतान है।"* यह उसने यहूदा इस्करियोती के बारे में कहा, क्योंकि वह यीशु के खिलाफ होकर उसे धोखा देने वाला था, यद्यपि वह भी उन बारह शिष्यों में से एक था। *[John 6:60-71]*

पुरखों की शिक्षा

तब यरूशलेम से कुछ फरीसी और धर्मशास्त्री यीशु के पास आये और उससे पूछा, *"तेरे चेले पुरखों की परम्पराओं का पालन क्यों नहीं करते? बिना हाथ धोए क्यों खाना खाते हैं?"* यीशु ने उनको उत्तर दिया, *"तुम भी अपनी परम्पराओं के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हो? क्योंकि परमेश्वर ने तो कहा था, 'तू अपने माता-पिता का आदर कर' और 'जो कोई अपने माता-पिता का अपमान करता है, उसे अवश्य मार दिया जाना चाहिये।' किन्तु तुम कहते हो कि जो कोई अपने पिता या माता से कहे, 'क्योंकि मैं अपना सब कुछ परमेश्वर को भेंट चढ़ा चुका हूँ, इसलिये तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता।' उसे अपने माता-पिता का आदर करने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार तुम भी अपनी परम्परा के कारण परमेश्वर का आदेश टालते हो। हे ढोंगियों, तुम्हारे बारे में यशायाह ने ठीक ही भविष्यद्वाणी की है: 'ये लोग होंठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनके मन मुझसे दूर रहते है।'"*

फिर उसने लोगों को अपने पास बुलाकर कहा, *"सुनो और समझो कि जो मुँह से अंदर जाता है वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो मुँह से निकलता है वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।"*

तब चेलों ने आकर यीशु से कहा, *"क्या तूझे पता है कि तेरी बात से फरीसियों को बहुत बुरा लगा है?"* यीशु ने उत्तर दिया, *"हर पौधा जिसे मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उसे उखाड़ दिया जाएगा। उनको (फरीसियों) जाने दो; वे अन्धो के अंधे नेता है। यदि एक अंधा दूसरे अंधे को मार्ग दिखाए, तो वे दोनों ही गड्ढे में गिर पड़ेंगे।"* *[Matthew 15:1-14; Mark 7:1-13]*

मनुष्य को अपवित्र करती चीजें

तब पतरस ने यीशु से कहा, *"हमें अपवित्रता सम्बन्धी दृष्टान्त का अर्थ समझा।"* यीशु बोला, *"क्या तुम अब भी नहीं समझते? क्या तुम नहीं समझते कि जो कुछ मुँह में जाता वह पेट में पड़ता है, और शौच से निकल जाता है? पर जो मनुष्य के मुँह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अपवित्र करता है। बुरे विचार, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा जैसी सभी बुराइयाँ मन ही से निकलती है। इसी से मनुष्य अशुद्ध होता हैं। बिना हाथ धोए भोजन करने से कोई अशुद्ध नहीं होता।" [Matthew 15:15-20; Mark 7:14-23]*

गैरयहूदी कनानी स्त्री का विश्वास

वहाँ से निकलकर यीशु सोर/सूर (Tyre) और सीदोन/सैदा (Sidon) की ओर चला गया। वहाँ की एक कनानी स्त्री आयी और चिल्लाकर कहने लगी, *"हे प्रभु! दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया कर। मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रहा है।"* पर यीशु ने उसे कोई उत्तर न दिया, सो उसके चेलों ने आकर उससे विनती करके कहा, *"इसे विदा कर, क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती हुई आ रही है।"* तब यीशु ने कहा, *"मुझे केवल इस्राएल के लोगों की खोई हुई भेड़ों के अलावा किसी और के लिये नहीं भेजा गया है।"* तब वह स्त्री ने यीशु को प्रणाम कर विनती की, *"हे प्रभु, मेरी सहायता कर।"* उत्तर में यीशु ने कहा, *"बच्चों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना उचित नहीं।"* इस पर वह बोली, *"सत्य है प्रभु, पर अपने स्वामी की मेज से गिरे हुए चूरे (crumbs) में से थोडा बहुत तो घर के कुत्ते भी खा लेते हैं।"* यह सुन यीशु ने उसको कहा, *"हे स्त्री, तेरा विश्वास बहुत बड़ा है; जैसा तू चाहती है, पूरा हो।"* और उसकी बेटी उसी समय चंगी हो गई। *[Matthew 15:21-28; Mark 7:24-30]*

बहरा गूँगा सुनने-बोलने लगा

फिर वह सूर के इलाके से वापस आ गया और दिकपुलिस यानी दस-नगर के रास्ते सिदोन होता हुआ झील गलील पहुंचा। वहाँ कुछ लोगों ने यीशु के पास एक बहरे को

जो हक्ला भी था, लाकर उससे विनती की कि वह अपना हाथ उस पर रखे। यीशु उसे भीड़ से दूर एक तरफ ले गया, और अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डाली और थूककर उसकी जीभ को छुआ। फिर स्वर्ग की ओर देखकर गहरी साँस भरते हुए और उससे कहा, *“इप्फत्तह!”* (अर्थात् *“खुल जा!”*) और उसके कान खुल गए और उसकी जीभ की गाँठ भी खुल गई, और वह साफ-साफ बोलने लगा। *[Mark 7:31-35]*

यीशु का बहुतों का अच्छा करना

एक यीशु एक पहाड़ पर चढ़कर बैठ गया। भीड़ पर भीड़ अपने साथ लूले-लँगड़ों, अंधों, अपाहिजों, बहरे-गूँगों, टुण्डों और दूसरे रोगियों को लेकर उसके पास आने लगी। वे ने उन्हें यीशु के चरणों में धरती पर रख देते थे और वह ने उन्हें चंगा कर देता था। इससे लोगों को, यह देखकर कि गूंगे बोलने और टुण्डे चंगे होने लगे है और लँगड़े चलने और अंधे देखने लगे हैं, अचम्भा हुआ, और वे इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति करने लगे। *[Matthew 15:29-31]*

चार हजार लोगों को भोजन

यीशु ने अपने चेलों को बुलाकर कहा, *“मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि वे तीन दिन से लगातार मेरे साथ हैं और उनके पास कुछ खाने को भी नहीं है। मैं उन्हें भूखा विदा करना नहीं चाहता, कहीं ऐसा न हो कि वे रास्ते में ही मुर्छित होकर गिर जाएँ।”* तब उसके चेलों कहा, *“हमें इस निर्जन स्थान में कहाँ से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करें?”* तब यीशु ने उनसे पूछा, *“तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?”* उन्होंने कहा, *“सात और कुछ छोटी मछलियाँ।”* यीशु ने लोगों को भूमि पर बैठ जाने को कहा और उन सात रोटियों और मछलियों को लेकर परमेश्वर का धन्यवाद किया और रोटियाँ तोड़कर अपने चेलों को देता गया, और चेले लोगों को देते गये। इस तरह लोग तब तक खाते रहे जब तक वे तृप्त न हो गए। फिर चेलों ने बचे

हुए टुकड़ों से सात टोकरियाँ भरी! स्त्रियों और बालकों के अलवा, खानेवाले चार हजार पुरुष थे। *[Matthew 15:32-39; Mark 8:1-10]*

तब भीड़ को विदा कर यीशु नाव में बैठकर मगदन (Magdala) क्षेत्र में आया।

यहूदी नेताओं की चाल

कुछ फरीसी और सदूकी यीशु के पास आये। वे उसे परखना चाहते थे, सो उन्होंने उससे कोई चमत्कार करने को कहा। यीशु ने दिया, *"सांझ को तुम कहते हो कि मौसम अच्छा रहेगा, क्योंकि आकाश लाल है। और भोर तुम को कहते हो कि आज आँधी आएगी क्योंकि आकाश लाल और धूमिल है। तुम आकाश के लक्षण देखकर भेद बता सकते हो, पर अपने समय के चिन्हों को नहीं पढ/समझ सकते! इस पीढी के दुष्ट और दुराचारी लोग कोई चिन्ह (चमत्कार) देखना चाहते है, पर नबी योना (Jonah) के चिन्ह के अलावा कोई और चिन्ह उन्हें नहीं दिखाया जाएगा।"* फिर वह उन्हें छोड़ कर चला गया। *[Matthew 16:1-4; Mark 8:11-13; Luke 12:54-56]*

यीशु की चेतावनी

यीशु के चेलें झील के उस पार जाते समय रोटी लेना भूल गए थे। इस पर यीशु ने उनसे कहा, *"देखो, फरीसियों और सदूकियों के ख़मीर (leaven) से सावधान रहना।"* वे आपस में विचार करने लगे, *"हो सकता है, उसने यह इसलिये कहा क्योंकि हम कोई रोटी साथ नहीं लाए है।"* यह जानकर यीशु ने उनसे कहा, *"हे अल्पविश्वासियों, तुम आपस में क्यों विचार करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं? क्या अब भी तुम नहीं समझे या याद करते कि पाँच हजार लोगों के लिए वे पाँच रोटियाँ और फिर कितनी टोकरियाँ भर कर तुमने उठाई थीं? तुम क्यों नहीं समझते कि मैंने तुमसे रोटियों के बारे में नहीं कहा? मैंने तो तुम्हें फरीसियों और सदूकियों के ख़मीर से सावधान रहने को कहा है।"* तब वे समझ गये कि उसने रोटी के ख़मीर से नहीं, पर फरीसियों और

सदूकियों की शिक्षाओं से सावधान रहने को कहा था। *[Matthew 15:5-12; Mark 8:14-21]*

अंधे को आँखें

फिर वे बैतसैदा (Bethsaida) चले आये। वहाँ कुछ लोग यीशु के पास एक अंधे को ले आए और उससे विनती की कि वह उसको छू दे। वह उस अंधे का हाथ पकड़कर उसे गाँव के बाहर ले गया और उसकी आँखों में थूककर उस पर हाथ रखे और उससे पूछा, *"तुझे कुछ दिखता है?"* उसने आँख उठाकर कहा, *"मुझे लोग दीख रहे हूँ। वे मुझे आसपास चलते पेडों जैसे हुए दिखाई दे रहे हैं।"* तब यीशु ने उसकी आँखों पर जैसे ही फिर से अपने हाथ रखे, उसने अपनी आँखें पूरी खोल दीं। वह चंगा हो गया था और सब कुछ साफ-साफ देखने लगा। *[Mark 8:22-25]*

यीशु ही मसीह है

जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी (Caesarea Philippi) के प्रदेश में आया तो उसने अपने चेलों से पूछा कि लोग उनके बारे में क्या सोचते है और उनको क्या मानते है। वे बोले, *"कुछ कहते है कि तू बपतिस्मा देनेवाला यूहन्ना हैं, कुछ कहते है कि तू एलिय्याह (Elias) है, और कुछ अन्य कहते है कि तू कोई पुराने नबियों में से कोई जी उठा है।"* तब यीशु ने उनसे पूछा, *"और तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?"* शमौन पतरस ने उत्तर दिया, ***"तू मसीह है, साक्षात परमेश्वर का पुत्र।"*** *(Thou art the Christ, the Son of the living God)* तब यीशु ने उसको कहा, *"हे शमौन, तू धन्य है, क्योंकि तुझे यह बात किसी मनुष्य ने नहीं बतायी, परन्तु स्वर्ग में स्थित मेरे परम पिता ने तुझ पर प्रगट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस (Peter) है, और इसी पत्थर पर मैं अपनी कलीसिया (church) बनाऊँगा। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दे रहा हूँ, ताकि जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बँधेगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।"* फिर यीशु ने अपने चेलों को चेतावनी

दी कि वे किसी को यह न बतायें कि वह मसीह है। *[Matthew 16:13-20; Mark 8:27-30; Luke 9:18-21]*

यीशु की अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी

उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, *"मुझे अवश्य यरूशलेम जाना चाहिए, ताकि मैं पुरनियों (elders) और प्रमुख याजकों (chief priests) और शास्त्रियों (scribes) के हाथ से बहुत दुःख उठाऊँ और मार डाला जाऊँ, और तीसरे दिन जी उठूँ।"* इस पर पतरस यीशु को एक तरफ ले जाकर झिडकने लगा, *"हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तेरे साथ ऐसा कभी न हो।"* फिर पतरस की तरफ मुडकर यीशु ने कहा, *"हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो जा! तू मेरे लिये एक अडचण है, क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।" [Matthew 16:21-23; Mark 8:31-33; Luke 9:22]*

यीशु के पीछे चलने का अर्थ

यीशु ने अपने चेलों से कहा, *"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता हे, तो वह अपने आप को भुलाकर अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले। जो कोई अपना प्राण बचाना चाहता है, उसे वह खोना होगा। जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वही उसे बचाएगा। यदि कोई मनुष्य अपने प्राण की हानि उठाकर सारा संसार भी पा ले तो उसे क्या लाभ होगा? अपने जीवन को फिर से पाने के लिए कोई भला क्या दे सकता है? मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों संग अपने पिता की महिमा में आएगा, और वह हर एक को उसके कर्मों के अनुसार प्रतिफल (reward) देगा।* ***मैं तुम से सच कहता हूँ कि यहाँ कुछ ऐसे खड़े है जो तब तब नहीं मरेंगे (मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे) जब तक वे मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लें (परमेश्वर के राज्य को न देख लें)।"*** *[Matthew 16:24-28; Mark 8:34-38; 9:1; Luke 9:23-27]*

यीशु का रूपान्तर (transfiguration)

छः दिन बाद यीशु पतरस, याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लेकर एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर प्रार्थना करने के लिये गया। जब वह प्रार्थना कर ही रहा था, तो उसके चेहरे का रूप बदल गया और उसका मुख सूर्य के समान चमकने लगा और उसके वस्त्र प्रकाश समान उजले हो गये। फिर अचानक मूसा (Moses) और एलिय्याह (Elias) उनके समने प्रकट हुए और यीशु से उसके मृत्यु की चर्चा करने लगे, जो यरूशलेम में होनेवाली थी। यह देखकर पतरस ने यीशु से कहा, *"हे प्रभु, यदि तेरी इच्छा हो तो मैं यहाँ तीन मण्डप (tabernacles) बना दूँ - एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।"*

पतरस अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकते बादल ने आकर उन्हें छा (ढक) लिया और बादल में से यह शब्द निकला, *"यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ: इसकी सुनो।"* जब चेलों ने यह सुना तो वे इतने सहम गये कि औंधे मुँह गिर गए। तब यीशु उनके पास आया और छूते हुए कहा, *"उठो, डरो मत।"* जब उन्होंने अपनी आँखें उठाई तो वहाँ केवल यीशु को ही पाया।

जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह आदेश दिया कि *"जो कुछ तुमने देखा है, तब तक किसी से न कहना जब तक मनुष्य के पुत्र को मरे हुओं में से पुनः जिला न दिया जाय।"* फिर उसके चेलों ने उससे पूछा, *"फिर धर्मशास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना निश्चित है?"* इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, *"मैं तुम से कहता हूँ कि कि एलिय्याह आ चुका है, पर लोगों ने उसे नहीं पहचाना और उसके साथ किया जैसा चाहा वैसा किया। इसी प्रकार से मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथ से दुःख उठाएगा।"* तब चेलें समझे कि वह बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना के बारे में कह रहा था। *[Matthew 17:1-13; Mark 9:2-13; Luke 9:28-36]*

रोगी लड़के को अच्छा करना

जब वे वापस भीड़ के पास पहुँचे तो एक मनुष्य उसके पास आया और घुटने टेककर कहने लगा, *"हे प्रभु, मेरे पुत्र पर कृपादृष्टि कर! एक दुष्टात्मा उसे पकड़ती है और वह एकाएक चिल्ला उठता है। दुष्टात्मा उसे ऐसा मरोड़ती है कि वह मुँह में फेन भर लाता है और उसे कुचलकर कठिनाई से छोड़ती है। (उसे मिर्गी आती है।) वह बहुत तड़पता है और अक्सर आग या पानी में गिरता पड़ता रहता है। मैं उसे तेरे चेलों के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके।"* यह सुनकर यीशु ने कहा, *"हे अविश्वासी लोगों, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।"* जब वह आ ही रहा था कि दुष्टात्मा ने उसे पटककर मरोड़ा, परन्तु यीशु ने उस अशुद्ध आत्मा को डाँटा, *"हे गूंगी और बहरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ कि तू उसमें से बाहर निकल आ, और उसमें फिर कभी प्रवेश न करना।"* और वह उसमें से बाहर निकल आयी। वह बालक उसी समय अच्छा हो गया। बाद में चेलों ने एकान्त में यीशु के पास जाकर पूछा, *"हम उस दुष्टात्मा को क्यों नहीं निकाल सके?"* यीशु ने उन्हें बताया, *"आपके विश्वास की कमी के कारण। मैं तुम से सच कहता हूँ कि यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो तो तुम इस पहाड़ से कह सकोगे, 'यहाँ से सरककर वहाँ चला जा' और वह चला जाएगा। कोई बात तुम्हारे लिये असम्भव नहीं होगी।"* *[Matthew 17:14-20; Mar; 9:14-29; Luke 9:37-43]*

यीशु की अपनी मृत्यु की पुनः भविष्यवाणी

जब वे गलील में थे तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, *"मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के द्वारा ही पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे, किन्तु मरने के तीन दिन बाद वह पुनः जी उठेगा।"* यह सुनकर शिष्य बहुत उदास हुए। *[Matthew 17:22-23; Mark 9:30-32; Luke 9:44]*

मन्दिर-कर का भुगतान

जब यीशु और उसके शिष्य कफरनहूम में आये तो मन्दिर-कर वसूलने वालों ने पतरस के पास आकर पूछा, *"क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर-कर नहीं देता?"* पतरस ने कहा, *"हाँ, देता है।"* जब वह घर में आया तो यीशु ने उसके पूछने से पहले ही उससे कहा, *"हे शमौन, तेरा क्या विचार है? पृथ्वी के राजा चुंगी या कर किन से लेते हैं? अपने पुत्रों से या परायों से?"* पतरस ने उत्तर दिया, *"परायों से।"* तब यीशु ने उससे कहा, *"यानी उसके अपने बच्चों को छूट रहती है। फिर भी हम उन्हें नाराज करना नहीं चाहते, इसलिये तू झील के किनारे जाकर अपना काँटा फेंक और जो मछली पहले पकड में आये उसका मुँह खोलने पर एक सिक्का मिलेगा। उसे लेकर मेरे और अपने लिए उन्हें दे देना।" [Matthew 17:24-27]*

स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा कौन

फिर यीशु ने घर पहुँच कर अपने शिष्यों से पूछा, *"रास्ते में तुम किस बात पर विवाद कर रहे थे?"* पर वे चुप रहे क्योंकि, मार्ग में उन्होंने आपस में यह वाद-विवाद किया था कि हम में से बड़ा कौन है? तब उसने बैठकर बारहों को बुलाया और उनसे कहा, *"यदि कोई सबसे बड़ा बनना चाहता है तो उसे निश्चय ही सबसे छोटा हो कर सब का सेवक बनना चाहिए।"* तब यीशु ने एक बालक को पास बुलाकर उसको गोद में लेकर कहा, *"मैं तुम से सच कहता हूँ कि यदि तुम बदलोगे नहीं और बालकों के समान नहीं बन जाओगे, तब तक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाओगे। जो कोई अपने आप को इस बालक के समान नम्र करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा होगा। और जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालक को स्वीकार करता है वह मुझे स्वीकार करता है। जो कोई मुझे स्वीकार करता है, वह मेरे भेजनेवाले को स्वीकार करता है। किन्तु जो मुझमें विश्वास करने वाले मेरे किसी ऐसे नम्र अनुयायी के रास्ते की बाधा बनता है, अच्छा हो कि उसके गले में चक्की का पाट लटका कर उसे गहरे समुद्र में डुबो दिया जाये। बाधाएँ तो अवश्य आयेंगी, किन्तु खेद तो मुझे उस पर है जिसके द्वारा*

बाधाएँ आती है। यदि तेरा हाथ या तेरा पाँव तेरे लिए बाधा बने तो उसे काटकर फेंक दे, क्योंकि स्वर्ग में टुण्डा या लँगड़ा होकर अनन्त जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये अधिक अच्छा है, बजाय इसके कि दोनों हाथ और दोनों परों समेत तूझे नरक की अनन्त आग में डाल दिया जाए। यदि तेरी आँख तेरे लिये बाधा बने तो उसे बाहर निकाल कर फेंक दे, क्योंकि स्वर्ग में काना होकर अनन्त जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये अधिक अच्छा है, बजाय इसके कि दोनों आँख समेत तूझे नरक की अनन्त आग में डाल दिया जाए।" [Matthew 18:1-9; Mark 9:33-37; 45-47; Luke 9:46-48]

खोई भेड़ की दृष्टान्त-कथा

"यदि किसी के पास सौ भेड़ें हों और उनमें से एक भटक जाए तो क्या वह दूसरी निन्यानवे भेड़ों को पहाडी पर ही छोड़कर उस एक भटकी हुई भेड़ को खोजने नहीं जाएगा? और जब उसे वह मिल जाए, तो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह उन निन्यानवे की बजाय इसे पाकर अधिक प्रसन्न होगा। इसी तरह स्वर्ग में स्थित तुम्हारा पिता भी नहीं चाहता कि मेरे इन अबोध अनुयायियों में से कोई एक भी भटक जाये।" [Matthew 18:10-14; Luke 15:3-7]

जब कोई तेरा बुरा करे

"यदि तेरा भाई तेरे साथ कोई बुरा व्यवहार करे, तो उसके पास जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुन ले तो तूने अपने भाई को फिर जीत लिया। पर यदि वह तेरी न सुने तो एक दो जन को अपने साथ ले जा ताकि हर एक बात की दो तीन गवाही हो सकें। यदि वह उनकी भी न माने तो कलीसिया (church) को बता दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने तो फिर तू उस से ऐसा व्यवहार कर जैसे वह विधर्मी (heathen) हो या चुंगी लेनेवाला हो।" [Matthew 18:15-17]

"मैं तुम्हें सच कहता हूँ, जो कुछ तुम धरती पर बाँधोगे, वह स्वर्ग में प्रभु द्वारा बाँधा जायेगा और जो कुछ तुम धरती पर छोडोगे स्वर्ग में प्रभु द्वारा छोड दिया जायेगा। फिर मैं तुम से यह भी कहता हूँ कि इस धरती पर यदि तुम में से कोई दो जन सहमत / एक मन से स्वर्ग में स्थित मेरे पिता से कुछ माँगोगे, तो वह तुम्हारे लिए उसे पूरा करेगा। क्योंकि जहाँ मेरे नाम पर दो या तीन लोग मेरे अनुयायी के रूप में इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।" [Matthew 18:18-20]

निर्दयी दास

पतरस यीशु के पास आकर बोला, *"हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ? क्या सात बार तक?"* यीशु ने कहा, *"न केवल सात बार, वरन् तुझे उसे सतत्तर बार तक क्षमा करते जाना चाहिए।*

"स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जिसने अपने दासों से हिसाब चुकता करने की सोची थी। जब वह लेखा लेने लगा तो उसके सामने एक ऐसे जन को लाया गया जो दस हजार तोड़े (talents) का कर्जदार था, पर उसके पास कर्ज चुकाने का कोई साधन नहीं था। उसके स्वामी ने आज्ञा दी कि उस दास को, उसकी पत्नी और बाल-बच्चे और जो कुछ उसका माल असबाब था, सब समेत बेच कर कर्ज चुका दिया जाए। तब वह दास उसके पैरों में गिर कर कहने लगा, 'हे स्वामी, धीरज धरो, मैं सब कुछ भर दूँगा।' इस पर स्वामी ने तरस खाकर कर्ज माफ कर उस दास को छोड़ दिया। परन्तु जब वह दास वहाँ से जा रहा था, तो उसे उसका एक साथी दास मिला जिसे उसे कुछ रुपये देने थे। उसने उसका गिरहबान पकड़ लिया और उसका गला घोंटते हुए कहा, 'जो तुझे मेरा देना है, वह भर दे।' इस पर उसका साथी दास उसके पैरों में गिरकर उससे विनती करने लगा, 'धीरज धर, मैं सब भर दूँगा', पर वह न माना। इतना ही नहीं, उसने तब तक के लिये, जब तक वह उसका कर्ज न चुका दे, बन्दीगृह में डाल दिया। उसके दूसरे साथी दास इस सारी घटना को देखकर बहुत दुखी हुए, और जाकर अपने

स्वामी को पूरा हाल बता दिया। तब उसके स्वामी ने उसे बुलाकर कहा, 'हे दुष्ट दास, मैंने तेरा वह पूरा कर्ज माफ कर दिया क्योंकि तूने मुझसे दया की भीख माँगी थी। जैसे मैंने तुझ पर दया की वैसे ही क्या तुझे भी अपने साथी दास पर दया नहीं दिखानी चाहिए थी?' सो उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे तब तक दण्ड भुगतने के लिए सौंप दिया जब तक समूचा कर्जा चुकता न हो जाये। इसी प्रकार जब तज तुम अपने भाई-बंदों को मन से क्षमा न कर दो, स्वर्ग में स्थित मेरा पिता तुम से भी वैसा ही व्यवहार करेगा।" [Matthew 18:21-35]

तलाक

ये बातें कहने के बाद यीशु गलील से चला गया और यरदन के **पार यहूदिया के प्रदेश में आया।** एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, जिसे उसने चंगा किया। तब कुछ फरीसी उसकी परीक्षा करने के लिये उसके पास आकर पूछने लगे, *"क्या किसी भी कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है?"* उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, *"क्या तुमने शास्त्र में नहीं पढ़ा है कि जगत को रचने वाले ने आरम्भ में, 'उन्हें एक स्त्री और एक पुरुष के रूप में रचा था?' और कहा था, 'इसी कारण अपने माता पिता से अलग होकर पुरुष अपनी पत्नी के साथ दो होते हुए भी एक तन होकर रहेगा?' अतः वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हो जाते हैं। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे किसी भी मनुष्य को अलग नहीं करना चाहिये।" फिर उन्होंने यीशु से पूछा, "फिर मूसा ने यह क्यों निर्धारित किया कि कोई पुरुष अपनी पत्नी को तलाक/त्यागपत्र देकर उसे छोड़ सकता है?"* यीशु ने उनसे कहा, *"मूसा ने यह विधान तुम्हारे मन की कठोरता के कारण दिया था, परन्तु आरम्भ में ऐसा नहीं था। मैं तुम से कहता हूँ कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को त्यागता है और किसी दूसरी से विवाह करता तो वह व्यभिचार करता है, और जो उस छोड़ी हुई स्त्री से विवाह करता है वह भी व्यभिचार करता है।"* इस पर चेलों ने उससे कहा, *"यदि एक पुरुष और एक स्त्री*

के बीच ऐसी स्थिति है तो किसी को विवाह ही नहीं करना चाहिए।" यीशु ने उनसे कहा, *"हर कोई तो इस उपदेश को ग्रहण नहीं कर सकता; इसे केवल वे ही ग्रहण कर सकते है जिनको इसकी क्षमता प्रदान की गयी है। कुछ नपुंसक (eunuchs) ऐसे हैं जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे है, और कुछ नपुंसक ऐसे हैं जिन्हें लोगों ने नपुंसक बनाया है, और कुछ ऐसे हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के लिये अपने आप को नपुंसक बनाया है। जो इस उपदेश को ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे।" [Matthew 19:1-12; Mark 10:1-12; Luke 16:18]*

झोपड़ियों का पर्व (feast of tabernacles)

इसके बाद यीशु गलील में फिरता रहा। वह यहूदिया में नहीं जाना चाहता था, क्योंकि यहूदी उसे मार डालना चाहते थे। यहूदियों का *'झोपड़ियों का पर्व'* निकट था, यीशु के भाइयों ने उससे कहा, *"यहाँ से कूच करके तुम्हें यहूदिया चले जाना चाहिए, ताकि तुम्हारे अनुयायी तुम्हारे कामों को देख सकें। कोई भी व्यक्ति जो लोगों में प्रसिद्ध होना चाहता है, वह अपने काम छिपकर नहीं करता। यदि तू चमत्कार करता है तो अपने आप को जगत के समने प्रगट कर।"* (यीशु के भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे।) तब यीशु ने उनसे कहा, *"मेरे लिए अभी उचित समय नहीं आया है; परन्तु तुम्हारे लिये हर समय ठीक है। यह जगत तुमसे घृणा नहीं कर सकता, पर वह मुझसे घृणा करता है, क्योंकि मैं यह गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं। तुम लोग पर्व में जाओ; मैं अभी नहीं जा रहा, क्योंकि मेरे लिए अभी ठीक समय नहीं आया है।"* यह कहकर वह गलील में ही रुक गया। *[John 7:1-9]*

(*'झोपड़ियों का पर्व'* हर साल हफ्ते भर मनाया जाता था, जब यहूदी लोग झोपड़ियों/तम्बुओं में रहकर उन दिनों को याद करते थे जब यहूदी मान्यता के अनुसार

मूसा के समय में उनके पूर्वज मिस्र में गुलामी से मुक्ति पाकर चालीस साल तक मरुभूमि में भटकते रहे थे।)

एक सामरी गाँव में

जब उसे ऊपर स्वर्ग में ले जाने का समय आया, तो उसने यरूशलेम जाने का विचार दृढ़ कर लिया किया। पर पहले उसने अपने आगे दूत भेजे। वे चल पडे और उसके लिये तैयारी करने को एक सामरी गाँव में गए। परन्तु सामरियों ने वहाँ उसका स्वागत सत्कार नहीं किया। यह देखकर चेले याकूब और यूहन्ना ने कहा, *''प्रभु, क्या तू चाहता है कि हम आदेश दें कि आकाश से आग बरसे और उन्हें भस्म कर दे?''* इस पर उसने उन्हें डाँटा [और कहा, *''क्या तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा से सम्बन्ध रखते हो। मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणों को नाश करने नहीं, वरन् उनका उद्धार करने आया है।''*] फिर वे किसी दूसरे गाँव में चले गए। *[Luke 9:51-56]*

यीशु भी गुप्त रूप से यरूशलेम में

जब उसके भाई पर्व में चले गए तो यीशु भी गुप्त रूप से यरूशलेम गया। वहाँ यहूदी नेता पर्व में उसे यह कहकर खोज रहे थे, *''वह कहाँ है?''* लोगों में यीशु के बारे में चुपके-चुपके तरह-तरह की बातें हो रही थी। कुछ लोग कह रहे थे, *''वह भला मनुष्य है।''* तो कुछ और लोग कहते थे, *''नहीं, वह लोगों को भरमाता है।''* पर कोई भी उसके बारे में खुलकर नहीं बोलता था, क्योंकि वे लोग यहूदी नेताओं से डरते थे। *[John 7:10-13]*

यरूशलेम में यीशु का उपदेश

जब वह पर्व लगभग आधा बीत चुका था और मन्दिर में जाकर यीशु ने उपदेश देना शुरू किया, तब यहूदी नेता अचरज सके साथ कहने लगे, *''इसे बिन पढ़े विद्या कैसे प्राप्त हो गई?''* उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे कहा, *''जो उपदेश मैं देता हूँ वह मेरा*

नहीं है, परन्तु मुझे भेजनेवाले का है। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा पर चलना चाहे तो वह यह जान जाएगा कि यह उपदेश परमेश्वर की ओर से है या मैं अपनी ओर से दे रहा हूँ। जो अपनी ओर से कुछ कहता है वह अपने लिये ही यश कमाना चाहता है, किन्तु जो अपने भेजनेवाले को यश देना चाहता है वही व्यक्ति सच्चा है और उसमें कोई अधर्म नहीं। क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था (the law) नहीं दी है? पर तुममें से कोई भी उसका पालन नहीं करता। तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो?" लोगों ने उत्तर दिया, *"तुझ में दुष्टात्मा है! कौन तुझे मार डालना चाहता है?"* यीशु ने उनको कहा, "मैंने एक चमत्कार किया और तुम सब चकित हो गये। यदि सब्त के दिन किसी का खतना इसलिये किया जाता है कि मूसा का विधान टूट न जाए, तो तुम मुझ पर क्यों इसलिए क्रोध करते हो कि मैंने सब्त के दिन एक व्यक्ति को पूरी तरह से चंगा किया? मुँह देखकर न्याय मत करो, बल्कि ठीक-ठीक न्याय करो।" *[John 7:14-24]*

क्या यीशु ही मसीह है?

फिर कितने ही यरूशलेमवासी कहने लगे, *"क्या यही वह व्यक्ति नहीं है जिसे वे लोग मार डालना चाहते है? मगर देखो, यह तो लोगों के बीच खुल्लमखुल्ला बोल रहा है और वे लोग उससे कुछ भी नहीं कह रहे है। क्या सरदारों (rulers) ने भी सच-सच मान लिया है कि यही मसीह है? खैर, हम तो जानते हैं कि यह व्यक्ति कहाँ से आया है, परन्तु मसीह जब आएगा तो कोई नहीं जान पायेगा कि वह कहाँ से आया है।"* तब यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए ऊँचे स्वर में कहा, *"तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ का हूँ, पर मैं अपनी ओर से नहीं आया हूँ; जिसने मुझे भेजा है वह सच्चा है। तुम उसे नहीं जानते, पर मैं उसे जानता हूँ; क्योंकि मैं उसकी ओर से आया हूँ और उसी ने मुझे भेजा है।"* इस पर उन्होंने यीशु को पकड़ना चाहा, पर कोई भी उस पर हाथ न डाल सका, क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था। भीड़

में से बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया और कहने लगे, *"मसीह जब आएगा तो क्या वह इससे अधिक चमत्कार दिखाएगा जो इसने दिखाए है?" [John 7:25-31]*

यीशु को बंदी बनाने का यत्न

जब फरीसियों ने लोगों को यीशु के बारे में चुपके-चुपके ये बातें करते सुना तो प्रमुख याजकों और फरीसियों ने उसे पकड़ने के लिए सिपाही भेजे। इस पर यीशु ने कहा, *"मैं तुम लोगों के साथ कुछ समय और रहूँगा और फिर उसके पास वापस चला जाऊँगा जिसने मुझे भेजा है। फिर तुम मुझे ढूँढ़ोगे, पर मुझे पाओगे नहीं, और जहाँ मैं होऊँगा वहाँ तुम आ नहीं सकते।"* यह सुनकर यहूदी नेता आपस में कहने लगे, *"यह कहाँ जाने वाला जहाँ हम इसे ढूँढ़ नहीं पाएँगे? क्या वह उन यहूदियों के पास जाएगा जो यूनान में तितर-बितर होकर रहते हैं? क्या यह यूनानियों को भी उपदेश देगा?" [John 7:32-35]*

यदि कोई प्यासा है तो वह मेरे पास आए

पर्व के अन्तिम और महत्वपूर्ण दिन यीशु खड़ा हुआ और उसने ऊँचे स्वर में कहा, *"यदि कोई प्यासा है तो वह मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।"* यह सुनकर भीड़ में से कुछ लोग कहने लगे, *"सचमुच यही वह नबी है।"* कुछ और लोग यह कहने लगे, *"यही मसीह है,"* परन्तु कुछ लोगों का कहना था कि मसीह गलील से नहीं आएगा, क्योंकि शास्त्र में लिखा है कि मसीह दाऊद के वंश से होगा और बैतलहम से आएगा, जहाँ दाऊद रहता था। इस तरह लोगों में फूट पड़ गई। उनमें से कुछ उसे पकड़ना चाहते थे, परन्तु किसी ने भी उस पर हाथ नहीं डाला। जब सिपाही प्रमुख याजकों और फरीसियों के पास लौट आए तब उन्होंने उनसे पूछा, *"तुम उसे पकड़कर क्यों नहीं लाए?"* सिपाहियों ने उत्तर दिया, *"किसी भी व्यक्ति ने कभी ऐसी बातें नहीं की जैसी वह कहता है।"* यह सुनकर फरीसियों ने उनसे कहा, *"क्या तुम भी भरमाए गए हो?"* इस पर

नीकुदेमुस ने (जो स्वयं एक फरीसी था), उनसे कहा, *"क्या हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति को, उसका पक्ष सुनने और जानने से पहले ही, दोषी ठहराती है?"* उत्तर में उन्होंने उससे कहा, *"क्या तू भी गलील का है? गलील से कोई नबी कभी प्रगट नहीं होगा।"* फिर वे सब वहाँ से अपने-अपने घर चले गए और यीशु जैतून पर्वत पर चला गया। *[John 7:37-53]*

दुराचारी स्त्री को क्षमा

अगले दिन सुबह में यीशु यरूशलेम के मन्दिर में आया और वहाँ बैठकर उपस्थित लोगों को उपदेश देने लगा। ठीक उसी समय कुछ शास्त्री और फरीसी लोग व्यभिचार के अपराध में पकड़ी गई एक स्त्री को वहाँ लाये और उसे लोगों के बीच में खड़ा कर यीशु से पूछा, *"हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते पकड़ी गई है। अपने विधान में मुसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थर मारने चाहियें; अतः तेरा इस स्त्री के बारे में क्या कहना है?"* (यीशु को फँसाने के लिये वे उसे यह पूछ रहे थे, ताकि उन्हें कोई ऐसा बहाना मिल जाए जिससे उस पर दोष लगाया जा सके।) परन्तु यीशु झुककर उँगली से भूमि पर कुछ लिखने लगा। जब वे उससे लगातार पूछते रहे तो उसने खडा होकर कहा, *"तुम में से जो निष्पाप हो वही सबसे पहले इस स्त्री को पत्थर मारे।"* यह कहकर वह फिर झुककर भूमि पर उँगली से कुछ लिखने लगा। जब लोगों ने यह सुना तो बड़ों से लेकर छोटों तक सब एक-एक करके वहाँ से खिसकने लगे और इस तरह वहाँ अकेला यीशु ही रह गया और वह स्त्री अब भी वहाँ खड़ी थी। तब यीशु ने खडे होकर उस स्त्री से पूछा, *"हे स्त्री, वे सब कहाँ गए? क्या किसी ने तुझे दण्ड नहीं दिया?"* उस स्त्री ने कहा, *"हे प्रभु, किसी ने नहीं।"* फिर यीशु ने उससे कहा, *"मैं भी तुम्हें दण्ड नहीं दूँगा। जा और फिर कभी पाप मत करना।" [John 8:1-11. प्राचीन यूनानी प्रतियों में यह प्रसंग नहीं है।]*

जगत की ज्योति

फिर वहाँ उपस्थित लोगों से यीशु ने कहा, *"जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे चलेगा, वह कभी अंधकार में नहीं रहेगा, बल्कि वह जीवन की ज्योति पाएगा।"* इस पर फरीसियों ने उससे कहा; *"तू अपनी साक्षी अपने आप दे रहा है, इसलिये तेरी साक्षी उचित नहीं है।* उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, *"यदि मैं अपनी साक्षी स्वयं अपनी तरफ से दे रहा हूँ तो भी मेरी साक्षी उचित है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। किन्तु तुम लोग नहीं जानते कि मैं कहाँ से आता हूँ या कहाँ जा रहा हूँ। तुम लोग शरीर के अनुसार न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता। और यदि मैं न्याय करूँ भी, तो मेरा न्याय सच्चा होगा, क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ, परन्तु मैं परम पिता के साथ हूँ जिसने मुझे भेजा है। तुम्हारे विधान भी लिखा है कि दो व्यक्तियों की साक्षी ठीक होती है। मैं अपनी साक्षी स्वयं देता हूँ और दूसरा पिता भी, जिसने मुझे भेजा है, मेरी साक्षी देता है।"* इस पर उन्होंने यीशु से पूछा, *"तेरा पिता कहाँ है?"* यीशु ने उत्तर दिया, *"न तो तुम मुझे जानते हो, और न मेरे पिता को। यदि तुम मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जान लेते।"* ये बातें यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए कहीं, फिर भी किसी ने उसे बंदी नहीं बनाया क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था। *[John 8:12-20]*

मैं वही हूँ

यीशु ने उनसे एक बार फिर कहा, *"मैं चला जाऊँगा और तुम मुझे ढूँढ़ोगे, पर अपने ही पापों में मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।"* इस पर यहूदी नेता आपस में कहने लगे, *"क्या वह अपने आप को मार डालेगा? क्योंकि उसने कहा है, 'जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते'?"* इस पर यीशु ने उनसे कहा, *"तुम नीचे के हो और मैं ऊपर से आया हूँ; तुम इस संसार के हो और मैं संसार से नहीं हूँ, इसलिए मैंने तुम से कहा था कि तुम अपने पापों में मरोगे। यदि तुम विश्वास नहीं करोगे कि मैं वही हूँ तो अपने पापों में मरोगे।"* फिर उन्होंने यीशु से पूछा, *"तू कौन है?"* यीशु

ने उन्हें उत्तर दिया, *"मैं वही हूँ जैसा कि प्रारम्भ से मैं तुमसे कहता आ रहा हूँ। तुम्हारे बारे में मुझे बहुत कुछ कहना है और मुझे तुम्हारा न्याय करना है, पर मुझे भेजनेवाला सच्चा है और मैं जगत से वही कहता हूँ जो मैंने उससे सुना है।" मैं अपनी ओर से कुछ नहीं करता; मैं वही कह रहा हूँ जो मुझे मेरे पिता परमेश्वर ने सिखाया है। और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं सदा वही काम करता हूँ जिससे वह प्रसन्न होता है।"* यीशु जब ये बातें कह ही रहा था, तभी बहुत से लोग उसके विश्वासी हो गये। *[John 8:21-30]*

और सत्य तुम्हें मुक्त करेगा

फिर यीशु उन यहूदियों से कहने लगा जो उसमें विश्वास करते थे, *"यदि तुम मेरे वचन पर चलोगे तो तुम वास्तव में मेरे अनुयायी बनोगे। और* ***तुम सत्य को जान लोगे, और सत्य तुम्हें मुक्त करेगा।"*** इस पर उन्होंने यीशु से प्रश्न किया, *"हम तो अब्राहम के वंशज हैं और हम कभी किसी के दास नहीं हुए है, फिर तुम कैसे कहते हो कि है कि तुम मुक्त हो जाओगे?"* यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, *"मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है। और दास सदा घर में नहीं रह सकता; केवल पुत्र ही सदा साथ रहता है। अतः यदि पुत्र तुम्हें मुक्त करेगा तभी तुम वास्तव में मुक्त होगे। मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम के वंशज हो, पर तुम मुझे मार डालना चाहते हो क्योंकि मेरे वचनों के लिये तुम्हारे हृदय में कोई जगह नहीं है। मैं वही कहता हूँ जो मैंनें मेरे पिता के यहाँ देखा है, और तुम वही करते हो जो तुमने तुम्हारे पिता के यहाँ देखा है।"* इस पर उन्होंने यीशु से कहा, *"हमारा पिता तो अब्राहम है।"* यीशु ने कहा, *"यदि तुम अब्राहम की सन्तान होते तो तुम अब्राहम के काम करते। पर तुम तो मुझे मार डालना चाहते हो, एक ऐसे व्यक्ति को जिसने तुम्हें वह सत्य कहा जो उसने परमेश्वर से सुना है। यह तो अब्राहम ने नहीं किया था। तुम अपने पिता काम करते हो।"* फिर उन्होंने यीशु से कहा, ***"हम व्यभिचार से नहीं जन्मे; हमारा एक***

पिता है, अर्थात् परमेश्वर।" इस पर यीशु ने उनसे कहा, *"यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझे प्यार करते, क्योंकि मैं परमेश्वर में से हूँ; मैं अपने आप से नहीं आया हूँ, बल्कि उसी ने मुझे भेजा है। तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? क्योंकि तुम मेरे वचन सुन नहीं सकते।* ***तुम अपने पिता शैतान की संतान हो*** *और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से ही हत्यारा था और सत्य पर कभी स्थिर नहीं रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है तो अपने स्वभाव से ही बोलता है, क्योंकि वह झूठा है, वरन् झूठ का पिता है। पर मैं तुम से सत्य कहता हूँ, इसलिए तुम मेरा विश्वास नहीं करते। तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? और मैं सत्य कहता हूँ तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते? जो परमेश्वर का होता है वह परमेश्वर के वचनों को सुनता है, और तुम इसलिए नहीं सुनते क्योंकि तुम परमेश्वर की ओर से नहीं हो।"* यह सुनकर यहूदियों ने यीशु से कहा, *"क्या हम ठीक नहीं कहते कि तू सामरी है और तुझ में दुष्टात्मा है?"* यीशु ने उत्तर दिया, *"मुझ में कोई दुष्टात्मा नहीं है, बल्कि मैं तो अपने परम पिता का आदर करता हूँ और तुम मेरा निरादर करते हो। मैं अपनी महिमा नहीं चाहता, पर एक ऐसा है जो (मेरी महिमा) चाहता है और न्याय भी करता है। मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति मेरे उपदेशोंका पालन करेगा, तो वह मृत्यु को कभी नहीं देखेगा।"* इस पर यहूदी नेताओं ने यीशु से कहा, *"अब हम यह जान गये है कि तुझ में अवश्य कोई दुष्टात्मा है। अब्राहम मर गया और नबी भी मर गए हैं और तू कहता है, 'यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा तो वह कभी मृत्यु का स्वाद नहीं चखेगा!' क्या तू हमारे पिता अब्राहम से भी बड़ा है, जो मर गया है? तू अपने आप को क्या समझता है?"* यीशु ने उत्तर दिया, *"यदि मैं अपनी महिमा करूँ तो वह महिमा मेरी कुछ भी नहीं है, पर मेरी महिमा करनेवाला मेरा पिता है, जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह तुम्हारा परमेश्वर है। तुमने तो उसे कभी नहीं जाना, पर मैं उसे जानता हूँ, और यदि मैं यह कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं भी तुम लोगों की तरह झूठा ठहरूँगा, पर मैं उसे जानता हूँ और उसके वचन पर चलता हूँ। तुम्हारा*

पूर्वज अब्राहम भी मेरे आने के दिन को देखकर प्रसन्न हुआ था।" फिर यहूदी लोगों ने यीशु से कहा, *"तू अभी पचास वर्ष का भी नहीं है, फिर भी तूने अब्राहम को देखा है?"* यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, *"मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि मैं अब्राहम से भी पहले से हूँ।"* यीशु के ये शब्द सुनकर उन्होंने उसे मारने के लिये पत्थर उठा लिये, किन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया। *[John 8:31-59]*

जन्म से अंधे को दृष्टि-दान

वहाँ से जाते हुए यीशु ने एक व्यक्ति को देखा, जो जन्म से अंधा था। तब उसके अनुयायियों ने उससे पूछा, *"हे रब्बी, यह व्यक्ति अपने पापों से अंधा जन्मा है या उपने माता पिता के पापों से?"* यीशु ने उत्तर दिया, *"न तो इसने पाप किए था और न इसके माता पिता ने, बल्कि यह इसलिए अंधा जन्मा है ताकि इसे अच्छा करके परमेश्वर की शक्ति दिखायी जा सके। मुझे भेजने वाले के कार्यों को हमें दिन रहते ही कर लेने चाहिये, क्योंकि वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकेगा। जब तक मैं जगत में हूँ तब तक जगत की ज्योति मैं ही हूँ।"* यह कहकर यीशु ने धरती पर थूका और उस थूक से थोडी मिट्टी सानी और वह मिट्टी उस अंधे की आँखों पर मलते हुए उससे कहा, *"जा और शीलोह के कुण्ड में धो आ"* ('शीलोह' अर्थात् 'भेजा हुआ') उस अंधे ने जाकर कुण्ड में अपनी आँखें धो डालीं और जब वह वापस लौटा तो उसे दिखाई दे रहा था। तब उसके पड़ोसी और वे लोग जिन्होंने पहले उसे भीख माँगते देखा था, कहने लगे, *"क्या यह वही नहीं जो बैठा हुआ भीख माँगा करता था?"* कुछ लोगों ने कहा, *"यह वही है,"* औरों ने कहा, *"नहीं, यह वह नहीं है, परन्तु उसके जैसा दिखाई देता है।"* पर जब उसने कहा कि मैं वही हूँ तब वे उससे पूछने लगे, *"तेरी आँखों कैसे खुल गई?"* उसने उत्तर दिया, *"यीशु नामक एक व्यक्ति ने मिट्टी सानकर मेरी आँखों पर मली और मुझसे कहा, 'जा और शीलोह में धो आ,' और मैं वहाँ जाकर धो आया।*

बस मुझे दिखाई देने लगा।" फिर उन्होंने उससे पूछा, *"वह कहाँ है?"* उसने कहा, *"मैं नहीं जानता।" [John 9:1-12]*

दृष्टि-दान पर फरीसियों का विवाद

तब लोग उसे फरीसियों के पास ले गए। जिस दिन यीशु ने मिट्टी सानकर उसे दृष्टि दी थी वह सब्त का दिन था। फिर फरीसियों ने भी उससे पूछा, *"तेरी आँखें कैसे खुल गई?"* उसने कहा, *"उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगाई, फिर मैंने उसे धोया और अब मैं देख सकता हूँ।"* इस पर कुछ फरीसी कहने लगे, *"यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं है, क्योंकि वह सब्त का पालन नहीं करता।"* तो औरों ने कहा, *"कोई पापी आदमी भला ऐसे चमत्कार कैसे कर सकता है?"* इस तरह उनमें आपस में विवाद होने लगा। उन्होंने फिर एक बार उस अंधे से पूछा, *"उसके बारे में तू क्या जानता है?"* तो उसने कहा, *"वह नबी है।"* परन्तु यहूदियों ने विश्वास नहीं किया कि वह व्यक्ति पहले अंधा था और अब देख सकता है जब तक उन्होंने उसके माता-पिता को बुलाकर यह नहीं पूछ लिया, *"क्या यही तुम्हारा पुत्र है, जो तुम कहते हो कि अंधा जन्मा था? फिर यह कैसे हो सकता है कि वह अब देख सकता है?"* इस पर उसके माता-पिता ने उत्तर देते हुए कहा, *"यह हमारा ही पुत्र है और यह अंधा जन्मा था, पर हम यह नहीं जानते हैं कि यह अब देख कैसे सकता है, और न ही हम यह जानते हैं कि किसने उसे दृष्टि दी है। उसी से पूछ लो। अपने बारे में यह खुद बता सकता है।"* (उसके माता-पिता ने यह इसलिए कहा, क्योंकि वे यहूदी नेताओं से डरते थे। यहूदी नेताओं ने पहले से ही निश्चय कर लिया था कि यदि कोई यीशु को मसीह माने तो उसे आराधनालय से निकाल दिया जाए, इसलिये उसके माता-पिता ने कहा था, *"वह काफी बडा हो चुका है; उसी से पूछ लो।"*) तब उन्होंने उस व्यक्ति जो अंधा था दूसरी बार बुलाकर उससे कहा, *"तू चंगा हुआ है उसका श्रेय परमेश्वर को दे; हम तो जानते हैं कि वह व्यक्ति पापी है।"* इस पर उसने उत्तर दिया, *"मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं; मैं तो केवल यह*

जानता हूँ कि मैं अंधा था और अब देख सकता हूँ।" फिर उन्होंने उससे पूछा, *"उसने तेरे साथ क्या किया? किस तरह तेरी आँखें खोली?"* इस पर उसने उत्तर दिया, *"मैं तुम्हें कह चुका हूँ, पर तुम तो सुनते ही नहीं। तुम वह सब कुछ बार बार क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके अनुयायी बनना चाहते हो?"* इस पर वे उसे बुरा-भला कहकर बोले, *"तू उसका अनुयायी होगा; हम तो मूसा के अनुयायी हैं। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें की, पर हम यह नहीं जानते कि वह आदमी (यीशु) कहाँ से आया है।"* उत्तर देते हुए उस व्यक्ति ने उनसे कहा, *"यह तो आश्चर्य की बात है कि तुम नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है। पर मुझे उसने आँखों की ज्योति दी है। हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता, परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो और उसकी इच्छा पर चलता है तो वह उसकी सुनता है। कभी सुनने में नहीं आया कि किसी ने किसी जन्म से अंधे को आँखों की ज्योति दी हो। यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से नहीं होता तो वह कुछ भी नहीं कर सकता।"* इस पर यहूदी नेताओं ने उससे कहा, *"तू तो पैदा हुआ तब से पापी रहा है, और तू हमें सिखाएगा?"* और इस तरह उन्होंने उसे वहाँ से बाहर धकेल दिया। जब यीशु ने सुना कि यहूदी नेताओं ने उस व्यक्ति को धकेल कर बाहर निकाल दिया है तो उससे मिलकर उसने पूछा, *"क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?"* उत्तर में उसने कहा, *"हे प्रभु, बताइये वह कौन है, ताकि मैं उस पर विश्वास करूँ।"* इस पर यीशु ने उससे कहा, *"तू उसे देख चुका है और वह वही है जिससे तू इस समय बातें कर रहा है।"* फिर वह व्यक्ति बोला, *"हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ।"* और वह नतमस्तक हो गया। तब यीशु ने कहा, *"मैं इस जगत में न्याय करने आया हूँ, ताकि वे जो नहीं देखते वे देखने लगे और जो देख रहे हैं वे अंधे हो जाएँ।"* यह सुनकर कुछ फरीसियों ने यीशु से पूछा, *"क्या हम भी अंधे हैं?"* यीशु ने उनसे कहा, *"यदि तुम अंधे होते तो तुम पापी नहीं होते, पर जैसा कि तुम कहते हो कि तुम देख सकते हो तो वास्तव में तुम पाप-युक्त हो।" [John 9:13-41]*

चरवाहा और उसकी भेडें

यीशु ने कहा, *''मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो कोई भेड़ों के बाडे में द्वार से प्रवेश न करके बाडा फाँद कर दूसरे प्रकार से घुसता है, वह चोर, लुटेरा है, किन्तु जो दरवाजे से भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है। द्वारपाल उसके लिये द्वार खोल देता है और भेड़ें उसकी आवाज सुनती हैं। वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है। जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल लेता है तो उनके आगे-आगे चलता है और भेड़ें भी उसके पीछे-पीछे चलती हैं, क्योंकि वे उसकी आवाज पहचानती हैं। परन्तु भेड़ें किसी अनजान का अनुसरण नहीं करती; वे तो उससे भागेंगी, क्योंकि वे उस अनजान की आवाज नहीं पहचानती।''* यीशु ने उन्हें यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे नहीं समझ पाये कि यीशु उन्हें क्या बता रहा है। तब यीशु ने उनसे फिर कहा, *''मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि भेड़ों के लिये द्वार मैं हूँ। वे सब जो मुझसे पहले आए थे वे सब चोर और लुटेरे हैं, परन्तु भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी। द्वार मैं हूँ। यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करता है तो वह उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया-जाया करेगा और उसे चारगाह मिलेगी। चोर केवल चोरी, हत्या और विनाश करने के लिए ही आता है, किन्तु मैं इसलिए आया हूँ कि लोग भरपूर जीवन पा सकें। अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपनी जान दे देता है। किन्तु किराये का मजदूर, जो न चरवाहा है और न भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को आते हुए देखकर भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है और भेड़िया उन्हें पकड़ता है और तितर-बितर कर देता है। किराये का मजदूर इसलिए भाग जाता है क्योंकि वह मजदूर है और इसीलिए उसको भेड़ों की परवाह नहीं होती। अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और मेरी भेड़ें मुझे वैसे ही जानती हैं जैसे परम पिता मुझे जानता है और मैं परम पिता को जानता हूँ। अपनी भेड़ों के लिये मैं अपना जीवन देता हूँ। मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस बाडे की नहीं है; मुझे उन्हें भी लाना है। वे भी मेरी आवाज सुनेगी और*

तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा। परम पिता मुझसे इसलिए प्रेम रखता है कि मैं अपना जीवन देता हूँ, ताकि मैं उसे फिर वापस ले सकूँ। कोई इसे मुझसे छीनता नहीं, वरन् मैं अपने आप इसे देता हूँ। मुझे इसे देने का अधिकार है और उसे फिर लेने का भी अधिकार है। यह आज्ञा मुझे मेरे परम पिता से मिली है।" यीशु की इन बातों के कारण यहूदियों में फिर एक फूट पड़ गयी। उनमें से बहुत से कहने लगे, *"इसमें दुष्टात्मा है और यह पागल है। तुम उसकी क्यों सुनते हो?"* तो दूसरे कहने लगे, *"ये बातें किसी ऐसे मनुष्य की नहीं हो सकती जिसमें दुष्टात्मा हो। क्या दुष्टात्मा अंधों की आँखें खोल सकती है?" [John 10:1-21]*

स्थापन पर्व (feast of the dedication) पर यरूशलेम में

यरूशलेम में समर्पण का पर्व आया। जाड़े की ऋतु थी। यीशु मन्दिर में सुलैमान के दालान में टहल रहा था। तभी यहूदी नेताओं ने उसे घेर लिया औरपूछा, *"तू हमें कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है, तो साफ कह दे।"* यीशु ने उत्तर दिया, *"मैं तुम्हें बता चुका हूँ, पर तुम विश्वास करते ही नहीं। जो काम मैं अपने परम पिता के नाम से करता हूँ वे ही मेरी साक्षी हैं, पर तुम विश्वास नहीं करते, क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो। मेरी भेड़ें मेरी आवाज को जानती हैं और मैं उन्हें जानता हूँ; वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नाश नहीं होंगी और न कोई उन्हें मुझसे छीन पायेगा। मुझे उन्हें सौंपने वाला मेरा परम पिता सबसे महान; मेरे पिता से उन्हें कोई नहीं छीन सकता। मैं और पिता एक हैं।"* यह सुनकर यहूदी नेताओं ने यीशु पर मारने के लिये पत्थर उठा लिये। इस पर यीशु ने उनसे कहा, *"मैंने तुम्हें अपने पिता की ओर से अनेक अच्छे काम दिखाए हैं। उनमें से किस काम के लिये तुम मुझ पर पथराव करना चाहते हो?"* यहूदी नेताओं ने उत्तर देते हुए कहा, ***"हम तुझ पर किसी अच्छे काम के लिए पथराव नहीं कर रहे है, बल्कि इसलिए कर रहे है कि तूने***

परमेश्वर की निन्दा की है; तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर घोषित कर रहा है।" इस पर यीशु ने उन्हें पूछा, *"जिसे परम पिता ने पवित्र ठहराकर इस जगत में भेजा है, तुम उससे कहते हो, 'तू निन्दा करता है'?" यदि मैं अपने परम पिता के कार्य नहीं करता हूँ तो मेरा विश्वास मत करो, पर यदि मैं अपने परम पिता के ही कार्य कर रहा हूँ तो तुम चाहे मेरा विश्वास न भी करो, परन्तु उन कार्यों पर तो विश्वास करो, जिससे तुम जान सको और समझ सको कि परम पिता मुझ में है और मैं परम पिता में हूँ।"* तब उन्होंने फिर यीशु को पकड़ने का प्रयत्न किया, परन्तु वह उनके हाथ से निकल गया। फिर यीशु यरदन के पार उस स्थान पर चला गया जहाँ पहले यूहन्ना बपतिस्मा दिया करता था। वहाँ बहुत से लोग उसके पास आकर कहने लगे, *"यूहन्ना ने तो कोई चमत्कार नहीं किये, पर जो कुछ यूहन्ना ने इसके बारे में कहा था वह सब सच निकला।"* वहाँ बहुत से लोगों ने यीशु पर विश्वास किया। *[John 10:22-42]*

लाज़र (Lazarus) की मृत्यु

बैतनिय्याह गाँव में लाज़र नामक एक व्यक्ति बीमार था। वह अपनी बहन मरियम और मार्था के साथ रहता था (यह वही मरियम थी जिसने यीशु पर इत्र डालकर उसके पैर अपने बालों से पोंछे थे। लाज़र उसी का भाई था।) एक दिन इन बहनों ने यीशु के पास समाचार भेजा, *"हे प्रभु, जिसे तू प्यार करता है वह लाज़र बीमार है।"* यह सुनकर यीशु ने कहा, *"यह बीमारी जान लेवा नहीं है, बल्कि परमेश्वर की महिमा को प्रकट करने के लिये है; उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा होगी।"* जब यीशु ने सुना कि लाज़र बीमार हो गया है तो जिस स्थान पर वह ठहरा था वहाँ दो दिन और ठहर गया। फिर इसके बाद यीशु ने अपने अनुयायियों से कहा, *"आओ, हम यहूदिया लौट चलें।"* इस पर अनुयायियों ने उससे कहा, *"हे रब्बी, कुछ ही दिन पहले यहूदी नेता तुझ पर पथराव करना चाहते थे और तू फिर भी वहीं जाना चाहता है?"* यीशु ने उत्तर दिया,

“क्या एक दिन में बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई व्यक्ति दिन के प्रकाश में चले तो वह ठोकर नहीं खाता, क्योंकि वह इस जगत के प्रकाश को देखता है। पर यदि कोई रात में चले तो वह ठोकर खाता है, क्योंकि उसमें प्रकाश नहीं।” फिर उनसे कहा, *“हमारा मित्र लाज़र सो गया है, पर मैं उसे जगाने जा रहा हूँ।”* तब उसके शिश्यों ने उससे कहा, *“हे प्रभु, यदि वह सो गया है तो वह अच्छा हो जाएगा।”* यीशु लाज़र की मृत्यु के बारे में कह रहा था, पर शिष्यों ने सोचा कि वह स्वाभाविक नींद की बात कर रहा था। इसलिये यीशु ने उनसे स्पष्ट कह दिया, *“लाज़र मर गया है। अच्छा हुआ कि मैं वहाँ नहीं था। अब तुम मुझ पर विश्वास कर सकोगे। आओ, हम उसके पास चलें।”* तब थोमा ने, जो दिदुमुस कहलाता था, दूसरे शिष्यों से कहा, *“आओ, वहाँ चलें, ताकि हम भी यीशु के साथ मर सकें।” [John 11:1-16]*

बैतनिय्याह पहुँचकर यीशु को मालूम हुआ कि लाज़र को कब्र में रखे चार दिन हो चुके थे। (बैतनिय्याह यरूशलेम से कोई दो मील की दूरी पर था।) बहुत से यहूदी नेता मार्था और मरियम के पास उनके भाई की मृत्यु पर सांत्वना देने के लिये आए थे। जब मार्था ने यीशु के आने का समाचार सुना तो वह उससे मिलने गई, जबकि मरियम घर में ही बैठी रही। मार्था ने यीशु से कहा, *“हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई नहीं मरता। पर मैं जानती हूँ कि अब भी तू परमेश्वर से जो कुछ माँगेगा वह तुझे देगा।”* यीशु ने उससे कहा, *“तेरा भाई जी उठेगा।”* मार्था ने उससे कहा, *“मैं जानती हूँ कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।”* इस पर यीशु ने उससे कहा, ***“पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तो भी जीएगा। और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह कभी नहीं मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?”*** उत्तर में वह यीशु से बोली, ***“हाँ प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है।”*** इतना कहकर वह चली गई और अपनी बहन मरियम

को अकेले में बुलाकर कहा, *“गुरु यहीं है और तुझे बुला रहा है।”* यह सुनते ही मरियम तुरन्त उठकर यीशु से मिलने चल दी। (यीशु अभी तक गाँव में नहीं पहुँचा था; वह अभी भी उसी स्थान पर था जहाँ मार्था ने उससे भेंट की थी।) जब उसे सांत्वना देने आये यहूदियों ने देखा कि मरियम उठकर झटपर बाहर चली गई है तो वे भी यह सोच कर कि वह कब्र पर विलाप करने जा रही है, उसके पीछे हो लिये। मरियम जब यीशु के पास पहुँची तो वह उसे देखते ही उसके चरणों में गिर पडी और बोली, *“हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई नहीं मरता।”* यीशु ने जब उसे और उसके साथ आये यहूदियों को रोते बिलखते हुए देखा तो उसकी आत्मा तडप उठी और वह व्याकुल हो गया। फिर उसने पूछा, *“तुमने उसे कहाँ रखा है?”* उन्होंने उससे कहा, *“हे प्रभु, चलकर देख ले।”* इस पर यीशु फूट-फूट कर रोने लगा तो यहूदी कहने लगे, *“देखो, वह लाज़र को कितना चाहता था!”* तब उनमें से कुछ कहने लगे, *“यह व्यक्ति जिसने अंधे को आँखें दीं, क्या लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता था?” [John 11:17-37]*

लाज़र को जीवित करना

तब एक बार फिर मन में बहुत ही व्याकुल होकर यीशु कब्र की तरफ गया। वह एक गुफा थी और उसका द्वार एक पत्थर से ढका हुआ था। वहाँ जाकर यीशु ने कहा, *“पत्थर हटा दो।”* इस पर मार्था उससे कहने लगी, *“हे प्रभु, अब तो वहाँ से दुर्गन्ध आती है, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए है।”* यीशु ने मार्था से कहा, *“क्या मैंने तुझसे नहीं कहा कि यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी?”* तब उन्होंने उस पत्थर को हटा दिया और यीशु ने अपनी आँखें ऊपर उठाते हुए कहा, *“हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है। मैं जानता कि तू सदा मेरी सुनता है, किन्तु जो भीड़ आस-पास खड़ी है उनके लिये मैंने यह कहा, जिससे कि वे विश्वास करें कि तूने मुझे भेजा है।”* यह कहकर उसने ऊँचे स्वर में पुकारा, *“लाज़र, बाहर निकल आ!”* इस पर जो मर गया था वह बाहर निकल आया!! उसके हाथ पैर अभी भी कफन

में बंधे हुए थे और उसका मुँह कपडे में लिपटा हुआ था। यीशु ने लोगों से कहा, *"उसे खोल दो और जाने दो।" [John 11:38-44]*

यहूदी नेताओं द्वारा यीशु की हत्या का षडयंत्र

यीशु के इस कार्य को देखकर वहाँ उपस्थित यहूदियों में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया, किन्तु उनमें से कुछ यहूदी फरीसियों के पास गए और यीशु के कामों का समाचार दिया। इस पर प्रमुख याजकों और फरीसियों ने महासभा के लोगों को इकट्ठा करके कहा, *"हमें क्या करना चाहिये? यह व्यक्ति तो बहुत चमत्कार दिखा रहा है। यदि हमने उसे ऐसे ही छोड़ दिया तो सब उस पर विश्वास करने लगेगे और रोमी लोग आकर हमारे स्थान और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे।"* किन्तु उस वर्ष के महाजायक कैफा (Caiaphas) ने उनसे कहा, *"तुम लोग कुछ भी नहीं जानते, और न ही तुम्हें इस बात की समझ है कि हमारे लिये यही लाभदायक है कि बजाय इसके कि सारी जाती ही नष्ट हो जाये, सब के लिये एक व्यक्ति ही मरे।"* यह बात उसने अपनी ओर से नहीं कही थी, पर क्योंकि वह उस साल का महायाजक था, उसने भविष्यवाणी की थी कि यीशु उस समूची जाति के लिये मरेगा; वरन् वह परमेश्वर की तितर-बितर सन्तानों को एक कर देगा। इस तरह उसी दिन से वे यीशु को मार डालने के कुचक्र रचने लगे। इसलिए यीशु उस समय से यहूदियों के बीच प्रगट होकर नहीं गया। यरूशलेम छोडकर वह रेगिस्तान के निकटवर्ती एप्रैम (Ephraim) नगर चला गया और अपने शिष्यों के साथ वहीं रहने लगा। यहूदियों का फसह पर्व निकट था और बहुत सारे लोग अपने आप को शुद्ध करने के लिए फसह से पहले ही यरूशलेम चले गए थे। वे वहाँ यीशु को ढूँढ़ रहे थे और मन्दिर में खड़े होकर आपस में पूछने लगे, *"तुम्हें क्या लगता है? क्या वह पर्व में नहीं आएगा?"* फिर प्रमुख याजकों और फरीसियों ने यह आदेश दिया कि यदि किसी को पता चले कि यीशु कहाँ है तो वह इसकी सूचना दे, ताकि वे उसे बंदी बना सकें। *[John 11:45-57]*

यीशु बैतनिय्याह (Bethany) में

फसह पर्व से छः दिन पहले यीशु बैतनिय्याह में आया, जहाँ लाज़र था। वहाँ उन्होंने यीशु के लिये भोजन तैयार किया और मार्था ने उसे परोसा। यीशु के साथ भोजन करने के लिये बैठने वालों में लाज़र भी एक था। तब मरियम ने जटामांसी (spikenard) का आधा सेर बहुमूल्य इत्र लेकर यीशु के पैरों पर लगाया और अपने बालों से उसके चरणों को पौंछा। इत्र की सुगंध से सारा घर महक उठा। परन्तु यह देखकर उसके शिष्यों में से एक यहूदा इस्करियोती ने कहा, *“इस इत्र को तीन सौ दीनार में बेचकर धन गरीबों को क्यों नहीं दे दिया गया?”* उसने यह बात इसलिए नहीं कही कि उसे गरीबों की चिन्ता थी, बल्कि वह तो स्वयं एक चोर था। रूपयों की थैली उसी के पास रहती थी और उसमें जो कुछ डाला जाता था उसे वह निकाल लेता था। तब यीशु ने कहा, *“रहने दो। उसे रोको मत।* उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में यह सब किया है। ***गरीब लोग तो सदा तुम्हारे पास रहेंगे, पर मैं सदा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।”*** *[John 12:1-8]*

लाज़र के विरुद्ध षडयंत्र

फसह पर्व पार आये यहूदियों को जब पता चला कि यीशु बैतनिय्याह में है तो वे वहाँ उससे मिलने गये। वे विशेषकर उस लाज़र को देखने गये जिसे यीशु ने मरने के बाद पुनः जीवित कर दिया था। इसलिये प्रमुख याजकों ने लाज़र को भी मार डालने की योजना बनायी, क्योंकि उसी के कारण बहुत से यहूदी अपने नेताओं को छोडकर यीशु पर विश्वास करने लगे थे। *[John 12:9-11]*

शैतान का पतन

फिर यीशु ने सत्तर व्यक्तियों को और नियुक्त किया और जिन-जिन नगरों और स्थानों पर उसे स्वयं जाना था, दो-दो करके उसने उन्हें अपने आगे भेजा। *[Luke 10:1]*

फिर वे सत्तर आनन्द के साथ वापस आकर कहने लगे, *"हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में है।"* इस पर यीशु ने उनसे कहा, *"मैंनें शैतान को आकाश से बिजली के समान गिरते हुए देखा है। सुनो! मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को पैरों तले रौंदने का और शत्रु की समूची शक्ति पर प्रभावी होने का सामर्थ्य दिया है। तुम्हें कोई कुछ हानि नहीं पहुँचा पायेगा। किन्तु केवल इस बात पर प्रसन्न मत हो कि आत्माएँ तुम्हारे वश में हैं, बल्कि इस पर प्रसन्न हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में अंकित हैं।" [Luke 10:17-20]*

यीशु की परम पिता से प्रार्थना

उस क्षण वह पवित्र आत्मा में स्थित होकर आनन्दित हुआ और बोला, *"हे परम पिता, हे स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छुपा कर रखते हुए भी बालकों पर प्रगट की। हे परम पिता, निश्चय ही तुझे यही अच्छा लगा। मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंप दिया है और केवल पिता सिवाय कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है, और पुत्र के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता कि पिता कौन है, या उसके सिवा जिसे पुत्र उसे प्रकट करना चाहता है।" [Luke 10:21-22]*

अच्छे सामरी की कथा

तब एक न्यायशास्त्री (lawyer) उठा और यह कहकर उसकी परीक्षा करने लगा, *"हे गुरु, अनन्त जीवन पाने लिये मैं क्या करूँ?"*

इस पर यीशु ने उस से कहा, *"व्यवस्था क्या लिखा है, वहाँ तू क्या पढ़ता है?"*

उसने उत्तर दिया, *"'तू अपने समूचे मन, सम्पूर्ण आत्मा और सारी शक्ति और समग्र बुद्धि से अपने परमेश्वर से प्रेम कर' और 'अपने पडौसी से वैसे ही प्यार कर जैसे तू अपने आप से करता है'।"*

तब यीशु ने उससे कहा, *"तूने ठीक उत्तर दिया। तू ऐसा ही कर। इसी से तू जीवित रहेगा।"*

किन्तु उसने अपने आप को धर्मी ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, *"और मेरा पड़ोसी कौन है?"*

यीशु ने उत्तर में कहा, *"एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो जा रहा था कि डाकुओं ने घेरकर उसके कपड़े उतार लिए और मार पीट कर उसे अधमरा छोड़कर चले गए। अब सन्योग से उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था, परन्तु उसने इसे देखा तो कतराकर दूसरी ओर चला गया। उसी रास्ते होता हुआ एक लेवी भी उस जगह पर आया और वह भी उसे देखकर कतराकर दूसरी ओर चला गया। परन्तु एक सामरी यात्री भी कहीं जाते हुए वहाँ से निकला और उसे देखकर उसके लिये उसके मन में करुणा उपजी। उसने उसके पास आकर उसके घावों पर तेल और दाखरस डालकर पट्टियाँ बाँध दी और उसे अपनी सवारी पर लाद कर एक सराय में ले गया और उसकी देखभाल करने लगा। अगले दिन उसने दो दीनार निकालकर सराय के मालिक को दिए और कहा, 'इसकी देखभाल करना और इससे अधिक जो कुछ तेरा खर्चा होगा उसे मैं लौटने पर तुझे चुका दूँगा।'*

"अब तेरे विचार से जो डाकुओं के बीच घिरे व्यक्ति था, उसका पडौसी इन तीनों में से कौन हुआ?"

न्यायशास्त्री कहा, *"वही जिसने उस पर दया की।"*

तब यीशु ने उससे कहा, *“जा, तू भी वैसा ही कर जैसा उसने किया।” [Luke 10:25-37]*

मरियम और मार्था

जब यीशु और उसके शिष्य अपनी राह चले जा रहे थे तो वह एक गाँव में गया। वहाँ मार्था नाम की एक स्त्री ने उसका स्वागत सत्कार किया। उसकी मरियम नामक बहन प्रभु के चरणों में बैठकर उसका वचन सुन रही थी। उधर तरह तरह की तैयारियों में लगी मार्था व्याकुल होकर यीशु के पास आकर कहने लगी, *“हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी चिन्ता नहीं कि मेरी बहन ने सारा काम बस मुझ अकेली ही पर छोड दिया है? इसलिए उससे मेरी सहायता करने को कह।”*

यीशु ने उसे उत्तर दिया, *“मार्था, तू बहुत सी बातों के लिये चिंतिति और व्याकुल रहती है। परन्तु एक बात अवश्य है कि मरियम ने उसी उत्तम अंश को चुन लिया है जो उससे नहीं छीना जाएगा।” [Luke 10:38-42]*

प्रार्थना

अब ऐसा हुआ कि यीशु किसी जगह प्रार्थना कर रहा था। जब वह प्रार्थना कर चुका, तो उसके एक चेले ने उससे कहा, *“हे प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया था वैसे तू भी हमें सीखा दे।”*

इस पर उसने उनसे कहा, *“जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो:* ***‘हे पिता, तेरा नाम पवित्र हो, तेरा राज्य आए। हमारी दिन भर की रोटी हर दिन हमें दिया कर। हमारे पापों को क्षमा कर, क्योंकि हम भी अपने अपराधी को क्षमा करते हैं, और हमें लालच में मत पडने दे’*।*” [Luke 11:1-4]*

माँगते रहो

फिर यीशु ने उनसे कहा, "मानो तुममें से किसी का एक मित्र है, और तुम आधी रात को उसके पास जाकर उससे कहते हो, 'हे मित्र, मुझे तीन रोटियाँ दे, क्योंकि एक यात्री मित्र मेरे पास आया है, और उसके आगे परोसने के लिये मेरे पास कुछ नहीं है।' और कल्पना करो कि वह भीतर से उत्तर देता है, 'मुझे तंग मत कर; अब तो द्वार बन्द हो चुका है, और बिस्तर में मेरे साथ मेरे बच्चे हैं, इसलिए मैं उठकर तुम्हें कुछ नहीं दे सकता।' मैं तुम से कहता हूँ कि वह यद्यपि नहीं उठेगा और तुम्हें कुछ नहीं देगा, किन्तु फिर भी क्योंकि वह तुम्हारा मित्र है, इसलिए तुम बिना संकोच निरन्तर मांगते रहोगे तो वह उठकर तुम्हारी आवश्यकता भर तुम्हें अवश्य देगा। और इसीलिये मैं तुम से कहता हूँ, ***'माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये द्वार खोल दिया जाएगा।'*** क्योंकि हर कोई जो कोई माँगता है, उसे मिलता है; जो ढूँढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये द्वार खोल दिया जाता है। तुममें ऐसा पिता कौन होगा जो यदि उसका पुत्र रोटी माँगे, तो उसे पत्थर दे, या मछली माँगे, तो मछली के बदले उसे साँप थमा दे, और यदि वह अण्डा माँगे तो उसे बिच्छू दे? अतः जब तुम बुरे होते हुए भी अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा?" *[Luke 11:5-13]*

खाली व्यक्ति

यीशु ने कहा, *"जब कोई अशुद्ध आत्मा मनुष्य से बाहर निकलती है तो विश्राम को खोजते हुए सूखी जगहों में फिरती है और जब उसे आराम नहीं मिलता तो वह कहती है, 'मैं अपने उसी घर में लौट जाऊँगी जहाँ से निकली थी।' और वापस जाकर उसे वह उसे साफ सुथरा और सजा-सजाया पाती है। तब वह जाकर अपने से भी बुरी अन्य सात दुष्टात्माओं को अपने साथ वहाँ ले आती है, और वे उसमें समाकर रहने*

लगती हैं। इस प्रकार उस व्यक्ति की यह पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है।" [Luke 11:24-26]

वे धन्य है

जब यीशु ये बातें कह ही रहा था तो भीड़ में से एक स्त्री ने उठकर ऊँचे स्वर में कहा, *"धन्य है वह गर्भ जिसने तुझे धारण किया और धन्य है वे स्तन, जिनका तूने पान किया है।" [Luke 11:27]*

स्वार्थ के विरुद्ध चेतावनी

फिर भीड में से किसी ने उससे कहा, *"गुरु, मेरे भाई से पिता की सम्पति का बँटवारा करने को कह दे।"* इस पर यीशु ने उससे कहा, *"अरे भले मनुष्य, मुझे तुम्हारा न्यायकर्ता या पंच किसने बनाया है?"* फिर यीशु ने कहा, *"सावधानी से सभी प्रकार के लोभ से बचो। क्योंकि आवश्यकता से अधिक सम्पति होने पर भी वह जीवन का आधार नहीं" [Luke 12:13-15]*

फिर उसने उन्हें एक दृष्टान्त कहा, "एक धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। तब वह अपने मन में विचार करने लगा, 'मैं क्या करूँ, क्योंकि मेरे पास उपज को रखने के के लिये स्थान तो है नहीं।' फिर उसने सोचा, 'मैं अपने अनाज के कोठों को तोड़ कर बडे कोठे बनावाऊँगा और वहाँ अपना सब अन्न और सामान रखूँगा।' और अपने आप से कहूँगा, 'अरे मेरी आत्मा, अब तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत संपत्ति संचित है; घबरा मत, खा, पी, और मौज कर।'

परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, 'अरे मूर्ख! इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा; तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किसका होगा?'

"देखो, उस व्यक्ति के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है, वह अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।" *[Luke 12:16-21]*

सब्त के दिन एक स्त्री को निरोग करना

किसी आराधनालय में सब्त के दिन यीशु जब उपदेश दे रहा था तो वहाँ एक स्त्री थी, जिसे अठारह वर्ष से दुष्टात्मा लगी हुई थी, जिसने उसे पंगु बना दी थी। वह झुक कर कुबड़ी हो गई थी और थोडी सी भी सीधी नहीं हो सकती थी। यीशु ने उसे देखकर बुलाया और कहा, *"हे स्त्री, तू अपनी दुर्बलता से छूट गई।"* यह कहते हुए उसने उसके सिर पर अपने हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई और परमेश्वर की स्तुति करने लगी। *[Luke 13:10-13]*

यीशु ने क्योंकि सब्त के दिन उसे निरोग किया था, इसलिए आराधनालय के नेता ने रिसियाकर लोगों से कहा, *"काम करने के लिए छः दिन होते हैं, सो उन्हीं दिनों आओ और रोग दूर करवाओ, परन्तु सब्त के दिन नहीं।"* यह सुनकर यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, *"ओ कपटियों, क्या सब्त के दिन तुम में से हर कोई अपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता?अब यह स्त्री, जो अब्राहम की बेटी है और जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से जकड रखा था, क्या उसको सब्त के दिन इसके बन्धन से मुक्त नहीं किया जाना चाहिए था?" [Luke 13:14-16]*

जब उसने यह कहा तो उसके सब विरोधी लज्जित हो गए, और उधर सारी भीड़ उसके चमत्कारों से आनन्दित हो रही थी। *[Luke 13:17]*

क्या सब्त के दिन उपचार उचित है?

एक बार सब्त के दिन फरीसियों में से किसी के घर यीशु भोजन पर गया। उधर वे सतर्कता से उसकी घात में थे। वहाँ उसके सामने जलोदर (dropsy) से पीडित एक व्यक्ति था। यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों से पूछा, *"क्या सब्त के दिन किसी को निरोग करना उचित है या नहीं?"* परन्तु वे चुप रहे। तब यीशु ने उस व्यक्ति को चंगा किया और जाने दिया। फिर उनसे उनसे पूछा, *"तुम में से ऐसा कौन है जिसका पुत्र या*

बैल कुएँ में गिर जाए और वह सब्त के दिन उसे तुरन्त बाहर न निकाल ले?" वे इन तर्कों का कोई उत्तर न दे सके। *[Luke 14:1-6]*

अपने को महत्व मत दो

फिर उसने एक दृष्टान्त कथा सुनाई। उसने कहा: "जब कोई तुम्हें विवाह भोज पर बुलाए, तो वहाँ किसी आदरपूर्ण स्थान पर मत बैठो, क्योंकि हो सकता है कि वहाँ कोई तुमसे अधिक बडा व्यक्ति उसके द्वारा बुलाया गया जो। फिर तुम दोनों को बुलाने वाला तुम्हारे पास आकर तुमसे कहे, *'यह स्थान इस व्यक्ति को दे दो।'* और तब तुझे लज्जित होकर सबसे नीचे स्थान में बैठना पड़े। इसलिये जब तुम्हें बुलाया जाए तो सबसे नीचे का स्थान ग्रहण करो, जिससे कि जब तुम्हें आमंत्रित करने वाला आकर तुमसे कहे कि *'हे मित्र, उठ ऊपर बैठ,'* तो तेरे साथ बैठनेवालों के सामने तेरा मान बढेगा। क्योंकि हर कोई जो अपने आप को उठायेगा उसे नवा दिया जाएगा, और जो अपने आप को नवायेगा, उसे ऊँचा किया जाएगा।" *[Luke 14:8-11]*

प्रतिफल

फिर यीशु ने उसे न्यौता देनेवाले से कहा, *"जब कभी तू भोज दे तो अपने मित्रों, भाइयों, कुटुम्बियों या धनी मानी पड़ोसियों को मत बुला, क्योंकि कि बदले में वे भी तुझे न्यौता देंगे और इस प्रकार तुझे उसका फल मिल जायेगा। परन्तु जब कभी तू कोई भोज दे तो कंगालों, अपाहिजों, लँगड़ों और अंधों को बुला। क्योंकि उनके पास तुझे वापस लौटाने को कुछ नहीं है, सो यह तेरे लिए आशीर्वाद बन जायेगा। इसका प्रतिफल तुझे धर्मियों के जी उठने (resurrection) पर दिया जायेगा।" [Luke 14:12-14]*

एक दिन यीशु के साथ एक बडी भीड़ जा रही थी, तो उसने पीछे मुड़कर उनसे कहा, "यदि कोई मेरे पास आता है और अपने पिता, माता, पत्नी और बच्चों, अपने भाइयों और बहनों और यहाँ तक कि अपने जीवन तक से भी मुझ से अधिक प्रेम रखता है, तो वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता; और जो कोई अपना क्रूस स्वयं न उठाए

और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा चेला शिष्य हो सकता। यदि तुममें से कोई गढ़/बुर्ज बनना चाहे तो क्या वह पहले बैठकर उसके लिए खर्च का, यह देखने के लिये कि उसे पूरा करने के लिये उसके पास पर्याप्त धन है या नहीं, हिसाब-किताब नहीं लगाएगा? नहीं तो वह नींव तो डाल देगा और फिर उसे पूरा न कर पाने से सब देखनेवाले यह कहकर उसका उपहास करेंगे, 'अरे, देखो इस व्यक्ति बनाने तो लगा, पर उसे पूरा नहीं कर सका।' या कौन ऐसा राजा होगा जो किसी दूसरे राजा से युद्ध करने जाये और पहले बैठकर यह विचार न कर कि अपने दस हजार सैनिकों कके साथ क्या वह बीस हजार सैनिकों वाले अपने विरोधी का सामना कर भी सकेगा या नहीं? यदि वह समर्थ नहीं होगा तो उसका विरोधी अभी मार्ग में होगा तभी वह अपने दूत भेजकर शांति-संधि का प्रस्ताव करेगा। इसी प्रकार **तुममें से कोई भी जो अपना सब कुछ त्याग नहीं देता, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता।**" *[Luke 14:25-33]*

खोये हुए को पाने के आनन्द की दृष्टान्त कथा

"सोचो कोई स्त्री है जिसके पास दस चाँदी के सिक्के है और उनमें से एक सिक्का खो जाता है। तब क्या वह दीया जलाकर घर को तब तक नहीं बुहारती रहेगी और सावधानी से नहीं खोजती रहेगी जब तक कि वह उसे मिल न जाए? और जब वह उसे मिल जाता है तो अपनी सखियों और पड़ोसिनियों को इकट्ठी कर कहती है, *'मेरे साथ आनन्द मनाओ, क्योंकि मेरा खोया हुआ मुझे सिक्का मिल गया है।'* मैं तुमसे कहता हूँ कि इसी रीति एक मन फिराने वाले पापी के लिये भी परमेश्वर के दूतों के सामने आनन्द मनाया जायेगा।" *[Luke 15:8-10]*

उडाऊ पुत्र (Prodigal Son) की दृष्टान्त कथा

फिर यीशु ने कहा, "एक व्यक्ति के दो बेटे थे। उनमें से छोटे ने अपने पिता से कहा, *'हे पिता, जो सम्पत्ति मेरे भाग में आती है, उसे मुझे दे दीजिए।'* तो पिता ने उन दोनों को अपनी संपत्ति बाँट दी। अभी बहुत दिन नहीं बीते थे कि छोटे बेटे ने अपना सब

कुछ इकट्ठा किया और किसी दूर देश को चला गया और वहाँ उद्दण्ड जीवन जीते हुए अपनी सारी सम्पत्ति उड़ा दी। जब उसका सारा धन खर्च हो गया तभी उस देश में सर्वत्र बड़ा अकाल पड़ा, सो वह कंगाल हो गया और उस देश के किसी व्यक्ति के यहाँ जाकर मजदूरी करने लगा। उसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये भेज दिया। वहाँ वह सोचता कदाचित् पेट भरने के लिए उसे कैरब की वे फलियाँ ही मिल जायें, जिन्हें सूअर खाते थे, पर किसी ने उसे एक फली तक नहीं दी। फिर जब उसके होश ठिकाने आये तो वह स्वयं से कहने लगा, *'मेरे पिता के पास कितने ही ऐसे मजदूर है जिनके पास भोजन के बाद भी बचा रहता है, और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ। मैं अब यहाँ से उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा, 'पिता जी, मैंने परमेश्वर के विरुद्ध और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब मैं इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ; मुझे अपने एक मजदूर के समान रख ले।'* ऐसा सोचकर वह अपने पिता के पास चल दिया। *[Luke 15:11-19]*

वह घर से अभी पर्याप्त दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देख लिया और पिता को उस पर दया आयी। उसने दौड़कर अपने बेटे को गले लगा लिया। तब बेटे ने उससे कहा, *'पिता जी, मैंने तुम्हारी दृष्टि में और स्वर्ग के विरुद्ध पाप किया है; मैं अब इस योग्य नहीं रहा कि तुम्हारा पुत्र कहलाऊँ।'* परन्तु पिता ने अपने सेवकों से कहा, *'जल्दी से अच्छे से अच्छा वस्त्र निकाल लाओ और उसे पहनाओ। उसके हाथ में अँगूठी और पैरों में जूतियाँ पहनाओ। कोई मोटा ताजा बछडा काटकर बड़ा भोज तैयार करो और आनन्द मनाओ। क्योंकि मेरा बेटा जो मर गया था अब फिर जीवित हो गया है; जो खो गया था, पर अब मिल गया है।'* और वे आनन्द मनाने लगे। जब उसका बडा बेटा, जो खेत में काम कर रहा था, आया और घर के निकट पहुँचा तब उसने गाने-बजाने और नाचने के स्वर सुने तो उसने एक सेवक को बुलाकर पूछा, *'यह सब क्या हो रहा है?'* सेवक ने उससे कहा, *'तेरा भाई वापस आ गया है और इसकी खूशी में तेरे पिता ने एक*

बछडा कटवाकर बड़ा भोज तैयार करवाया है।' यह सुनकर वह आग बबूला हो उठा; वह भीतर जाना तक नहीं चाहता था। सो उसके पिता ने बाहर आकर उसे समझया मनाया, पर उसने पिता से कहा, *'देख, मैं बरसों से तेरी सेवा करता आ रहा हूँ और मैंनें तेरी किसी भी आज्ञा नहीं टाली, फिर भी तूने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा तक नहीं दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द मना सकता। पर जब तेरा यह पुत्र, जिसने तेरी सम्पत्ति वेश्याओं में उड़ा दी, वापस आया, तो उसके लिये तूने मोटा ताजा बछडा कटवाकर बड़ा भोज तैयार कराया।'* तब पिता ने उससे कहा, *'पुत्र, तू सदा ही मेरे साथ है और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है। किन्तु हमें प्रसन्न होना चाहिए और आनन्द मनाना चाहिए क्योंकि तेरा यह भाई, जो मर गया था, अब फिर जीवित हो गया है; जो खो गया था, वह अब फिर मिल गया है'।" [Luke 15:20-32]*

सच्चा धन

फिर यीशु ने अपने चेलों से भी कहा, "एक धनी व्यक्ति था। उसका एक प्रबन्धक था। लोगों ने उसके सामने प्रबन्धक पर यह दोष लगाया कि वह उसकी सम्पत्ति उड़ा रहा है। अतः धनवान ने उसे बुलाकर पूछा, *'तेरे विषय में मैं यह क्या सुन रहा हूँ? अपने प्रबन्ध का हिसाब दे, क्योंकि अब आगे से तू प्रबन्धक नहीं रह सकता।'* इस पर प्रबन्धक सोचने लगा, *'मेरा स्वामी अब प्रबन्धक का काम मुझसे छीन रहा है। अब मैं क्या करूँ? मुझ में अब इतनी शक्ति भी नहीं रही कि खेतों में मिट्टी खोदने का काम कर सकूँ और भीख माँगने में मुझे लज्जा आती है। मैं समझ गया कि अब मुझे क्या करना चाहिये जिससे जब मैं प्रबन्धक के पद से हटा दिया जाऊँ तो लोग अपने घरों में मुझे अपनाएँ।'* सो उसने अपने स्वामी के हर देनदार को बुलाया और पहले व्यक्ति से उसने पूछा, *'तुझ पर मेरे स्वामी का कितना कर्ज है?'* उसने कहा, *'सौ मन जैतून का तेल।'* इस पर प्रबन्धक ने उससे कहा, *'यह ले अपनी खाता-बही और बैठकर जल्दी से इसे पचास कर दे।'* फिर उसने दूसरे से पूछा, *'तुझ पर कितना कर्ज है?'* उसने कहा, *'सौ*

मन गेहूँ।' तब उसने उससे कहा, *'यह ले अपनी खाता-बही और सौ का अस्सी कर दे।'* इस पर स्वामी ने उस बईमान प्रबन्धक की सराहना की क्योंकि उसने चतुराई से काम लिया था।" *[Luke 16:1-8]*

धनी पुरुष और लाज़र (Lazarus)

"एक धनवान व्यक्ति था जो बैंगनी रंग की उत्तम मलमल के वस्त्र पहनता और प्रति-दिन सुख-विलास का जीवन जीता था। वहीं लाज़र नाम का एक कंगाल उसके द्वार पर पडा रहता था। उसका शरीर घावों से भरा हुआ था और कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। वह उस धनवान की जूठन से अपना पेट भरेने को तरसता रहता था। और एक दिन ऐसा हुआ कि वह कंगाल व्यक्ति मर गया और स्वर्गदूतों ने उसे ले जाकर अब्राहम की गोद में बैठा दिया। फिर वह धनवान भी मर गया और उसे दफना दिया गया। अधोलोक (नरक) में तड़पते हुए उस धनी व्यक्ति ने जब अपनी आँखें उठाई तो दूर से अब्राहम की गोद में लाज़र को देखा। तब उसने पुकारकर कहा, *'हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया करके लाज़र को मेरे पास भेज, ताकि वह अपनी उँगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।'* परन्तु अब्राहम ने कहा, *'हे पुत्र, स्मरण कर कि तूने तेरे जीवनकाल में अच्छी वस्तुएँ पा लीं जबकि लाज़र को बुरी वस्तुएँ ही मिली। इसलिये अब वह यहाँ शान्ति पा रहा है और तू तड़प रहा है। और इसके अतिरिक्त हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई डाल दी गई है ताकि यहाँ से यदि कोई तेरे पास जाना चाहें, वह जा न सके और न कोई वहाँ से इस पार हमारे पास आ सके।'* फिर उस व्यक्ति ने कहा, *'तो फिर हे पिता, मैं तुझसे विनती करता हूँ कि तू लाज़र को मेरे पिता के घर भेज, क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं, जिन्हें वह चेतावनी देगा ताकि उन्हें तो इस यातना के स्थान नरक में न आना पडे।'* किन्तु अब्राहम ने उससे कहा, *'उनके पास मूसा और नबियों की पुस्तकें हैं। उन्हें उनकी सुनने दे।'* उसने कहा, *'नहीं, हे पिता अब्राहम, यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास*

जाए, तो वे मन फिराएँगे (repent)।' इस पर इब्राहिम ने उससे कहा, *'जब वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते, तो मरे हुओं में से उठकर कोई उनके पास जाये तो भी वे नहीं मानेंगे'।" [Luke 16:19-31]*

दस कोढ़ी

एक दिन यीशु यरूशलेम जाते हुए गलील और सामरीया के बीच से जा रहा था तब किसी गाँव में प्रवेश करते समय यीशु से दस कोढ़ी (lepers) मिले। उन्होंने दूर खड़े होकर ऊँचे स्वर में यीशु से कहा, *"हे यीशु, हे स्वामी, हम पर दया कर!"* यीशु ने उन्हें देखकर कहा, *"जाओ और अपने आपको याजकों को दिखाओ।"* और वे अभी जा ही रहे थे कि वे शुद्ध (कोढ़ से मुक्त) हो गए। तब उनमें से एक ने जब यह देखा कि वह शुद्ध हो गया है, तो वह ऊँचे स्वर में परमेश्वर की स्तुति करते हुए वापस लौटा, यीशु के चरणों में गिर पडा और उसका धन्यवाद करने लगा। वह एक **सामरी** था। इस पर यीशु ने उससे पूछा, *"क्या सभी दस के दस कोढ़ से मुक्त (शुद्ध) नहीं हो गये? फिर वे नौ कहाँ हैं? क्या इस परदेशी को छोड़ उनमें से कोई भी परमेश्वर की स्तुति करने वापस नहीं लौटा?"* फिर यीशु ने उससे कहा, *"खडा हो और चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।" [Luke 17:11-19]*

न्यायाधीश और विधवा का दृष्टान्त

फिर यीशु ने यह दृष्टान्त कहा: "किसी नगर में एक न्यायाधीश (judge) रहता था, जो न परमेश्वर से डरता था और न किसी मनुष्य की परवाह करता था। उसी नगर में एक विधवा भी रहती थी, जो उसके पास बार बार जाकर कहा करती थी, *'मेरा न्याय चुकाकर मुझे प्रतिवादी से बचा।'* एक लम्बे समय तक तो वह न्यायाधीश आनाकानी करता रहा, पर अन्त में उसने सोचा, *'यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता, और न मनुष्यों की कुछ परवाह करता हूँ, तो भी यह विधवा मुझे सताती रहती है, इसलिए मैं उसका न्याय चुकाऊँगा, कहीं ऐसा न हो कि वह बार-बार आकर अन्त को मेरी नाक में दम*

करे'।" फिर यीशु ने कहा, *"सुनो, उस अधर्मी न्यायाधीश ने क्या कहा था। अतः क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं पर ध्यान नहीं देगा कि उन्हें, जो उसे रात-दिन पुकारते रहते है, शिघ्र न्याय मिले? क्या वह उनकी सहायता करने में देर करेगा?" [Luke 18:1-7]*

फरीसी और कर वसूलने वाला

फिर यीशु ने यह दृष्टान्त सुनाया: "दो व्यक्ति एक मन्दिर में प्रार्थना करने गए; एक फरीसी था और दूसरा कर वसूलने वाला था। फरीसी खड़ा होकर यह प्रार्थना करने लगा, *'हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं दूसरे लोगों जैसा दुष्टता करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं हूँ, और न ही इस कर वसूलने वाले के समान हूँ। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूँ और अपनी समूची कमाई का दसवाँ अंश (tithes) दान देता हूँ।'* परन्तु कर वसूलने वाला, जो दूर खडा था और यहाँ तक कि स्वर्ग की ओर आँखें तक नहीं उठा रहा था, अपनी छाती पीटते हुए बोला, *'हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर!'* मैं तुम्हें कहता हूँ कि यही मनुष्य नेक ठहराया जाकर अपने घर लौटा, न कि वह दूसरा, क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा समझेगा, उसे छोटा बना दिया जाएगा और जो अपने आप को छोटा मानेगा उसे बड़ा किया जाएगा।" *[Luke 18:9-14]*

यीशु की बच्चों को आशीष

तब लोग कुछ बच्चों को भी यीशु के पास लाने लगे, ताकि वह उनके सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीर्वाद दे, पर उसके चेलों ने उन्हें डाँटा। इस पर यीशु ने कहा, *"बालकों को मेरे पास आने दो। और उन्हें मत रोको, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।"* फिर उसने बच्चों के सिर पर हाथ रखा और वहाँ से चला गया। *[Matthew 19:13-15; Mark 10:13-16; Luke 18:15-17]*

धनी युवक का एक महत्वपूर्ण प्रश्न

वहीं पर एक व्यक्ति था, जो यीशु के पास आया और बोला, *"हे गुरु, मैं कौन सा भला काम करूँ कि अनन्त जीवन पाऊँ?"* यीशु ने उससे कहा, *"तू मुझसे भलाई के विषय में क्यों पूछता है? भला तो एक ही है; पर यदि तू अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर।"* उस व्यक्ति ने यीशु से पूछा, *"कौन सी आज्ञाएँ?"* तब यीशु ने कहा, *"हत्या मत कर, व्यभिचार मत कर, चोरी मत कर, झूठी गवाही मत दे, अपने माता-पिता का आदर कर, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।"* उस जवान ने यीशु से पूछा, *"इन सब को तो मैंने माना है। अब मुझ में किस बात की कमी है?"* यीशु ने उससे कहा, *"यदि तू सम्पूर्ण होना चाहता है तो अपना सब कुछ बेचकर धन गरीबों में बाँट दे, ताकि स्वर्ग में तुझे धन मिल सके। फिर आ और मेरे पीछे हो ले। परन्तु वह जवान यह बात सुन उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।* तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, *"मैं तुमसे सच कहता हूँ कि एक धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर पाना कठिन है। परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश पाने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना ज्यादा आसान है।"* यह सुनकर चेलों ने चकित होकर पूछा, *"फिर किस का उद्धार हो सकता है?" यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, "मनुष्यों के लिए यह असम्भव, परन्तु परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है।"* अब पतरस ने यीशु से पूछा, *"देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिये हैं, तो हमें क्या मिलेगा?"* यीशु ने उनसे कहा, *"मैं तुम लोगों से सच कहता हूँ कि नये युग में जब मनुष्य का पुत्र अपने प्रतापी सिंहासन पर बैठेगा तब तुम भी, जो मेरे पीछे हो लिये हो, बारह सिंहासनों पर बैठ कर इस्राएल के बारह गोत्रों (परमेश्वर के लोगों) का न्याय करोगे। जिस किसी ने भी मेरे लिए घर-बार या भाइयों या बहनों या पिता या माता या बाल-बच्चों और खेतों को छोड़ दिया है, वह सौ गुना अधिक पायेगा और अनन्त*

जीवन का भी अधिकारी बनेगा।" [Matthew 19:16-29; Mark 10:17-31; Luke 18:18-30]

मजदूरों का दृष्टांत

स्वर्ग का राज्य उस जमींदार गृहस्थ के समान है जो एक अपनी दाख की बारी (vineyard / अंगूर का बगीचा) के लिये मजदूर लाने को निकला। उसने मजदूरों को एक रुपया रोज पर अपनी दाख की बारी में काम पर भेज दिए। एक दिन सुबह में वह फिर घर से निकला और उसने देखा कि कुछ लोग बाजार में इधर उधर यूँ ही बेकार खड़े है। तब उनसे उन लोगों से कहा, *'तुम भी मेरी दाख की बारी में जाओ; मैं तुम्हें जो कुछ उचित होगा, दूँगा।'* सो वे भी उसकी बारी में काम करने चले गए। फिर कोई बारह बजे और दुबारा तीन बजे के आसपास उसने वैसा ही किया। कोई पाँच बजे वह फिर अपने घर से निकला और कुछ लोगों को बाजार में इधर उधर खड़े देखा। उसने उनसे पूछा, *'तुम क्यों यहाँ दिन भर बेकार ही खड़े रहते हो?'* तो उन्होंने कहा, *'क्योंकि कि किसी ने हमें मजदूरी पर नहीं रखा।'* तब उसने कहा, 'तुम भी मेरी दाख की बारी में चले जाओ।' सांझ को बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी (steward) से कहा, *'मजदूरों को बुलाकर अंतिम मजदूर से शुरू करके जो पहले लगाये गये थे उन तक सब की मजदूरी चुका दे।'* इस तरह वे मजदूर जो पाँच बजे काम पर लगाये गये थे, आए और उनमें से हर एक को एक-एक रुपया मिला। फिर जो पहले लगाये गये थे वे आये। उन्होंने सोचा था कि उन्हें कुछ अधिक मिलेगा, पर उन्हें भी एक एक ही रुपया मिला। इस पर स्वामी से शिकायत करते हुए उन्होंने कहा, *'जो बाद में लगे थे उन्होंने एक ही घंटा काम किया और तूने हमें भी उतना ही दिया जितना उन्हें, जबकि हमने दिन भर भार उठाया और धूप सही।'* जमींदार ने उनमें से एक को उत्तर दिया, *'दोस्त, मैंने तेरे साथ कोई अन्याय नहीं किया है। क्या तूने मुझसे हर रोज एक रुपया तय नहीं किया था? जो तेरा बनता है, ले और चला जा। मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे दूँ,*

उतना ही सबसे बाद में रखे गये मजदूरों को भी दूँ। क्या मैं अपने धन से जो चाहूँ वह करने का अधिकार नहीं रखता?' इस प्रकार अन्तिम पहले हो जायेंगे और जो पहले हैं वे अन्तिम हो जायेंगे। *[Matthew 20:1-16]*

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु का संकेत

जब यीशु अपने बारह शिष्यों के साथ **यरूशलेम** जा रहा था तो वह चेलों को एकान्त में ले गया और चलते चलते मार्ग में उनसे कहने लगा, *"देखो, हम यरूशलेम पहुँचने को हैं। मनुष्य का पुत्र वहाँ प्रमुख याजकों (chief priests) और शास्त्रियों (scribes) के हाथों सौंप दिया जाएगा, और वे उसे मृत्यु दण्ड के योग्य ठहराएँगे। फिर उसका उपहास करवाने और कोड़े लगवाने के लिए उसे गैरयहूदियों (Gentiles) को सौंप देंगे। फिर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जायेगा, किन्तु तीसरे दिन वह पुनः जी उठेगा।" [Matthew 20:17-19; Mark 10:32-34; Luke 18:31-34]*

एक माँ का अपने बच्चों के लिए आग्रह

तब जब्दी के पुत्रों की माँ अपने पुत्रों के साथ यीशु के पास पहुँची और उससे कुछ माँगने लगी। यीशु ने उससे पूछा, *"तू क्या चाहती है?"* वह बोली, *"मुझे वचन दे कि मेरे ये दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दाहिनी और एक तेरे बाई ओर बैठे।"* यीशु ने उत्तर दिया, *"तुम नहीं जानते कि तुम क्या माँग रहे हो। क्या तुम यातनाओं का वह कटोरा पी सकते हो जिसे मैं पीने वाला हूँ?"* उन्होंने यीशु से कहा, "हाँ, हम पी सकते हैं।" तब यीशु ने उनसे कहा, *"निश्चय ही तुम वह कटोरा पीओगे, पर मेरे दाएँ और बायें बैठाना मेरा काम नहीं। यहाँ बैठने का अधिकार तो उनका है, जिनके लिये मेरे पिता द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है।"* यह सुनकर बाकी दसों चेले उन दोनों भाइयों पर क्रुद्ध हुए। तब यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, *"तुम जानते हो कि गैरयहूदी राजा लोगों पर अपना प्रभुता करते हैं और उनके महत्वपूर्ण नेता लोगों पर अपना अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम्हारे बीच ऐसा नहीं होना चाहिए, बल्कि जो कोई तुममें*

बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने, और तुम में से जो कोई प्रमुख (chief) बनना चाहे, उसे तुम्हारा दास बनना होगा। तुम्हें मनुष्य के पुत्र जैसा ही बनना चाहिए जो सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने और और बहुतों के छुटकारे के लिये अपने प्राणों की फिरौती (ransom) देने आया है।" [Matthew 20:20-28; Mark 10:35-45]

अंधों को दृष्टिदान

जब वे यरीहो (Jericho) नगर से जा रहे थे, एक बड़ी भीड़ यीशु के पीछे हो ली। वहाँ सड़क के किनारे दो अंधे बैठे थे। जब उन्होंने सुना कि यीशु वहाँ से जा रहा है, तो वे पुकारकर कहने लगे, *"प्रभु, दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर।"* इस पर लोगों ने उन्हें धमकाते हुए चुप रहने को कहा, पर वे और अधिक चिल्लाकर बोले, *"प्रभु, दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर।"* तब यीशु रुका और उन्हें बुलाकर कहा, *"तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ?"* उन्होंने यीशु से कहा, *"प्रभु, हम चाहते है कि हमारी आँखें खुल जाएँ, हम देख सकें।"* यीशु ने तरस खाकर उनकी आँखों को छुआ, और तुरन्त ही वे फिर से देखने लगे, और वे भी यिशु के पीछे हो लिए। *[Matthew 20:29-34]*

मरकुस और लूका के सुसमाचारों के अनुसार, इस अवसर पर यीशु ने एक ही अंधे व्यक्ति को दृष्टि दी। मरकुस उसका नाम बरतिमाई (Bartimaeus) बताता है। *[Mark 10:46-52; Luke 18: 35-43]*

जक्कई (Zacchaeus)

यीशु यरीहो नगर में प्रवेश करके जब वहाँ से जा रहा था तो वहाँ जक्कई नामक एक धनी व्यक्ति था, जो कर वसूलने वालों का मुखिया था। वह यीशु को देखना चाहता था, परन्तु भीड़ के कारण वह देख नहीं पा रहा था, क्योंकि वह नाटा था। सो यीशु को देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर (sycamore) के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि यीशु को उसी मार्ग से होकर निकलना था। फिर जब यीशु उस जगह पर पहुँचा तो उसने ऊपर देखते हुए जक्कई से कहा, *"हे जक्कई, झट नीचे उतर आ, क्योंकि आज मुझे*

तेरे ही घर में ठहरना है।" वह झटपट नीचे उतरकर प्रसन्नता से उसे अपने घर ले जाने लगा। यह देखकर सब लोग बड़बड़ाने लगे और कहने लगे, *"यह तो एक पापी के घर अतिथि बनने जा रहा है।"* यह सुनकर जक्कई ने खड़े होकर यीशु से कहा, *"हे प्रभु, देख, मैं अपनी सारी सम्पत्ति का आधा हिस्सा कंगालों को देता हूँ, और यदि मैंनें अन्याय से किसी का कुछ ले लिया है तो उसे चौगुना करके लौटा देता हूँ।"* तब यीशु ने उससे कहा, *"आज इस घर में उद्धार आया है, क्योंकि यह व्यक्ति भी अब्राहम का एक पुत्र है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।" [Luke 19:1-10]*

परमेश्वर जो देता है उसका उपयोग करो

यीशु जब यरूशलेम के निकट था और वे सोचते थे कि परमेश्वर का राज्य जल्द ही प्रगट होनेवाला है तब उसने कहा, "एक कुलीन व्यक्ति राजा का पद प्राप्त करने किसी दूर देश को का रहा था, इसलिये उसने अपने दस सेवकों को बुलाकर हर एक को दस दस मुहरें (pounds) दीं और कहा, 'मेरे लौट आने तक इनसे व्यापार लेन-देन करो।' किन्तु उसके नगर के लोग उससे घृणा करते थे, इसलिये उन्होंने उसके पीछे यह कहने को दूतों को भेजा, 'हम नहीं चाहते कि यह हम पर राज करे।' पर जब वह राजपद पा कर वापस लौट आया तो उसने अपने सेवकों को जिन्हें उसने धन दिया था, अपने पास बुलवाया ताकि वह मालूम करे सके कि उन्होंने लेन-देन से क्या लाभ कमाया। तब पहले सेवक ने आकर कहा, 'हे स्वामी, तेरे मुहर से मैंनें दस और मुहरें कमाई हैं।' इस पर उसने कहा, 'बहोत अच्छा, उत्तम दास। तू विश्वास के योग्य निकला, अतः तू अब दस नगरों का अधिकारी होगा।' फिर दूसरे सेवक ने आकर कहा, 'हे स्वामी, तेरी मुहर से मैंनें पाँच और मुहरें कमाई हैं।' इस पर उसने कहा, 'तू भी पाँच नगरों पर अधिकार रखेगा।' फिर तीसरे ने आकर कहा, 'हे स्वामी, देख, यह रही तेरी मुहर, जिसे मैंने अँगोछे में बाँध कर कहीं रख दी थी। मैं तुझ से डरता था, क्योंकि तू एक कठोर

व्यक्ति है; तूने जो रखा नहीं उसे भी तू उठा लेता है, और जो तूने बोया नहीं, उसे भी तू काटता है।' इस पर स्वामी ने उससे कहा, 'हे दुष्ट सेवक, मैं तेरे ही शब्दों के आधार पर तेरा न्याय करूँगा। तू तो जानता ही है कि मैं मैंने जो नहीं रखा उसे भी उठा लेने वाला, और जो मैंने नहीं बोया, उसे भी काटने वाला कठोर व्यक्ति हूँ, तो तूने मेरा धन सर्राफों के पास क्यों जमा नहीं कराया ताकि जब मैं वापस आता तो ब्याज समेत उसे ले लेता?' फिर निकट खड़े लोगों से उसने उनसे कहा, 'वह मुहर उससे ले लो और जिसके पास दस मुहरें हैं उसे दे दो।' इस पर उन्होंने उससे कहा, 'हे स्वामी, उसके पास दस मुहरें तो हैं।' तब स्वामी ने कहा, 'मैं तुम से कहता हूँ कि प्रत्येक उस व्यक्ति को जिसके पास है, उसे और अधिक दिया जाएगा, और जिसके पास नहीं है, उससे जो उसके पास है वह भी छीन लिया जाएगा। परन्तु मेरे वे शत्रुओं को, जो नहीं चाहते कि मैं उन पर शासन करूँ, यहाँ लाकर मेरे सामने मार डालो'।" *[Luke 19:11-27]*

यरुशलेम में भव्य प्रवेश

यीशु और उसके अनुयायी जब यरूशलेम के पास जैतून पर्वत (Mount Olives) के निकट बैतफगे (Bethphage) पहुँचे तो यीशु ने अपने दो चेलों को यह आदेश देकर भेजा कि अपने ठीक सामने के गाँव में जाओ और वहाँ पहुँचते ही तुम्हें एक गदही बंधी हुई मिलेगी। उसके साथ उसका बछेरा भी होगा। उन्हें खोलकर मेरे पास ले आओ। यदि तुम से कोई कुछ कहे तो उससे कहना, *"प्रभु को इनकी आवश्यकता है। वह जल्दी ही इन्हें लौटा देगा।"* यह इसलिए हुआ कि भविष्यद्वक्ता का यह वचन पूरा हो: *"सिय्योन (Sion) की बेटी से कहो, 'देख, तेरा राजा तेरे पास आ रहा है। वह नम्र है और गदहे पर सवार है और बछेरे पर।'" (जकर्याह 9:9)*

चेलों ने जाकर, जैसा यीशु ने उनसे कहा था, वैसा ही किया। जब वे गदहे के बच्चे को खोल रहे थे तो उसके मालिकों ने उनसे पूछा, *"इस बच्चे को क्यों खोलते हो?"* तब उन्होंने कहा, *"प्रभु को इसकी जरूरत है।"* फिर वे गदही और उसके बछेरे को ले

आये, उन पर अपने वस्त्र डाल दिये, और उन्होंने यीशु को उन पर बैठाया। लोगों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछा दिये और दूसरे लोगों ने पेड़ों से टहनियाँ काटकर मार्ग में बिछा दी। जो लोग उनके आगे और पीछे चल रहे थे वे सब पुकार-पुकारकर कह रहे थे, *"होशन्ना! धन्य है दाऊद का पुत्र! धन्य है इस्राएल का राजा! जो प्रभु के नाम पर आ रहा है। धन्य है प्रभु!"* इस तरह जब उसने यरूशलेम में प्रवेश किया तो सारे नगर में हलचल मच गई। लोग पूछने लगे, *"यह कौन है?"* और लोग ही जवाब दे रहे थे, *"यह गलील के नासरत का नबी यीशु है।" [Matthew 21:1-11; Mark 11:1-10; Luke 19:28-38; John 12:12-19]*

यह सुनकर भीड़ में से कुछ फरीसियों ने उससे कहा, *"गुरु, अपने शिष्यों को मना कर।"* इस पर यीशु ने उत्तर दिया, *"मैं तुम में से कहता हूँ यदि ये चुप हो भी जायें तो ये पत्थर चिल्ला उठेंगे।" [Luke 19:39-40]*

यीशु का यरूशलेम पर रोना

जब उसने निकट आकर यरूशलेम नगर को देखा तो वह उस पर रो पडा। और बोला, *"क्या ही भला होता कि तू आज यह जानता कि शान्ति तुझे किससे मिलेगी, परन्तु वह अभी तेरी आँखों से ओझल हैं। वे दिन भी तुझ पर आएँगे जब तेरे शत्रु चारों ओर मोर्चा बाँधकर तुझे घेर लेंगे और चारों ओर से तुझ पर दबाव डालेंगे। वे तुझे और तेरे बालकों को मिट्टी में मिला देंगे। तेरी चारदीवारी के भीतर वे एक पत्थर पर दूसरा पत्थर नहीं रहने देंगे, क्योंकि जब परमेश्वर तेरे पास आया, तूने उस अवसर को नहीं पहचाना।" [Luke 19:41-44]*

यीशु यरुशलेम के मंदिर में

यरुशलेम में प्रवेश करते ही यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर मन्दिर के अहाते में जो लोग लेन-देन कर रहे थे, उन सब को बाहर खदेड़ दिया। उसने पैसों की लेन-देन करने वाले सर्राफों (money-changers) की मेज़ें और कबूतर बेचनेवालों की

चौकियाँ उलट दीं। वह उनसे बोला, *"शास्त्र में लिखा है, 'मेरा घर प्रार्थनाघर कहलाएगा', परन्तु तुमने इसे डाकुओं का अड्डा बना दिया है।"*

मन्दिर में कुछ अंधे, लूले लँगड़े उसके पास आये और उसने उन्हें चंगा कर दिया। परन्तु जब प्रमुख याजकों और धर्म-शास्त्रियों ने यीशु के इन अद्भुत कामों (चमत्कारों) को देखा और लड़कों को मन्दिर में *'दाऊद के पुत्र को होशन्ना'* पुकारते हुए देखा, तो वे बहुत क्रोधित हुए, और यीशु से पूछा, *"क्या तू सुनता है कि ये क्या कह रहे हैं?"* यीशु ने उनसे कहा, *"हाँ, सुनता हूँ। क्या शास्त्र में तुम लोगों ने यह नहीं पढ़ाः 'तूने बालकों और दूध पीते बच्चों तक के मुँह से स्तुति करवाई है?'"* फिर उन्हें वहीं छोड़ कर यीशु यरुशलेम नगर के बाहर बैतनिय्याह (Bethany) को गया और उसने वहाँ रात बिताई। *[Matthew 21:12-17; Mark 11:15-17; Luke 19:45-48; John 2:13-22]*

(मरकुस के सुसमाचार के अनुसार, यरुशलेम में प्रवेश कर यीशु मंदिर में गया और वहाँ चारों ओर का माहौल देखा, परंतु शाम को बहोत देर हो चुकी थी, इसलिए वह अपने शिष्यों के साथ बैतनिय्याह चला गया और वहाँ रात बिताई। अगले दिन यरुशलेम जाकर यीशु ने मंदिर में उथल-पुथल मचा दी और बैतनिय्याह वापस आ गया। Mark 11:11)

अंजीर का पेड़ और विश्वास की शक्ति

अगले दिन सुबह जब यीशु यरुशलेम नगर को वापस लौट रहा था तो उसे भूख लगी। सड़क के किनारे उसने अंजीर (fig) का एक हरा भरा पेड़ देखा, सो वह उसके पास गया, पर उसे उस पर पत्तों के सिवा और कुछ नहीं मिला, क्योंकि अंजीरों की ऋतु नहीं थी। सो उसने पेड़ से कहा, *"अब से तुझ में फिर कभी फल नहीं लगेगे।"* और वह अंजीर का पेड़ तुरन्त सुख गया! यह देखकर चेलों ने अचरज से पूछा, *"यह अंजीर का पेड़ तुरन्त कैसे सूख गया?"* यीशु ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, *"मैं तुम से सत्य कहता*

हूँ। यदि तुम विश्वास रखो और सन्देह न करो, तो तुम न केवल वह कर सकते हो जो मैंने इस अंजीर के पेड़ से किया, बल्कि यदि तुम इस पहाड़ से कहो कि 'उखड़ जा और अपने आप को समुद्र में डुबो दे', तो वही हो जाएगा। और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से माँगोगे वह सब तुम को मिलेगा।" [Matthew 21:18-22; Mark 11:12-14, 20-24]

यहूदी नेताओं का यीशु के अधिकार पर संदेह

जब यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश दे रहा था तो प्रमुख याजकों, शास्त्रियों और यहूदी बुजुर्गों (elders) ने उसके पास जाकर पूछा, *"ऐसी बातें तू किस के अधिकार से करता है? और तुझे यह अधिकार किस ने दिया है?"* यीशु उत्तर देते हुए कहा, *"मैं भी तुमसे एक प्रश्न पूछता हूँ। यदि उसका उत्तर तुम मुझे दे दो तो मैं भी तुम्हें बताऊँगा कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूँ। बताओ यूहन्ना का बपतिस्मा कहाँ से मिला? स्वर्ग (परमेश्वर) की ओर से या मनुष्यों की ओर से था?"* तब वे आपस में विचार करने लगे, *"यदि हम कहें कि 'स्वर्ग (परमेश्वर) की ओर से' तो वह हम से पूछेगा, 'फिर तुमने उस पर विश्वास क्यों न किया?', किन्तु यदि हम कहें 'मनुष्यों की ओर से' तो हमें लोगों का डर है; वे हमें पत्थराव करेंगे, क्योंकि वे यूहन्ना को नबी मानते हैं।"* अतः उत्तर में उन्होंने यीशु से कहा, *"हम नहीं जानते।"* इस पर यीशु ने भी उनसे कहा, *"अच्छा, तो फिर मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि ये काम/बातें मैं किस अधिकार से करता हूँ।" [Matthew 21:23-27; Mark 11:27-33; Luke 20:1-8]*

यहूदियों के लिए एक दृष्टांत-कथा

तब यीशु लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा, "अच्छा बताओ तुम लोग इसके बारे में क्या सोचते हो? एक व्यक्ति के दो पुत्र थे। वह पहले पुत्र के पास जाकर बोला, *'पुत्र, आज मेरी दाख की बारी में जा और काम कर।'* किन्तु उसने उत्तर दिया, *'मैं नहीं*

जाऊँगा', परन्तु बाद में उसने अपना मन बदल दिया और चला गया। फिर उसने दूसरे पुत्र के पास जाकर ऐसा ही कहा। उत्तर में पुत्र ने कहा, *'जी हाँ, जाता हूँ'*, परन्तु गया नहीं। तह यीशु ने पूछा, *"बताओ इन दोनों में से किस ने पिता की इच्छा पूरी की?"* उन्होंने कहा, *"पहले ने।"* यीशु ने उनसे कहा, *"मैं तुम से सच कहता हूँ कि चुंगी (कर) लेनेवाले और वेश्याएँ (harlots) परमेश्वर के राज्य में तुम से पहले प्रवेश करेंगे। क्योंकि यूहन्ना तुम्हें धार्मिकता का सही मार्ग दिखाने तुम्हारे पास आया, और तुमने उस पर विश्वास नहीं किया, पर चुंगी लेनेवालों और वेश्याओं ने उसका विश्वास किया। तुम यह देखकर बाद में भी न पछताए और न उस पर विश्वास किया।" [Matthew 21:28-32]*

परमेश्वर का अपने पुत्र को भेजना

"एक और दृष्टान्त सुनो: एक जमींदार था, जिसने दाख की बारी (vineyard) लगाई थी और उसके चारों ओर बाड़ (fence) लगा दी। फिर उसने दाख का रस निकालने का गरठ (winepress) लगाने को एक गढा खोदा और रखवाली के लिए एक मीनार बनायी। फिर किसानों को उसका ठेका देकर वह परदेश चला गया। जब दाख उतारने का समय आया तो उसने किसानों के पास अपने दास भेजे ताकि वे अपने हिस्से की दाख ले आयें। पर किसानों ने उसके दासों को पकड़ के किसी को पीटा, किसी पर पत्थराव किया और किसी को मार डाला। एक बार फिर उसने पहले से अधिक दासों को भेजा। उन किसानों ने उनसे भी वैसा ही वर्ताव किया। अन्त में उसने अपने पुत्र को किसानों के पास यह सोचकर भेजा कि वे मेरे पुत्र का मान रखेंगे ही। परन्तु वे किसान उसके पुत्र को देखकर आपस में कहने लगे, 'यह तो उसका वारिस (heir) है। आओ, इसे मार डालें और उसकी विरासत हथिया लें।' सो उन्होंने उसे पकड़ कर बगीचे से बाहर निकालकर मार डाला।"

"तुम क्या सोचते हो जब दाख की बारी का स्वामी आएगा तो उन किसानों के साथ क्या करेगा?"

उन्होंने उससे कहा, *"वह उन बुरे लोगों का बेरहमी से नाश करेगा, और दाख की बारी का ठेका किसी दूसरे किसानों को दे देगा, जो समय पर उसे उसका हिस्सा दिया करेंगे।"*

"इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर का राज्य तुमसे छीन लिया जाएगा और वह उन लोगों को दे दिया जाएगा जो उसके राज्य के अनुसार वर्ताव करेंगे।"

जब प्रमुख याजकों और फरीसियों ने यीशु की दृष्टान्त-कथाएँ सुनी तो वे ताड़ गए कि वह उन्हीं के विषय में कह रहा था। सो उन्होंने उसे पकड़ना चाहा, परन्तु वे लोगों से डरते थे, क्योंकि लोग यीशु को नबी मानते थे। *[Matthew 21:33-46; Mark 12:1-12; Luke 20:9-19]*

विवाह भोज की दृष्टान्त-कथा

फिर एक बार यीशु उनसे दृष्टान्तों में कहने लगा। उसने कहा:

"स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जिसने अपने बेटे के विवाह पर दावत दी। राजा ने अपने दासों को निमंत्रित लोगों को विवाह के भोज में बुला लाने को भेजा, परन्तु वे लोग नहीं आये।

राजा ने फिर दासों को यह कहकर भेजा, 'निमंत्रित लोगों से कहो: देखो, मैं भोज तैयार कर चुका हूँ। मेरे बैल और मोटे ताजे पशुओं को काटा जा चुका है। सब कुछ तैयार है। विवाह के भोज में आओ।' पर लोगों ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और चल दिए: कोई अपने खेत में काम करने तो कोई अपने व्यापार पर। कुछ लोगों ने तो राजा के दासों को पकड़ कर उनका अनादर किया और मार डाला। सो राजा ने क्रोध

में आकर अपने सैनिक भेजकर उन हत्यारों को नाश किया और उनके नगर को फूँक दिया।

फिर राजा ने अपने दासों से कहा, 'विवाह भोज तो तैयार है, परन्तु निमंत्रित लोग अयोग्य सिद्ध हुए। इसलिए चौराहों पर जाओ और जितने लोग तुम्हें मिलें उन सब को विवाह भोज में बुला लाओ।' अतः दासों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे, क्या भले, जो भी मिले उन सब को बुला लाये और विवाह का स्थल अतिथियों से भर गया। किन्तु जब राजा अतिथियों के देखने आया तो वहाँ उसने एक ऐसा व्यक्ति देखा जिसने विवाह के वस्त्र नहीं पहने थे। राजा ने उससे पूछा, 'हे मित्र; तू विवाह के वस्त्र पहने बिना यहाँ क्यों आ गया?' पर वह व्यक्ति चुप रहा। इस पर राजा ने अपने सेवकों से कहा, 'इसके हाथ-पाँव बाँध कर उसे बाहर अंधियारे में फेंक दो।' क्योंकि बुलाए तो बहुत गये है, पर चुने हुए थोड़े हैं।" *[Matthew 22:1-14; Luke 14:15-24]*

यहूदी नेताओं की चाल

तब फरीसियों ने जाकर आपस में विचार किया, ताकि यीशु को उसकी अपनी ही कही किसी बात में फँसाया जा सके और उसे राज्यपाल के हाथ में सौंप सके।। अतः उन्होंने अपने चेलों को हेरोदियों (Herodians) के साथ यीशु के पास भेजा। उन लोगों ने यीशु से कहा, *"हे गुरु, हम जानते हैं कि तू सच्चा है और सचमुच परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा देता है। तू किसी का पक्षपात नहीं करता और कोई क्या सोचता है, तू इसकी चिंता नहीं करता। सो हमें बता कि सम्राट कैसर (Caesar) को कर देना उचित है या नहीं? हम उसे कर चुकाये या न चुकायें?"*

यीशु उनकी दुष्टता ताड़ गया और कहा, *"हे कपटियों, मुझे क्यों परखते हो? मुझे कोई सिक्का दिखाओ जिससे तुम कर चुकाते हो।"*

तब वे उसके पास एक दीनार (penny) ले आए।

दीनार का सिक्का दिखाते हुए यीशु ने उनसे पूछा, *“इस पर किसका चेहरा और नाम अंकित है?”*

उन्होंने कहा, *“कैसर का।”*

तब यीशु ने उनसे कहा, *“तो जो सम्राट कैसर का है, वह सम्राट कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।”*

यह सुनकर वे अचरज से भर गये और उसे छोड़ कर वहाँ से चले गए। *[Matthew 22:15-22; Mark 12:13-17; Luke 20:20-26]*

सदूकियों की चाल

उसी दिन कूछ सदूकी (जो मरे हुओं के पुनरुत्थान/पुनर्जीवन - resurrection में नहीं मानते) यीशु के पास आए और उससे पूछा, *“हे गुरु, मूसा ने कहा था कि ‘यदि कोई पुरुष बिना सन्तान मर जाए तो उसका भाई उसकी विधवा पत्नी से विवाह कर अपने भाई का वंश बढाने के लिये संतान पैदा करे।’ अब मानो हम सात भाई थे। पहला विवाह करके मर गया और सन्तान न होने के कारण अपनी पत्नी को अपने भाई के लिये छोड़ गया। इसी प्रकार दूसरे और तीसरे ने भी किया, और सातों तक यही हुआ और सब के बाद वह स्त्री भी मर गई। अतः पुनः जी उठने पर / अगले जीवन में वह उन सातों में से किसकी पत्नी होगी, क्योंकि वह सब की पत्नी हो चुकी थी।”* इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, *“तुम शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ्य नहीं जानते, इस कारण भूल करते हो। पुनः जी उठने पर / पुनर्जीवन में लोग न तो विवाह करेंगे और न ही कोई विवाह में दिया जायेगा, बल्कि वे स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों (angels) के समान होंगे। मरे हुओं के जी उठने/पुनरुत्थान के विषय में परमेश्वर का यह वचन तुमने नहीं पढ़ा: ‘वह मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवितों का परमेश्वर है?’”*

यह सुनकर लोग उसके उपदेश से चकित हुए। *[Matthew 22:23-33; Mark 12:18-27; Luke 20:27-40]*

सबसे बड़ी आज्ञा

जब फरीसियों ने सुना कि यीशु ने अपने उत्तर से सदूकियों का मुँह बन्द कर दिया है तो वे सब इकट्ठे हुए, और उनमें से एक व्यवस्थापक (lawyer) ने यीशु को फँसाने के उद्देश्य से उससे पूछा, *"हे गुरु, व्यवस्था (law) में सबसे बड़ी आज्ञा (commandment) कौन सी है?"* यीशु ने उससे कहा, *"तू परमेश्वर से अपने सम्पूर्ण मन से, सम्पूर्ण आत्मा से और अपनी सम्पूर्ण बुद्धि से प्रेम रख।' सबसे मुख्य और सबसे बड़ी आज्ञा तो यही है। ऐसी ही दूसरी आज्ञा है 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।' ये ही दो आज्ञाएँ है जो सारी व्यवस्था एवं भविष्यद्वक्ताओं का आधार है।" [Matthew 22:34-40; Mark 12: 28-34; Luke 10:25-28]*

सच्चा दान

फिर यीशु ने आँखें उठाकर देखा कि धनी लोग दान पात्र में अपना-अपना दान डाल रहे है। तभी उसने एक कंगाल विधवा को भी उसमें ताँबे के दो छोटे छोटे सिक्के डालते हुए देखा। तब उसने कहा, *"मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि दूसरे सभी लोगों से इस गरीब विधवा अधिक दान दिया है। यह मैं इसलिये कहता हूँ क्योंकि इन सब लोगों ने अपने उस धन में से जिसकी उन्हें आवश्यकता नहीं थी, दान दिया, परन्तु इस विधवा ने गरीब होते हुए भी जीवित रहने के लिए जो कुछ उसके पास था, सब कुछ डाल दीया।" [Luke 21:1-4]*

यीशु का फरीसियों से एक प्रश्न

जब फरीसी अभी इकट्ठे ही थे, कि यीशु ने उनसे पूछा, *"मसीह (Christ) के बारे में तुम क्या समझते हो? वह किसका पुत्र है?"* उन्होंने कहा, *"दाऊद का।"* यीशु ने

उनसे पूछा, *"फिर आत्मा से प्रेरित दाऊद ने उसे 'प्रभु' क्यों कहा था?" (प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, 'तू मेरे दाहिने हाथ बैठ जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे अधिन न कर दूँ।' - भ.सं. 110:1) भला, जब दाऊद ने उसे 'प्रभु' कहा तो वह उसका पुत्र कैसे हो सकता है?"* इस के उत्तर में कोई भी उससे कुछ नहीं कह सका। और न ही उस दिन के बाद किसी को उससे कुछ और पूछने का साहस ही हुआ। *[Matthew 22:41-46; Mark 12:35-37; Luke 20:41-44]*

यीशु द्वारा यहूदी धर्मनेताओं की आलोचना

यीशु ने फिर भीड़ और अपने चेलों से कहा, *"शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं (मूसा के विधान की व्याख्या के अधिकारी है), इसलिए वे तुम से जो कुछ कहें वह करना और मानना, परन्तु जो वे करते है वह मत करना, क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं। वे लोगों के कंधों पर इतना भारी बोझ लाग देते है कि वे उसे उठाकर चल ही नहीं सकते, किन्तु वे स्वयं उस बोझ को अपनी उँगली से भी सरकाना नहीं चाहते। वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिये करते हैं। वे अपने तावीजों (phylacteries) को और अपने वस्त्रों की झालरों (fringes) को बडे से बडा करते है (ताकि लोग उन्हें धर्मात्मा समझें)। उन्हें उत्सवों में मुख्य-मुख्य स्थान और आराधनालयों में मुख्य-मुख्य आसन चाहिए। वे चाहते है कि बाजारों में लोग उन्हें आदरपूर्वक 'नमस्कार' करें और लोग उन्हें 'रब्बी' कहकर संबोधित करें।*

"परन्तु तुम लोगों से अपने आप को 'रब्बी' न कहलवाना, क्योंकि तुम्हारा सच्छा गुरु तो बस एक ही है, और तुम सब भाई हो। पृथ्वी पर तुम किसी को भी 'पिता' न कहना, क्योंकि तुम्हारा पिता तो बस एक ही है, जो स्वर्ग में है। न ही लोगों को तुम अपने को स्वामी कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात् मसीह। तुममें सबसे बड़ा वही होगा जो तुम्हारा सेवक बनेगा। जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा (उठायेगा), उसे छोटा किया (नवा दिया) जाएगा, और जो कोई अपने आप को छोटा

बनाएगा (नवाएगा), उसे बड़ा किया (उठाया) जाएगा। [Matthew 23:1-12; Mark 12:38-39; Luke 11:43, 46; 20:45-46]

"हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों! तुम पर हाय! (Woe unto you / तुम्हें धिक्कार है) तुम लोगों के लिए स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते हो। न तो आप उसमें प्रवेश करते हो और न ही उनको जाने देते हो जो प्रवेश के लिए प्रयत्न कर रहे है।

"हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम किसी एक जन को अपने पंथ में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह तुम्हारे पंथ में आ जाता है तो तुम उसे अपने से भी दुगुना नारकीय बना देते हो।

"हे अंधे रहनुमाओं! तुम पर हाय, जो कहते हो कि यदि कोई मन्दिर की सौगंध खाता है तो कुछ नहीं (तो उसे उस शपथ को रखना आवश्यक नहीं), परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की शपथ खाता है तो वह उससे बन्ध जाता है। हे अंधे मूर्खों, बड़ा कौन है, मन्दिर का सोना या वह मन्दिर जो सोने को पवित्र करता है?

"तुम यह भी कहते हो 'यदि कोई वेदी की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु यदि वेदी पर रखे चढावे की शपथ खाए तो वह अपनी शपथ से बन्ध जाएगा।' हे अंधों, कौन बड़ा है, भेंट या वह वेदी जिससे भेंट पवित्र होती है?

"इसलिए जो वेदी की शपथ खाता है, वह उसकी और जो कुछ उस पर है उसकी भी शपथ खाता है। और जो मन्दिर की शपथ खाता है, वह मन्दिर के साथ साथ जो मन्दिर के भीतर है उसकी भी शपथ खाता है। और वह जो स्वर्ग की शपथ लेता है, वह परमेश्वर के सिंहासन के साथ जो उस सिंहासन पर विराजमान है उसकी भी शपथ लेता है।

"हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम्हारा जो कुछ है, तुम उसका दसवाँ भाग, यहाँ तक कि पुदिने, सौंफ और जीरे तक का दसवाँ भाग परमेश्वर को देते

हो, परन्तु तुमने व्यवस्था की गम्भीर बातों अर्थात् न्याय, दया और विश्वास को छोड़ दिया है। चाहिये था कि तुम इन्हें भी करते रहते।

"हे अंधे रहनुमाओं, तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊँट को निगल जाते हो।

"हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम अपने कटोरे और थाली को ऊपर-ऊपर से तो माँजते हो, परन्तु वे भीतर अंधेर असंयम से भरे हुए हैं। हे अंधे फरीसी, पहले अपने कटोरे और थाली को भीतर से माँज ताकि वे बाहर से भी स्वच्छ हों जाये।

"हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम लिपी-पुती कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। ऐसे ही तुम भी ऊपर से धार्मिक दिखाई देते हो, परन्तु भीतर छलकपट और बुराई से भरे हुए हो। [Matthew 23:13-28; Luke 11:39-42, 44, 52]

"हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम नबियों की कब्रें बनाते हो और धर्मात्माओं की कब्रें संवारते हो। और कहते हो कि 'यदि हम अपने पूर्वजों के समय में होते तो नबियों की हत्या में हम उनके सहभागी न होते।' इससे तो तुम अपने पर आप ही गवाही देते हो कि तुम नबियों के हत्यारों की सन्तान हो। अतः तुम अपने पूर्वजों के पाप का घड़ा भर दो।

"हे साँपो, हे करैतों के बच्चों, तुम नरक के दण्ड से कैसे बचोगे? इसलिए देखो, मैं तुम्हारे पास नबियों, बुद्धिमानों और शास्त्रियों को भेजता हूँ, पर तुम उनमें से कुछ को मार डालोगे, कुछ को क्रूस पर चढ़ाओगे, और कुछ को अपने आराधनालयों में कोड़े मारोगे और एक नगर से दूसरे नगर में खदेड़ते फिरोगे। [Matthew 23:29-34; Luke 11: 47-50]

"हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू वह है जो नबियों को मार डालता है परमेश्वर के भेजे दूतों पर पत्थराव करता है! मैंनें कितनी ही बार चाहा कि जैसे मुर्गी अपने चूजों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा कर लेती है वैसे ही मैं भी तेरे बच्चों को एकत्र कर लूँ, किन्तु तुम लोगों ने नहीं चाहा। अब तेरा मंदिर पूरी तरह उजड़ जायेगा। मैं तुम्हें सच कहता हूँ कि तुम मुझे तब तक फिर कभी न देखोगे जब तक तुम यह नहीं कहोगे: 'धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है'।" [Matthew 23:37-39; Luke 13:34-35]

यीशु द्वारा मन्दिर के विनाश की भविष्यवाणी

मन्दिर को छोड कर यीशु जब वहाँ से जा रहा था, तो उसके चेले उसे मन्दिर के भवन दिखाने के लिये उसके पास आए। इस पर यीशु ने उनसे कहा, *"क्या तुम इन भवनों को नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूँ, वे दिन भी आएँगे जब यहाँ एक पत्थर पर दूसरा पत्थर टिका नहीं रह पाएगा। एक एक पत्थर ढहा दिया जाएगा।" [Matthew 24:1-2; Mark 13:1-2; Luke 21:5-6]*

संकट और क्लेश

यीशु जब जैतून पर्वत (Mount Olives) पर बैठा था तो एकांत में चेलों ने उसके पास आकर पूछा, *"हमें बता कि ये सब बातें कब घटेगी? और तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?"* उत्तर में यीशु ने कहा, *"सावधान रहो! कोई तुम्हें छलने न पाए। क्योंकि ऐसे बहुत से मेरे नाम से आयेंगे और कहेंगे, 'मैं मसीह हूँ', और बहुतों को छलेंगे। तुम युद्धों की चर्चा और अफवाहें सुनोगे, पर घबराना मत, क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु अभी अन्त नहीं आया है। क्योंकि राष्ट्र के विरुद्ध राष्ट्र और राज्य के विरुद्ध राज्य खडा होगा, और जगह-जगह अकाल पड़ेंगे और भूकम्प होंगे। ये सब बातें तो पीड़ाओं का आरम्भ ही होंगा। उस समय तुम्हें दण्ड दिलाने के लिये वे तुम्हें पकड़वाएँगे और मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम घृणा रखेंगे। उस समय बहुत से लोगों का मोह टूट जायेगा। वे एक दूसरे को*

पकड़वाएँगे और परस्पर घृणा करेंगे। बहुत से झूठे नबी उठ खड़े होंगे, और बहुतों को ठगेंगे। अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा, परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। स्वर्ग के राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में सब जातियों को साक्षी के रूप में सुनाया जाएगा, तभी अन्त आएगा।" [Matthew 24:3-14; Mark 13:3-13, Luke 21:7-19]

महासंकट का आरम्भ

"इसलिए जब तुम लोग उस विनाशकारी वस्तु को, जिसका उल्लेख नबी दानिय्येल (Daniel) द्वारा किया गया है, मंदिर के पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो, तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएँ। जो छत पर हो वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरे और जो खेत में काम कर रहा हो वह पीछे मुड कर अपने वस्त्र तक न ले। उन दिनों जो स्त्री जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी वे कष्ट भोगेगी। प्रार्थना करो कि तुम्हें जाड़े के दिनों में या सब्त के दिन भागना न पड़े। क्योंकि उस समय ऐसी विपत्ति आयेगी जैसी जगत के आरम्भ से अब तक नहीं आयी है और न कभी आयेगी। यदि विपत्ति के वे दिन घटाए नहीं जायेंगे तो कोई प्राणी नहीं बचेगा, परन्तु चुने हुओं (the elect) के कारण वे दिन घटाए जाएँगे। उस समय यदि कोई तुमसे कहे कि 'देखो, मसीह यहाँ हैं! या वहाँ है!' तो उसका विश्वास मत करना, क्योंकि उस समय झूठे मसीह और झूठे नबी खड़े होंगे और बड़े बड़े चमत्कार दिखाएँगे कि यदि हो सके तो वे चुने हुओं को भी भरमा दें। देखो, मैंने तुम्हें पहले से ही यह सब कुछ बता दिया है, इसलिए यदि वे तुमसे कहें, 'देखो, वह जंगल में है', तो बाहर न निकल जाना और यदि वे कहें, 'देखो, वह उन कोठरियों में हैं', तो उनका विश्वास मत करना। क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी प्रकट होगा। जहाँ कहीं लाश होगी वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे।" [Matthew 24:15-28; Mark 13:14-23, Luke 21:20-24]

मनुष्य के पुत्र के पुनरागमन के संकेत

"उन दिनों की मुसीबत बाद तुरन्त सूर्य काला पड़ जाएगा, चाँद का प्रकाश जाता रहेगा, आसमान से तारे गिर पड़ेंगे और आकाश की शक्तियाँ झकझोर दी जाएँगी। तब मनुष्य के पुत्र के आने चिन्ह आकाश में दिखाई देगा और तब पृथ्वी पर सब जातियों के लोग छाती पीटेंगे, और वे मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। वह तुरही (trumpet) बजाते हुए अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेंगे।" [Matthew 24:29-31; Mark 13:24-27; Luke 21:25-28]

अंजीर के पेड़ का उदहरण

"जब उसकी डालीयाँ कोमल हो जाती और कोंपलें फूटने लगती है, तो तुम जान जाते हो कि ग्रीष्मकाल निकट है। इसी तरह जब तुम इन सब बातों को घटित होते हुए देखो तो समझ लेना कि वह समय निकट आ गया है, वरन् ठीक द्वार तक आ पहुँचा है। मैं तुम लोगों से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा (अर्थात् इस पीढ़ी के लोगों के जीते जी ही यह सब होगा)। आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।" [Matthew 24:32-35; Mark 13:28-31; Luke 21:29-31]

केवल परमेश्वर जानता है कि वह समय कब आएगा

"उस दिन और उस घड़ी के बारे में कोई नहीं जानता। न स्वर्ग के दूत, और न स्वयं पुत्र, परन्तु केवल परम पिता जानता है। इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा। जब तुम सोच भी नहीं रहे होंगे, उसी समय मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।" [Matthew 24:36-44; Mark 13:32-37; Luke 17:26-30, 34-36]

भरोसेमंद सेवक

सोचो वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है, जिसे स्वामी ने अपने घर के नौकर-चाकरों के उपर उचित समय उन्हें भोजन देने के लिए लगाया है? धन्य है वह दास जिसे उसका स्वामी जब आता है तो उसका कर्तव्य करते पाता है। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वह स्वामी उसे अपनी समूची संपत्ति का अधिकारी बना देगा। परन्तु दूसरी तरफ एक दुष्ट दास है जो अपने मन में सोचता है कि मेरे स्वामी के आने में अभी देर है, और वह अपने साथी दासों को पीटने लगता है और पियक्कड़ों के साथ खाना पीना शुरू कर देता है तो उसका स्वामी ऐसे दिन आ जाएगा जिस दिन वह उसके आने की सोचता तक नहीं, और उसे कठोर दण्ड देकर उसका स्थान कपटियों के साथ निश्चित करेगा, जहाँ बस लोग रोते होंगे और दाँत पीसते होंगे। *[Matthew 24:45-51; Luke 12:41-47]*

दूल्हा और दस कन्याओं की दृष्टांत-कथा

"स्वर्ग का राज्य उन दस कन्याओं के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकलीं। उनमें पाँच समझदार और पाँच मूर्ख थीं। मूर्ख कन्याओं ने अपनी मशालें तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया। उधर समझदार कन्याओं ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया। जब दुल्हे को आने में देर हो रही थी तो वे सब उँघने लगीं और सो गई। जब आधी रात को धूम मच गई कि 'देखो, दूल्हा आ रहा है, उससे मिलने के लिये बाहर चलो।' तब वे सभी कन्याएँ उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं। मूर्ख कन्याओं ने समझदार कन्याओं से कहा, 'अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझ रही हैं।' परन्तु समझदार कन्याओं ने कहा, 'नहीं, यदि हम तुमको तेल दे तो तेल न हमारे काफी होगा और न तुम्हारे लिये। सो तुम तेल बेचनेवाले के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो। जब वे मोल लेने जा रही थीं कि दूल्हा आ पहुँचा। सो वे कन्याएँ जो तैयार थीं, उसके साथ

विवाह के स्थल पर चलीं गई और फिर किसी ने द्वार बन्द कर दिया। आखिरकार वे दूसरी कन्याएँ कुँवारियाँ भी वापस आ गई और कहने लगीं, 'स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिये द्वार खोलो।' किन्तु उसने उत्तर देते हुए कहा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता।' इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस समय को, जब मनुष्य का पुत्र लौटेगा।" *[Matthew 25:1-13]*

तीन दासों की दृष्टांत-कथा

"स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान होगा जिसने किसी दूर के देश की यात्रा पर जाते समय अपने दासों को बुलाकर अपनी संपत्ति उनको सौंप दी। उसने हर एक दास को उसकी सामर्थ्य के अनुसार एक को पाँच तोड़ (talents / थैलियाँ), दूसरे को दो, और तीसरे को एक दिया और वह परदेश चला गया। जिसको पाँच तोड़े मिले थे उसने तुरन्त जाकर उनसे लेन-देन किया और पाँच तोड़े और कमाए। ऐसे ही जिसको दो तोड़े मिले थे उसने भी दो और कमाए। पर जिसको एक मिला था उसने जाकर जमीन में खड्डा खोदा और अपने स्वामी के धन को छिपा दिया। बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी वापस आया और हर एक से लेखा जोखा लेने लगा। जिसको पाँच तोड़े मिले थे उसने पाँच तोड़े और लाकर कहा, 'हे स्वामी, तूने मुझे पाँच तोड़े सौंपे थे, देख मैंने पाँच तोड़े और कमाए हैं।' स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश! तुम विश्वासयोग्य अच्छे दास हो। मैं तुझे और अधिक वस्तुओं का अधिकारी बनाऊँगा। भीतर जा और अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।' फिर जिसको दो तोड़े मिले थे उसने भी आकर कहा, 'हे स्वामी तूने मुझे दो तोड़े सौंपें थे। देख, मैंने दो तोड़े और कमाए है।' स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश! तुम विश्वासयोग्य अच्छे दास हो। मैं तुझे और अधिक वस्तुओं का अधिकारी बनाऊँगा। भीतर जा और अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।' फिर जिसको एक तोड़ा मिला था उसने आकर कहा, 'हे स्वामी, मैं जानता हूँ कि तू बहुत कठोर व्यक्ति है। तू वहाँ काटता है जहाँ तूने बोया नहीं, और जहाँ तूने कोई बीज डाला

नहीं वहाँ फसल बटोरता है। इसलिए मैं डर गया और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया। यह ले जो तेरा है वह रहा, ले ले।' तब स्वामी ने उसे कहा, 'हे दुष्ट और आलसी दास, जब तू यह जानता था कि जहाँ मैंने नहीं बोया वहाँ से मैं काटता हूँ और जहाँ मैंने नहीं छींटा वहाँ से मैं बटोरता हूँ तो तुझे चाहिए था कि मेरा धन सर्राफों को दे देता। फिर जब मैं वापस आता तो अपना धन ब्याज समेत ले लेता।'

इसलिए यह तोड़ा उससे ले लो और जिसके पास दस तोड़े हैं उसको दे दो। क्योंकि हर उस व्यक्ति को, जिसने जो कुछ उसके पास था उसका सही उपयोग किया, अधिक दिया जाएगा, किन्तु उससे, जिसने जो कुछ उसके पास था उसका सही उपयोग नहीं किया, सब कुछ छीन लिया जाएगा। सो उस निकम्मे दास को बाहर अंधेरे में डाल दो जहाँ लोग रोते है और दाँत पीसते है। *[Matthew 25:14-30]*

मनुष्य का पुत्र सबका न्याय करेगा

"मनुष्य का पुत्र जब सभी स्वर्गदूतों के साथ अपनी (स्वर्गिक) महिमा में आएगा और अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा तो सब जातियाँ (nations) उसके सामने इकट्ठी की जाएँगी और वह एक को दूसरे से वैसे ही अलग करेगा जैसे एक गड़रिया अपनी बकरियों से भेड़ों को अलग करता है। वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर रखेगा और बकरियों को बाईं ओर खड़ी करेगा। फिर वह राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, 'हे मेरे पिता से आशीष पाये धन्य लोगों, आओ और उस राज्य का अधिकार लो जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है। क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी पिलाया; मैं एक अपरिचित था और तुमने मुझे अपने घर में ठहराया; मैं नंगा था और तुमने मुझे कपड़े पहनाए; मैं बीमार था और तुमने मेरी सुधि ली; मैं बन्दीगृह में था और तुम मुझसे मिलने आए।' तब वे धार्मिक (the righteous) उसको पूछेंगे, 'हे प्रभु, हमने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या प्यासा देखा और पानी पिलाया? हमने कब तुझे अपरिचित

देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा, और कपड़े पहनाए? हमने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझ से मिलने आए?' तब राजा उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुमसे सच कहता हूँ कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों (अनुयायियों) में से किसी एक के लिये भी कुछ किया तो वह तुमने मेरे ही लिये किया किया।' फिर वह राजा अपनी बाईं ओर वालों से कहेगा, 'हे श्रापित लोगों, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को नहीं दिया; मैं प्यासा था, और तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया; मैं अपरिचित था, और तुमने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था, और तुमने मुझे कपड़े नहीं पहनाए; मैं बीमार और बन्दीगृह में था, और तुमने मेरी सुधि न ली।' तब वे उससे पूछेंगे, 'हे प्रभु, हमने तुझे कब भूखा, या प्यासा, या अपरिचित, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा न की?' वह उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो तुमने मेरे इन छोटे से छोटों (अनुयायियों) में से किसी एक के लिए भी कुछ नहीं किया तो वह तुमने मेरे लिए भी नहीं किया।' फिर ये बुरे लोग अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" [Matthew 25:31-46]

अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी

यह सब कह चुकने के बाद, यीशु अपने चेलों से कहने लगा, *"दो दिन के बाद फसह पर्व (Passover) है, और मनुष्य का पुत्र (शत्रुओं के हाथों) क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा।" [Matthew 26:1-2]*

कुछ यूनानी लोग यीशु से मिलना चाहते है

जो लोग फसह पर्व पर आराधना करने आए थे उनमें से कुछ यूनानी भी थे। उन्होंने बैतसैदा के फिलिप्पुस के पास जाकर उससे विनती की, *"महोदय, हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं।"* तब फिलिप्पुस जाकर अन्द्रियास से कहा और अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने यीशु के पास जाकर कहा। *[John 12:20-22]*

इस पर यीशु ने उनसे कहा, *''मनुष्य के पुत्र के महिमावान होने का समय आ गया है। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, तब तक वह एक ही रहता है, परन्तु जब मर जाता है तो अनगिनत दानों को जन्म देता है। जिसे अपने प्राण प्रिय है, वह उसे खो देता है, किन्तु जो इस जगत में अपने प्राण से घृणा करता है वह उसे अनन्त जीवन के लिये रखेगा। यदि कोई मेरी सेवा करता है तो वह मेरा अनुसरण करे और जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा सेवक भी रहेगा। यदि कोई मेरी सेवा करता है तो परम पिता उसका आदर करेगा। [John 12:23-26]*

यीशु का जी घबराना

''अब मेरा जी घबरा रहा है। अब क्या मैं कहूँ? 'हे पिता, मुझे इस दुख की घड़ी से बचा?' परन्तु इसी घड़ी के लिए तो मैं आया हूँ। हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।'' तब यह आकाशवाणी हुई, *''मैंने इसकी महिमा की है और मैं इसकी महिमा फिर करूँगा।''* तब वहाँ मौजूद लोगों से यीशु ने कहा, *''यह आकाशवाणी मेरे लिये नहीं, परन्तु तुम्हारे लिए थी। अब इस जगत के न्याय का समय आ गया है। अब इस जगत के शासक को निकाल दिया जाएगा। और यदि मैं पृथ्वी पर से ऊपर उठा लिया गया तो सब लोगों को अपनी ओर खीच लूंगा।''* (ऐसा कहकर यीशु ने यह प्रगट कर दिया कि वह कैसी मृत्यु मरने जा रहा है।) इस पर लोगों ने उससे कहा, *''हमने व्यवस्था की यह बात सुनी है कि मसीह तो सदा रहेगा, फिर तू क्यों कहता है कि मनुष्य के पुत्र को निश्चय ही ऊपर उठा लिया जायेगा? यह मनुष्य का पुत्र कौन है?''* तब यीशु ने उनसे कहा, *''ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है। जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चलते रहो, ताकि अंधकार तुम्हें घेर न ले, क्योंकि जो अंधकार में चलता है वह नहीं जानता कि वह किधर जा रहा है। जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो ताकि तुम ज्योति की सन्तान बनो।''* यह कहकर यीशु कहीं चला गया और उनसे छिपा रहा। *[John 12:27-36]*

यहूदियों का यीशु में अविश्वास

यद्यपि यीशु ने उनके सामने ये सब चमत्कार दिखाये, तो भी उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया। इसका कारण यह था कि नबी यशायाह ने कहा था, ***"उसने उनकी आँखें अंधी और उनके हृदय (मन) कठोर कर दिए है, कहीं ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें और हृदय (मन) से समझें और मेरी ओर फिरें, और मुझे उन्हें चंगाना पडे।"*** *(यशा. 6:10)* फिर भी यहूदी नेताओं में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण उन्होंने अपने विश्वास को प्रगट नहीं किया, क्योंकि ऐसा करने पर उन्हें आराधनालय में से निकाले जाने का भय था। उन्हें मनुष्यों की प्रशंसा परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी। *[John 12:37, 39-43]*

फिर यीशु ने ऊँचे स्वर में कहा, *"जो मुझ में विश्वास करता है, वह मुझ में नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले में विश्वास करता है, और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है। मैं जगत में ज्योति के रूप में आया हूँ ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अंधकार में न रहे। यदि कोई मेरे वचनों को सुनकर भी नहीं मानता तो भी मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, बल्कि जगत का उद्धार करने के लिये आया हूँ। जो मुझे नकारता है और मेरे वचनों को ग्रहण नहीं करता है उसका न्याय करनेवाला तो एक है – वह है मेरा वचन जो अन्तिम दिन उसका न्याय करेगा। मैंने अपनी ओर कुछ नहीं कहा है; मेरे भेजनेवाले परम पिता ने मुझे आदेश दिया है कि मैं क्या कहूँ और क्या उपदेश दूँ। और मैं जानता हूँ कि उसके आदेश का अर्थ है अनन्त जीवन। इसलिए मैं जो बोलता हूँ वह ठीक वही है जो परम पिता ने मुझसे कहा है।" [John 12:44-50]*

यहूदी नेताओं द्वारा यीशु की हत्या का षड़यंत्र और यहूदा इस्करियोती का विश्वासघात

अख़मीरी रोटी (फसह) का पर्व निकट था। तब प्रमुख याजक और बुजुर्ग यहूदी नेता (elders / पुरनिए) कैफा (Caiaphas) नामक महायाजक (high priest) के भवन में इकट्ठे हुए। और उन्होंने किसी छल / तरकीब से यीशु को पकड़कर मार डालने की योजना बनायी। परन्तु वे कह रहे थे, *"पर्व के समय नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों में दंगा मच जाए।" [Matthew 26:3-5; Mark 14:1-2; Luke 22:1-2]*

तब बारह शिष्यों में से एक **यहूदा इस्करियोती** (Judas Iscariot) प्रमुख याजकों के पास गया और कहा, *"यदि मैं यीशु को तुम्हें पकड़वा दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे?"* उन्होंने उसे तीस चाँदी के सिक्के देना तय किया, और उसी समय से वह यीशु को धोखे से पकड़वाने का अवसर ढूँढ़ने लगा। *[Matthew 26:14-16; Mark 14:10-11; Luke 22:3-6]*

बैतनिय्याह में यीशु का अभ्यंजन

जब यीशु बैतनिय्याह (Bethany) में शमौन कोढ़ी के घर में था, तभी एक स्त्री संगमरमर (alabaster) के पात्र में बहुमूल्य इत्र (ointment) लेकर आई, और जब वह भोजन करने बैठा था, तो उसके सिर पर उण्डेल दिया। यह देखकर उसके चेले झुँझला उठे और कहने लगे, *"इसे क्यों बर्बाद कर दिया? यह इत्र अच्छे दाम पर बेचकर धन को गरीबों को बाँटा जा सकता था।"* यह जानकर यीशु ने उनसे कहा, *"तुम इस स्त्री को क्यों सताते हो? उसने तो मेरे साथ भलाई का काम किया है। गरीब तो सदा तुम्हारे साथ रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदैव नहीं रहूँगा। उसने मेरी देह पर जो यह इत्र उण्डेला है, वह मेरे दफन (burial) के लिये है। मैं तुम से सच कहता हूँ कि सारे संसार में जहाँ कहीं यह सुसमाचार का प्रचार-प्रसार किया जाएगा, वहाँ उस (स्त्री) के इस काम का वर्णन भी उसके स्मरण में किया जाएगा।" [Matthew 26:6-13; Mark 14:3-9]*

शिष्यों के साथ फसह का अन्तिम भोज

अख़मीरी रोटी के पर्व (feast of unleavened bread) के पहले दिन चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, *"तू कहाँ चाहता है कि हम तेरे लिये फसह भोज (Passover) खाने की तैयारी करें?"* उसने कहा, *"नगर में प्रवेश करते ही एक व्यक्ति जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा। वह जिस घर में जाए, तुम उसके पीछे चले जाना और उस घर के स्वामी से कहना कि गुरु ने कहा है, 'मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहाँ फसह मनाऊँगा।' वह तुम्हें एक सजी-सजाई बड़ी अटारी दिखा देगा; वहाँ तैयारी करना।"* अतः चेलों ने यीशु की आज्ञा के अनुसार फसह तैयार किया। *[Matthew 26:17-19; Mark 14:12-16; Luke 22:10-12]*

यीशु का अपने शिष्यों का पैर धोना

फसह पर्व से पहले शाम के भोजन का समय था। शैतान यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था कि वह यीशु को धोखे से पकड़वाएगा, इसलिये वह (यीशु) खाना छोड़कर उठ गया। उसने अपने बाहरी वस्त्र उतार दिए और एक अँगोछा अपनी कमर पर लपेट लिया। फिर एक बर्तन में पानी भरकर वह अपने शिष्यों के पैर धोने लगा और उस अँगोछे से उनके पैर पोंछने लगा। ऐसा करते हुए जब वह शमौन पतरस के पास आया तो पतरस ने उससे पूछा, *"हे प्रभु, क्या तू मेरे पाँव धोता है?"* उत्तर में यीशु ने उससे कहा, *"तू अभी नहीं जानता कि मैं क्या कर रहा हूँ, पर बाद में जान जायेगा।"* इस पर पतरस ने उससे कहा, *"तू मेरे पाँव कभी नहीं धोने पाएगा!"* यह सुनकर यीशु ने उससे कहा, *"यदि मैं तेरे पाँव न धोऊँ तो तो तू मेरे पास स्थान नहीं पा सकेगा।"* इस पर पतरस ने उससे कहा, *"हे प्रभु, तो मेरे पैर ही नहीं, वरन् मेरे हाथ और मेरा सिर भी धो दे।"* यीशु ने उससे कहा, *"जो नहा चुका है उसे अपने पैरों के सिवा और कुछ भी धोने की आवश्यकता नहीं है; वह पूरी तरह शुद्ध होता है। तुम लोग शुद्ध हो, परन्तु सबके सब नहीं।"* यीशु उसे जानता था जो उसे पकड़वाने वाला था, इसलिए उसने कहा था, *"तुम सब के सब शुद्ध नहीं।"* जब वह उनके पाँव धो चुका तो उसने अपने

बाहरी वस्त्र फिर पहन लिये और वापस अपने स्थान पर आकर बैठ गया और उनसे कहने लगा, *"तुम लोग मुझे 'गुरु' और 'प्रभु' कहते हो और यह ठीक भी है, क्योंकि मैं वहीं हूँ। इसलिये यदि मैंने प्रभु और गुरु होकर भी तुम्हारे पाँव धोये हैं तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोने चाहिए। मैंने तुम्हारे सामने एक उदाहरण रखा है, ताकि तुम दूसरों के साथ वही करो जो मैंने तुम्हारे साथ किया है। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूँ कि जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।" [John 13:1-20]*

तुम में से एक मुझे धोखे से पकड़वाएगा

सांझ को जब वह अपने बारह चेलों के साथ भोजन कर रहा था, तो उसने कहा, *"तुम में से एक मुझे धोखे से पकड़वाएगा।"* यह सुनकर वे बहुत उदास हो गये और यह संदेह करते हुए कि वह किस के बारे में कहता है, एक दूसरे की ओर देखने लगे। फिर हर एक उससे पूछने लगा, *"प्रभु, क्या वह मैं हूँ?"* तब यीशु ने उत्तर दिया, *"जिसने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा। (यूहन्ना के सुसमाचार के अनुसार, यीशु ने उत्तर दिया, "जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोकर दूँगा वही मुझे पकड़वाएगा।) मनुष्य का पुत्र तो जायेगा ही, जैसा कि उसके बारे में शास्त्र में लिखा है, परन्तु उस व्यक्ति को धिक्कार है जिसके द्वारा वह पकड़वाया जा रहा है। उस व्यक्ति का जन्म ही न हुआ होता तो उसके लिये कितना अच्छा होता।"* तब यहूदा ने कहा, *"हे रब्बी, क्या वह मैं हूँ?"* फिर यीशु ने टुकड़ा डुबोकर यहूदा इस्करियोती को देते हुए कहा, *"तू कह चुका (हाँ, ऐसा ही है जैसा तूने कहा।)"* और टुकड़ा लेते ही शैतान यहूदा इस्करियोती में समा गया। तब यीशु ने उससे कहा, *"जो तू करनेवाला है, तुरन्त कर।"* परन्तु वहाँ उपस्थित चेलों में से कोई यह नहीं समझ पाया कि यीशु ने उससे ऐसा उससे क्यों कहा। पैसों की थैली यहूदा के पास रहती थी, इसलिए उन्होंने सोचा कि यीशु उसे पर्व के लिये आवश्यक सामग्री मोल लेने के लिए भेज रहा है। और यहूदा

तुरन्त वहाँ से बाहर चला गया। वह रात्रि का समय था। *[Matthew 26:20-25; Mark 14:17-21]*

प्रभु भोज

जब वे खाना खा ही रहे थे तब यीशु ने एक रोटी ली, उसे आशीष दी और फिर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, *"लो, इसे खाओ; यह मेरी देह है।"* फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, *"तुम सब इसमें से पीओ, क्योंकि यह नये वाचा / करार का मेरा वह लहू है (this is my blood of the new testament)* जो *बहुत लोगों के पापों की क्षमा के लिए बहाया जा रहा है। मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं उस दिन तक इस दाखरस को नहीं चखूँगा, जब तक अपने पिता के राज्य में तुम्हारे साथ नया दाखरस न पीऊँ।" [Matthew 26:26-29; Mark 14:22-25; Luke 22:14-20]*

पतरस के इन्कार की भविष्यवाणी

तब यीशु ने चेलों से कहा, *"आज रात तुम सब का मुझमें से विश्वास डिग जायेगा, क्योंकि शास्त्र में लिखा है, 'मैं चरवाहे को मारूँगा और रेवड़ की भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।' (जक. 13:7) परन्तु मैं पुनः जी उठने के बाद तुमसे पहले ही गलील चला जाऊँगा।"* इस पर पतरस ने यीशु से कहा, *"हे प्रभु, मैं तेरे साथ बन्दीगृह जाने को भी तैयार हूँ। चाहे सब तुझ में से विश्वास खो दें, किन्तु मैं कभी नहीं खोऊँगा।"* यीशु ने उससे कहा, *"आज इसी रात को मुर्गे के बाँग देने से पहले, तू तीन बार मुझे नकारेगा।"* पतरस ने उससे कहा, *"यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पडे तो भी मैं तुझे नहीं नकारूँगा।"* और यही सब चेलों ने भी कहा। *[Matthew 26:31-35; Mark 14:27-31; Luke 22:31-34; John 13:36-38]*

यातना झेलने को तैयार रहो

फिर उसने शिष्यों से कहा, *"मैंने जब तुम्हें बिना बटुए, बिना थैले और बिना जूते के भेजा था, तो क्या तुम्हें किसी वस्तु की कमी महसूस हुई थी?"* उन्होंने कहा, *"किसी वस्तु की नहीं।"* तब उसने कहा, *"किन्तु अब जिस किसीके पास भी कोई बटुआ हो वह उसे ले ले, और वैसे ही थैला भी ले चले, और* ***जिसके पास तलवार न हो वह अपने कपड़े बेचकर उसे मोल ले ले****। क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि मेरे विषय में शास्त्र में लिखा यह वचन निश्चय ही पुरा होगा: 'वह अपराधी गिना गया'।"* उन्होंने कहा, *"हे प्रभु, देख, यहाँ दो तलवारें हैं।"* इस पर यीशु ने कहा, *"बस बहुत हैं।" [Luke 22:35-38]*

मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ

फिर यीशु ने अपने शिष्यों को समझाया, *"तुम अपने हृदय (मन) को व्याकुल मत होने दो। परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं। मैं तुम्हारे लिये वहाँ जगह तैयार करने जा रहा हूँ। वहाँ जाकर मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँगा और फिर यहाँ आकर तुम्हें भी अपने साथ वहाँ ले जाऊँगा, ताकि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ का मार्ग तुम जानते हो।"* इस पर थोमा ने उससे कहा, *"हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहाँ जा रहा है। फिर वहाँ का मार्ग हम कैसे जान सकते है?"* इसका उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, ***"मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं आ सकता*** *(I am the way, the truth, and the life: no man cometh unto the Father but by me.) यदि तूने मुझे जान लिया होता तो तू परम पिता को भी जानते। अब तू उसे जानता है और उसे देख भी चुका है।"* फिर फिलिप्पुस ने उससे कहा, *"हे प्रभु, हमे परम पिता के दर्शन करा दे। यही हमारे लिये पर्याप्त है।"* यीशु ने उससे कहा, *"हे फिलिप्पुस, मैं इतने लम्बे समय से तुम्हारे साथ हूँ, फिर भी तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देख लिया है (he that hath seen me hath seen the*

Father), फिर तू क्यों कहता है कि 'हमे परम पिता के दर्शन करा दे'? क्या तुझे विश्वास नहीं है कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में हैं? वे वचन जो मैं तुम लोगों से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु जो पिता मुझ में निवास करता है, अपने काम करता है। मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है, नहीं तो मेरे कामों को देखकर मेरा विश्वास करो। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूँ कि ***जो कोई मुझ पर विश्वास रखता है वह भी उन कार्यों को करेगा जो मैं करता हूँ****, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा। मैं वह सब कुछ करूँगा जो तुम मेरे नाम से माँगोगे, ताकि पुत्र के द्वारा पिता महिमावान हो। यदि तुम मुझे प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करो। मैं पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक (Comforter) देगा ताकि वह सदा तुम्हारे साथ रहे, अर्थात् सत्य की आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न ही उसे जानता है, पर तुम लोग उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और भविष्य में भी तुम में होगा। मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूँगा; मैं तुम्हारे पास वापस आऊँगा। थोड़ी देर बाद संसार मुझे नहीं देखेगा, किन्तु तुम मुझे देखोगे क्योंकि मैं जीवित हूँ और तुम भी जीवित रहोगे। उस दिन तुम जानोगे कि मैं पिता में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुममें। वह जो मेरी आज्ञाओं को स्वीकार करता है और उनका पालन करता है, वह मुझसे प्रेम करता है, और जो मुझसे प्रेम रखता है उसे मेरा पिता भी प्रेम करेगा, मैं भी उसे प्रेम करूँगा और अपने आप को उस पर प्रगट करूँगा।" [John 14:1-21]*

इस पर यहूदा (यहूदा इस्करियोती से भिन्न दूसरे यहूदा) ने उससे कहा, *"हे प्रभु, ऐसा क्यों कि तू अपने आप को हम पर प्रगट करना चाहता है, और संसार पर नहीं?"* इसका उत्तर देते हुए यीशु उससे कहा, *"यदि कोई मुझसे प्रेम रखता है तो वह मेरे वचन का पालन करेगा, और उससे मेरा पिता प्रेम करेगा, और हम उसके पास आकर उसके साथ निवास करेंगे। जो मुझसे प्रेम नहीं रखता वह मेरे उपदेशों पर नहीं चलता। जो वचन*

तुम सुन रहे हो वह मेरा नहीं है, वरन् उस पिता का है जिसने मुझे भेजा है। ये बातें मैंने तुमसे तब कही थी जब मैं तुम्हारे साथ था, किन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, तुम्हें सब कुछ सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है उसे तुम्हें याद दिलायेगा। तुमने मुझे कहते सुना है कि 'मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास फिर आऊँगा।' यदि तुमने मुझसे प्रेम किया होता तो इस बात से प्रसन्न होते, क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूँ, जो मुझसे बड़ा है। और अब यह घटित होने से पहले ही मैंने तुमसे बता दिया है ताकि जब यह घटित हो तब तुम विश्वास करो। और अधिक समय तक मैं तुम्हारे साथ बातें नहीं करूँगा, क्योंकि इस संसार का शासक आ रहा है। यह सब इसलिए हो रहा है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूँ और पिता ने जैसी आज्ञा मुझे दी है, मैं वैसा ही करता हूँ। अब उठो, हम यहाँ से चलें।" [John 14:22-31]

फिर वे फसह का भजन गाकर जैतून पर्वत (Mount Olives) पर चले गए।

यीशु सच्ची दाखलता

फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, *"सच्ची दाखलता मैं हूँ और मेरा पिता देख-रेख कराने वाला माली (किसान) है। मेरी हर वह डाली को जिस पर फल नहीं लगता, वह काट देता है और हर वह डाली को जो फलती है, वह छाँटता है ताकि उस पर और अधिक फल लगे। तुम लोग तो जो उपदेश मैंने तुम्हें दिया है, उसके कारण पहले से ही शुद्ध हो। तुम मुझ में रहो और मैं तुम में रहूँगा। जैसे कोई डाली जब तक दाखलता में बनी नहीं रहती तब तक अपने आप फल नहीं सकती, वैसे ही तुम भी तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक मुझ में नहीं रहते। मैं दाखलता हूँ और तुम उसकी डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं जिसमें रहता हूँ वह बहुत फलता है, क्योंकि मेरे बिना तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में नहीं रहता तो वह टूटी डाली की तरह फेंक दिया जाता है और सूख जाता है। फिर लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं और वे जल जाती हैं। यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो*

कुछ तुम माँगो वह तुम्हें मिलेगा। मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ और मेरे अनुयायी बने रहो। जैसा प्रेम पिता ने मुझसे रखा है वैसे ही मैंने तुम से प्रेम रखा है। मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे तो तुम मेरे प्रेम में वैसे ही बने रहोगे जैसे मैं अपने पिता की आज्ञाओं का पालन करते हुए उसके प्रेम में बना रहता हूँ। यह मेरा आदेश कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो जैसे मैंने तुम से प्रेम रखा है। यदि तुम मेरे आदेशों पर चलते रहो तो तुम मेरे मित्र हो। अब से मैं तुम्हें 'दास' नहीं कहूँगा, क्योंकि कोई दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या कर रहा है, बल्कि मैं तुम्हें 'मित्र' कहता हूँ। क्योंकि मैंने तुम्हें वह हर बात बता दी है जो मैंने अपने पिता से सुनीं है। तुमने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना है और नियत किया है कि तुम जाओ और सफल बनो। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी सफलता बनी रहे, ताकि मेरे नाम से जो कुछ तुम, परम पिता तुम्हें दे।" [John 15:1-16]

यीशु की चेतावनी

यीशु ने फिर अपने शिष्यों से कहा, *"यदि संसार तुम से बैर रखता है तो याद रखो कि तुम से पहले उसने मुझसे भी बैर रखा। यदि तुम संसार के होते तो संसार तुम्हें अपनों की तरह प्यार करता, पर तुम संसार के नहीं हो। मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है और इसलिए संसार तुम से बैर रखता है। मेरा यह वचन याद रखो कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता। इसलिये यदि उन्होंने मुझे सताया है तो वे तुम्हें भी सताएँगे और यदि उन्होंने मेरी बातें मानी है तो तुम्हारी बातें भी मानेंगे। परन्तु वे मेरे कारण तुम्हारे साथ ये सब कुछ करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते है। यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता तो वे किसी भी पाप के दोषी नहीं ठहरते, पर अब उनके पास अपने पाप के लिये कोई बहाना नहीं है। जो मुझसे बैर रखता है वह मेरे पिता से भी बैर रखता है। यदि मैं उनके बीच वे कार्य नहीं करता जो और किसी ने कभी नहीं किए थे, तो वे पापी नहीं ठहरते, पर अब तो वे मुझे और मेरे पिता दोनों को देख चुके है, फिर भी वे हम*

दोनों से बैर रखते है। जब वह सहायक (परम पिता की ओर से) तुम्हारे पास आएगा, जिसे मैं पिता की ओर से भेजूँगा, तो वह मेरी गवाही देगा। और तुम भी गवाही दोगे क्योंकि तुम आरम्भ से ही मेरे साथ रहे हो।'' [John 15:18-27]

''ये बातें मैंने तुमसे इसलिए कही ताकि तुम ठोकर न खाओ (तुम्हारा विश्वास न डगमगा जाये)। वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, वरन् वह समय आ रहा है जब जो कोई तुम में से किसी को मार डालेगा तो वह यह समझेगा कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है। वे ऐसा इसलिए करेंगे क्योंकि वे न तो पिता को जानते है और न ही मुझे। किन्तु मैंने तुमसे यह इसलिए कहा है ताकि जब उनका समय आए तो तुम्हें याद रहे कि मैंने तुमको यह पहले ही बता दिया था।'' [John 16:1-4]

पवित्र आत्मा के कार्य

''आरम्भ में मैंने तुम्हें ये बातें इसलिए नहीं बतायी थीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था, किन्तु अब मैं उसके पास जा रहा हूँ जिसने मुझे भेजा है और अब तुममें से कोई मुझ से नहीं पूछता, 'तू कहाँ जा रहा हैं?' क्योंकि मैंने तुम्हें बातें बता दी हैं और तुम्हारे हृदय (मन) शोक से भर गये है। फिर भी मैं तुम से सच कहता हूँ कि मेरे जाने में तुम्हारा भला है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास नहीं आएगा, परन्तु यदि मैं चला जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। और जब वह आयेगा तो पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में संसार के संदेह दूर कर देगा। पाप के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते, धार्मिकता के विषय में इसलिए कि अब मैं पिता के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे फिर नहीं देखोगे, और न्याय के विषय में इसलिए कि इस संसार के शासक को दोषी ठहराया जा चुका है। मुझे अभी भी तुमसे बहुत भी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। पर जब वह (सत्य का आत्मा - Spirit of truth) आएगा तो तुम्हें सत्य का मार्ग बताएगा; वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा, पर वह जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और जो कुछ होनेवाला है उसको प्रकट

करेगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि जो मेरा है उसे लेकर वह तुम्हें बताएगा। जो कुछ पिता का है वह सब मेरा है, इसलिए मैंने कहा है कि जो कुछ मेरा है उसे वह लेगा और तुम्हें बताएगा। कुछ ही समय बाद तुम मुझे और अधिक नहीं देख पाओगे और फिर थोडे समय बाद तुम मुझे फिर देखोगे।" [John 16:5-16]

शोक आनन्द में बदल जायेगा

तब उसके कुछ शिष्यों ने आपस में कहा, *"वह हमें क्या बता रहा है, 'थोड़ी देर बाद तुम मुझे नहीं देख पाओगे', और 'थोड़ी देर बाद तुम मुझे फिर देखोगे?' और 'मैं पिता के पास जा रहा हूँ'?"* फिर वे कहने लगे, *"यह 'थोड़ी देर बाद' क्या है, जिसके बारे में वह बता रहा है? हम समझ नहीं रहे है कि वह क्या कह रहा है।"* यीशु समझ गया कि वे उससे कुछ पूछना चाहते हैं, इसलिये उसने उनसे कहा, *"क्या तुम मैंने जो कहा उस पर आपस में सोच-विचार कर रहे हो? मैं तुम्हें सच-सच कहता हूँ कि तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार प्रसन्न होगा; तुम्हें शोक होगा, परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जाएगा। जब कोई स्त्री बच्चा जनने लगती है तब उसे पीडा होती है क्योंकि वह पीडा की घड़ी होती है, परन्तु जब वह बालक को जन्म दे चुकी होती है तो इस आनन्द से कि एक व्यक्ति जगत में पैदा हुआ है, वह अपनी पीडा भूल जाती है। सो तुम भी इस समय शोक में हो, परन्तु मैं तुमसे फिर मिलूँगा और तुम्हारे हृदय आनन्दित होंगे और तुम्हारे आनन्द को तुमसे कोई छीन नहीं सकेगा। उस दिन तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ कि मेरे नाम से पिता से तुम कुछ भी माँगोगे, वह उसे तुम्हें देगा। अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा है; माँगो, तुम पाओगे। [John 16:17-24]*

जगत पर विजय

"मैंने ये बातें तुम्हें दृष्टान्तों में कही हैं, पर वह समय आ रहा है जब मैं तुमसे दृष्टान्तों में और अधिक समय बात नहीं कहूँगा, बल्कि पिता के विषय में खोलकर तुम्हें

बताऊँगा। उस दिन तुम मेरे नाम से माँगोगे और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मैं तुम्हारे लिये पिता से विनती करूँगा; पिता तो स्वयं तुमसे प्रेम रखता है, क्योंकि तुमने मुझसे प्रेम रखा है और यह भी विश्वास किया है कि मैं पिता की ओर से आया हूँ। मैं पिता की ओर से जगत में आया हूँ, और फिर जगत को छोड़कर पिता के पास वापस जा रहा हूँ।'' इस पर शिष्यों ने कहा, *''देख, अब तो तू खुलकर बता रहा है। अब हम समझ गए कि तू सब कुछ जानता है और हम विश्वास करते हैं कि तू परमेश्वर से प्रकट हुआ है।''* यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा, *''क्या तुम अब विश्वास करते हो?* देखो, *वह घड़ी आ रही है, वरन् आ ही पहुँची है जब तुम सब तितर-बितर होकर अपना-अपना मार्ग लोगे और मुझे अकेला छोड़ दोगे, फिर भी मैं अकेला नहीं हूँ, क्योंकि पिता मेरे साथ है। मैंने ये बातें तुमसे इसलिए कही कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होगा, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैंने संसार को जीत लिया है।'' [John 16:25-33]*

शिष्यों के लिए यीशु की प्रार्थना

ये बातें कहकर यीशु ने आकाश की ओर देखा और कहा, *''हे पिता, वह घड़ी आ पहुँची है। अपने पुत्र की महिमा कर, ताकि पुत्र भी तेरी महिमा करे। तूने उसे सब प्राणियों पर अधिकार दिया है कि वह सब को अनन्त जीवन दे। और* ***अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जानें।*** *जो काम तूने मुझे सौंपे थे, उन्हें पूरा करके मैंने संसार में तेरी महिमा की है। हे पिता, अब तू अपने साथ मुझे भी महिमावान कर, जो महिमा जगत की सृष्टि पहले तेरे साथ मुझे प्राप्त थी। मैंने तेरा नाम जगत में मनुष्यों पर प्रगट किया है। वे लोग तेरे थे और तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन का पालन किया है। अब वे जानते हैं कि जो कुछ तूने मुझे दिया है वह सब तुझ ही से आता है। मैंने उन्हें वे ही उपदेश दिये है जो तूने मुझे दिये थे और उन्होंने उनको ग्रहण किया है और निश्चयपूर्वक जान लिया है कि मैं तुझसे ही आया हूँ और उन्हें यह विश्वास हो गया है कि तूने ही मुझे भेजा है। मैं संसार*

के लिये प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ, बल्कि उनके लिये कर रहा हूँ जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं। जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है। मैं अब और अधिक समय जगत में नहीं हूँ, परन्तु वे जगत में रहेंगे और मैं तेरे पास आ रहा हूँ। हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से उनकी रक्षा कर जो तूने मुझे दिया है, ताकि जैसे ***तू और मैं एक है****, वैसे वे भी एक हों। मैंने तेरे वचन उन्हें दिया है, पर संसार ने उनसे घृणा की, क्योंकि जैसे मैं संसार का नहीं हूँ, वैसे वे भी संसार के नहीं। जैसे तूने मुझे जगत में भेजा है, वैसे ही मैंने भी उन्हें जगत में भेजा है। मैं केवल इनके लिये विनती (प्रार्थना) नहीं कर रहा हूँ, बल्कि उनके लिये भी जो इनके उपदेशों द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे। हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जो लोग तूने मुझे सौंपे है वे मेरे साथ हों, ताकि वे मेरी उस महिमा को देख सकें जो तूने मुझे दी है, क्योंकि तूने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझसे प्रेम रखा। हे पिता, संसार ने तुझे नहीं जानता, परन्तु मैंने तुझे जान लिया है और ये मेरे शिष्य भी जानते है कि तूने ही मुझे भेजा है। न केवल मैंने तेरे नाम का उन्हें बोध कराया है, बल्कि मैं इसका बोध कराता भी रहूँगा ताकि जो प्रेम तुझको मुझसे था वह उनमें भी रहे और मैं उनमें रहूँ।" [John 17:1-26]*

गतसमनी में एकान्त प्रार्थना

तब यीशु अपने चेलों के साथ किद्रोन के नाले के पार गतसमनी (Gethsemane) नामक एक स्थान में आया और अपने चेलों से कहा, *"जब तक मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करूँ, तुम यहीं बैठे रहना।"* वह पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों को साथ ले गया, और उदास और व्याकुल होने लगा। तब यीशु ने उनसे कहा, *"मेरा मन बहुत उदास है, जैसे प्राण निकला जा रहा है। तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।"* फिर थोड़ा और आगे बढ़ने के बाद वह घुटने टेककर प्रार्थना करने लगा, *"हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझसे दूर हटा, फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।"* फिर वह चेलों के पास आया और उन्हें सोते हुए पाकर पतरस

से कहा, *"क्या तुम मेरे साथ एक घण्टे भर न जाग सके?"* वह जब दूसरी बार गया तो एक स्वर्गदूत वहाँ प्रकट हुआ और उसे शक्ति प्रदान की और यीशु बडी बैचेनी के साथ और तीव्रता से प्रार्थना करने लगा, *"हे मेरे पिता, यदि यह कटोरा मेरे पीये बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।"* प्रार्थना करते समय उसका पसीना रक्त की बूंदों के समान धरती पर दिर रहा था। वापस आकर उसने उपने चेलों को फिर सोते पाया, क्योंकि उनकी आँखें नींद से भरी थीं। सो उन्हें छोड़कर वह फिर गया और तीसरी बार वही प्रार्थना की। फिर उसने चेलों के पास आकर उनसे कहा, *"अब सोते रहो, और विश्राम करो: देखो, समय आ पहुँचा है जब मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों सौंपा जाने वाला है। उठो, आओ चलें; देखो, मेरा पकड़वाने वाला निकट ही है।" [Matthew 26:36-46; Mark 14:32-42; Luke 22:39-46]*

यीशु को बंदी बनाना [स्थान : गतसमनी]

जब यीशु यह कह ही रहा था तभी प्रमुख याजकों, फरीसियों और यहूदी नेताओं (पुरनियों) द्वारा भेजी गई तलवारों और लाठियों से लैस एक बड़ी भीड़ के साथ यहूदा (Judas) वहाँ आ पहुँचा। धोखेबाज यहूदा ने उन्हें यह एक संकेत देते हुए कहा था, *"जिसको मैं चूमूं, वही यीशु है; उसे पकड़ लेना।"* तुरन्त यीशु के पास आकर उसने कहा, *"हे रब्बी, नमस्कार!"* और उसको चूमा। यीशु ने उससे कहा, *"मित्र, जिस काम के लिये तू आया है, उसे कर ले।"* फिर भीड़ ने पास जाकर यीशु को दबोच कर पकड़ लिया। (यूहन्ना के सुसमाचार के अनुसार, यहूदा के साथ भीड़ को आते हुए देखकर यीशु समझ गया कि उसके साथ क्या होनेवाला है, इसलिये वह आगे आया और उनसे पूछा, *"तुम किसे ढूँढ़ रहे हो?"* उन्होंने कहा, *"यीशु नासरी को।"* इस पर यीशु ने उनसे कहा, *"(यीशु नासरी) मैं ही हूँ।"* यीशु के ये शब्द सुनते ही वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े। तब यीशु ने फिर उनसे पूछा, *"तुम किसे ढूँढ़ रहे हो?"* वे बोले, *"यीशु नासरी को।"* इस पर यीशु ने कहा, *"मैं तो तुमसे कह चुका हूँ कि (यीशु नासरी) मैं ही हूँ; यदि*

तुम मुझे ढूँढ़ रहे हो तो इन्हें जाने दो।" John 18:4-8) उसी समय यीशु के साथियों में से एक ने अपनी तलवार खींच ली और वार करके महायाजक के दास मलखुस (Malchus) का दाहिना कान काट डाला। तब यीशु ने उससे कहा, *"अपनी तलवार म्यान में रख, क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे तलवार से ही नाश किए जाएँगे। मैं अपने पिता से विनती करूँ तो क्या वह स्वर्गदूतों के बारह सैन्य-दल से भी अधिक मेरे पास अभी नहीं भेज देगा?"* फिर यीशु ने उसके कान को छू कर चंगा कर दिया। उसी समय यीशु ने भीड़ से कहा, *"क्या तुम तलवारें और लाठियाँ लेकर मुझे डाकू के समान पकड़ने के लिये आये हो? मैं हर दिन मन्दिर में बैठकर उपदेश दिया करता था, फिर भी तुमने मुझे नहीं पकड़ा। परन्तु यह समय तुम्हारा है, अंधकार के शासन का काल। यह सब इसलिए हुआ है ताकि भविष्यद्वक्ताओं के वचन पूरे हों।" [Matthew 26:47-56; Mark 14:43-50; Luke 22:47-53]*

फिर रोमी सिपाहियों और यहीदियों के लोगों ने यीशु को बंदी बना लिया और वहाँ से ले गये। उसके चेले उसे छोड़कर भाग गए।

यीशु महासभा (council / Sanhedrin) के समक्ष

यीशु के पकड़नेवाले उसको महायाजक (high priest) कैफा के पास ले गए, जहाँ प्रमुख याजक, धर्मशास्त्री और पुरनिए इकट्ठे हुए थे। पतरस दूर से यीशु के पीछे-पीछे महायाजक के आँगन तक चला गया, और भीतर जाकर अन्त (नतीजा) देखने को पहरेदारों के साथ बैठ गया, जो आग सुलगाकर तापने इकट्ठे बैठे हुए थे। प्रमुख याजकों और पुरनिए समेत सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरुद्ध झूठी गवाही की खोज में थी, परन्तु बहुत से झूठे गवाहों के आने पर भी कोई गवाही न मिली। अन्त में दो जन आए और बोले, *"इसने कहा था कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूँ और तीन दिन में उसे फिर बना सकता हूँ।"* तब महायाजक ने खड़े होकर यीशु से पूछा, *"क्या उत्तर में तुझे कुछ नहीं कहना कि ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही*

दे रहे हैं?" किन्तु यीशु चुप रहा। फिर महायाजक ने उससे पूछा, *"मैं तुझे साक्षात् परमेश्वर की शपथ देता हूँ यदि तू हमें बता क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है?"* यीशु ने उत्तर दिया, *"तूने स्वयं ही कह दिया (Thou hast said अर्थात् 'हाँ, मैं हूँ'); वरन् मैं तुमसे यह भी कहता हूँ कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।"* महायाजक यह सुनकर गुस्से में अपने वस्त्र फाड़कर बोला, *"इसने परमेश्वर की निन्दा की है! अब हमें और गवाहों की क्या जरूरत? देखो, तुम सब ने अभी यह निन्दा सुनी है! तुम क्या सोचते हो?"* उन्होंने उत्तर दिया, *"यह मृत्यु दण्ड होने के योग्य अपराधी है।" [Matthew 26:57-66; Mark 14:53-64; Luke 22:54-55]*

यूहन्ना के सुसमाचार के अनुसार, यीशु के पकड़नेवाले पहले उसे हन्ना (Annas) के पास ले गये थे, जो महयाजाक कैफा का ससुर था। वहाँ महायाजक ने यीशु से उसके शिष्यों और उसके उपदेशों के बारे में पूछा। इस पर यीशु ने कहा, *"मैंने लोगों के बीच खुलकर बातें की है; सदा मैंने आराधनालयों और मन्दिर में यहूदियों की उपस्थिती में उपदेश दिया है और गुप्त में कुछ भी नहीं कहा है। फिर तू मुझसे क्यों पूछ रहा है? जिन्होंने मुझे सुना है उनको पूछ कि मैंने उनसे क्या कहा है; वे जानते हैं कि मैंने क्या-क्या कहा है।"* जब उसने यह कहा तो वहाँ खडे एक पहरेदारों में से एक ने यीशु को थप्पड़ मारकर कहा, *"तू महायाजक को इस प्रकार उत्तर देता है?"* इस पर यीशु ने उसे उत्तर दिया, *"यदि मैंने कुछ बुरा कहा है तो तू बता कि उसमें बुरा क्या है; परन्तु यदि मैंने ठीक कहा है तो तू मुझे क्यों मारता है?"* फिर हन्ना ने उसे बंधे हुए महायाजक कैफा के पास भेज दिया। *[John 18:12-24]*

यीशु का उपहास

फिर जिन व्यक्तियों ने यीशु को पकड रखा था उन्होंने उसकी आंखों पर पट्टी बाँध दी और उसके मुँह पर थूक कर और घूँसे मार कर उसका उपहास करने लगे। कुछ ने

उसे थप्पड़ मारते हुए कहा, *"हे मसीह, हम से भविष्यद्वाणी करके बता कि किस ने तुझे थप्पड़ मारा?" [Matthew 26:67-68; Mark 14:65; Luke 22:63-64]*

पतरस का यीशु को नकारना

पतरस बाहर आँगन में बैठा हुआ था तभी एक सेविका ने उसे आग के उजियाले में बैठा देखकर और उसकी ओर ताक कर कहा, *"यह भी तो यीशु साथ था।"* परन्तु उसने सब के सामने यह कहकर इन्कार किया, *"हे नारी, मैं उसे नहीं जानता।"*

फिर जब वह बाहर ड्योढी (porch) में चला गया, तो दूसरी एक सेविका ने उसे देखकर वहाँ उपस्थित लोगों से कहा, *"यह आदमी भी यीशु नासरी के साथ था।"* इस पर एक बार फिर पतरस ने शपथ खाकर इन्कार किया, *"मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।"*

थोड़ी देर के बाद वहाँ खड़े लोग पतरस के पास आये और उससे कहा, *"सचमुच तू भी उनमें से एक है, क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है।"* तब पतरस अपने को धिक्कारने लगा और शपथ खाकर कहा, *"मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।"* और तुरन्त मुर्गे ने बाँग दी और जब यीशु ने घूमकर पतरस की ओर देखा तो उसे यीशु की वह बात स्मरण आई, *"मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।"* और वह बाहर जाकर फूट-फूट कर रोने लगा। *[Matthew 26:69-75; Mark 14:66-72; Luke 22:56-62; John 18:15-18, 25-27]*

यहूदा की आत्महत्या

इस बीच जब यहूदा ने देखा कि यीशु दोषी ठहराया गया है तो वह बहुत पछताया और तीस चाँदी के सिक्के अपने साथ लेकर वह प्रमुख याजकों और पुरनियों के पास वापस लाया और कहा, *"मैंने एक निर्दोष को पकड़वा कर पाप किया है।"* इस पर

उन्होंने कहा, *“हमें क्या? तू ही जाने।”* इस पर वह उन सिक्कों को मन्दिर में फेंककर चला गया, और जाकर अपने आप को फांसी लगा ली।

प्रमुख याजकों ने वे सिक्के उठा लिए और कहा, *“इन्हें मंदिर के कोष में रखना उचित नहीं, क्योंकि यह लहू का दाम (price of blood) है।”* अतः उन्होंने सम्मति करके उन सिक्कों से परदेशियों (यरुशलेम में बाहर से आने वाले लोगों) के गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत मोल ले लिया। इसलिये वह खेत आज तक *‘लहू का खेत’* कहलाता है। *[Matthew 27:3-8]*

यीशु की पिलातुस के आगे पेशगी

जब भोर हुई तो सब प्रमुख याजकों, शास्त्रियों और लोगों के पुरनियों ने यीशु को मार डालने की सम्मति की। फिर वे उसे बाँधकर कैफा के घर से रोमन राज्यपाल पुन्तियुस पिलातुस (Pontius Pilate) के महल में ले गये, परन्तु वे स्वयं फसह के पर्व पर अशुद्ध हो जाने से डर से महल के भीतर नहीं गए, क्योंकि वे मानते थे कि किसी गैरयहूदी के घर में जाने से उनकी पवित्रता नष्ट हो जाती है। तब पिलातुस उनके पास बाहर आया और पूछा, *“इस व्यक्ति पर तुम क्या दोष लगाते हो?”* उत्तर में उन्होंने उससे कहा, *“यदि यह अपराधी न होता तो हम उसे तेरे तुम्हें नहीं सौंपते। हमने इस व्यक्ति को हमारे लोगों को बहकाते हुए पकडा है। यह कहता है कि यह स्वयं मसीह है, एक राजा है।”* इस पर पिलातुस ने उनसे कहा, *“तुम ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार इसका न्याय करो।”* पर यहूदियों ने उससे कहा, *“हमें किसी को प्राणदण्ड देने का अधिकार नहीं हैं।”* तब पिलातुस महल में वापस चला गया और यीशु को अपने पास बुलाया। *[Matthew 27:1-2; Mark 15:1; Luke 23:1-2; John 18:28-32]*

पिलातुस का यीशु से प्रश्न

जब यीशु राज्यपाल पिलातुस के सामने खड़ा था, तो राज्यपाल ने उससे पूछा, ***"क्या तू यहूदियों का राजा है?"*** यीशु ने उत्तर दिया, *"यह क्या तू अपने आप पूछ रहा है या मेरे बारे में यह बात औरों ने तुझसे कही है?"* इस पर पिलातुस ने कहा, *"क्या तू सोचता है कि मैं यहूदी हूँ? तेरे ही लोगों और प्रमुख याजकों ने तुझे मेरे हवाले किया है। अब बता तूने ऐसा क्या किया है?"* इस पर यीशु ने उत्तर दिया, *"मेरा राज्य इस जगत का नहीं है। यदि मेरा राज्य इस जगत का होता तो मेरे सेवक मुझे यहूदियों के हाथ सौंपे जाने के विरोध में लड़ते। परन्तु वास्तव में मेरा राज्य यहाँ का नहीं।"* इस पर पिलातुस ने उससे फिर पूछा, *"तो क्या तू राजा है?"* यीशु ने उत्तर दिया, *"तू कहता है कि मैं राजा हूँ। मैंने इसलिए जन्म लिया है और इस जगत में आया हूँ ताकि सत्य की साक्षी दूँ। जो कोई सत्य के पक्ष में है वह मेरा वचन सुनता है।" [Matthew 27:11; Mark 15:2; Luke 23:3-5; John 18:33-37]*

पिलातुस ने उससे कहा, *"सत्य क्या है?"* और यह कहकर वह फिर प्रमुख याजकों और लोगों की भीड के पास बाहर गया और उनसे कहा, *"मुझे इस व्यक्ति पर किसी आरोप का कोई आधार दिखाई नहीं देता।" [John 18:38]* दूसरी तरफ जब प्रमुख याजक और पुरनिए उस पर दोष लगा रहे थे और कह रहे थे, *"इसने समूचे यहूदिया में लोगों को भडकाया है। यह इसने **गलील** से आरंभ किया था और अब समूचा मार्ग पार कर यहाँ तक आ पहुँचा है।"*, तो यीशु ने कोई इस आरोप का उत्तर नहीं दिया। इस पर पिलातुस ने फिर उससे पूछा, *"क्या तू नहीं सुन रहा कि ये तेरे विरोध में कितनी गवाहियाँ दे रहे हैं?"* परन्तु यीशु ने उसको एक बात का भी उत्तर नहीं दिया, यहाँ तक कि राज्यपाल को इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ। *[Matthew 27:13-14; Mark 15:4-5; Luke 23:3-5]*

यीशु का हेरोदेस के पास भेजा जाना

जब पिलातुस ने यह सुना कि यीशु एक **गलील** (हेरोदेस की रियासत) का है तो उसने उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, जो उन दिनों यरूशलेम में ही था। हेरोदेस यीशु को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ, क्योंकि बरसों से वह उसे देखना चाहता था। वह यीशु के विषय में सुन चुका था और उसे कोई अद्भुत कर्म (चमत्कार) करते हुए देखने की आशा रखता था। फिर उसने यीशु से अनेक प्रश्न पूछे, पर यीशु ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। प्रमुख याजक और धर्म शास्त्री भी वहीं खड़े थे और उस पर दोषारोपण कर रहे थे। तब हेरोदेस ने भी अपने सिपाहियों समेत उसके साथ अपमानपूर्ण व्यवहार किया और उसका उपहास किया। फिर उन्होंने उसे एक चोगा पहनाकर उसे पिलातुस के पास वापस भेज दिया। उस दिन पिलातुस और हेरोदेस एक दूसरे के मित्र बन गए। इससे पहले वे एक दूसरे के शत्रु थे। *[Luke 23:7-12]*

यीशु को मृत्यु दंड और बरअब्बा की मुक्ति

फिर पिलातुस ने प्रमुख याजकों, यहूदी नेताओ और लोगों को एकसाथ बुलाकर उनसे कहा, *"तुम इसे लोगों को भटकाने, बहकानेवाले एक व्यक्ति के रूप में मेरे पास लाए हो, और देखो, मैंने तुम्हारे सामने उसकी जाँच की, पर तुमने इस पर जो दोष लगाते है उनका न तो मुझे कोई आधार मिला, न ही हेरोदेस को, क्योंकि उसने इसे वापस हमारे पास भेज दिया है। इसने ऐसा कुछ नहीं किया है कि यह मृत्यु दण्ड के योग्य ठहराया जाए। इसलिए मैं इसे कोडे मरवा कर छोड़ दूँगा।" [Luke 23:13-16]*

राज्यपाल का यह रिवाज था कि फसह के अवसर पर वह लोगों के लिये किसी एक कैदी को जिसे वे चाहते थे, छोड़ दिया करता था। उस समय बरअब्बा (Barabbas) नामक एक बदनाम कैदी था, जिसे मार धाड और हत्या के जुर्म में कैद में डाला हुआ था। अतः जब लोग इकट्ठे हुए तो पिलातुस ने उनसे पूछा, *"तुम किसको चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूँ? बरअब्बा को या यीशु को जो मसीह कहलाता है?"* क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने यीशु को डाह से पकड़वाया है।

पिलातुस जब न्याय के आसन पर बैठा हुआ था तो उसकी पत्नी ने उसके पास एक संदेश भेजा: *"तू उस सीधे सच्चे आदमी के मामले में हाथ न डालना, क्योंकि मैंने उसके बारे में एक स्वप्न देखा है जिसके कारण आज सारे दिन मैं उसके लिए बैचेन रही।"*

किन्तु प्रमुख याजकों और प्राचीनों ने लोगों को उभारा कि वे बरअब्बा को छोडने की और यीशु को मरवा डालने की माँग करें।

जब राज्यपाल ने पुनः उनसे पूछा, *"इन दोनों में से तुम किसको चाहते हो कि मैं छोड़ दूँ?"* तो उन्होंने कहा, *"बरअब्बा को।"*

तब पिलातुस ने उनसे पूछा, *"फिर मैं यीशु मसीह का क्या करूँ?"* तो सब ने कहा, *"उसे क्रूस पर चढ़ा दो।"("Let him be crucified!")*

इस पर पिलातुस ने पूछा, *"क्यों, उसने कौन सा अपराध किया है?"* परन्तु वे और अधिक चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे, *"उसे क्रूस पर चढ़ा दो।"* तब पिलातुस ने उनसे कहा, *"तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ा दो, क्योंकि मैंने उसमें कोई दोष नहीं पाया है।"* इस पर यहूदियों ने उसको उत्तर दिया, *"हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है, क्योंकि उसने अपने आप को 'परमेश्वर का पुत्र' कहा है।" [John 19:6-7]*

(जब पिलातुस ने यहूदियों की यह बात सुनी तो वह भी डर गया। फिर उसने महल में जाकर यीशु से पूछा, *"तू कहाँ से आया है?"* परन्तु यीशु ने उसे उत्तर नहीं दिया। इस पर पिलातुस ने उससे पूछा, *"क्या तू मुझसे बात नहीं करना चाहता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है?"* यीशु ने उसे उत्तर दिया, *"तुम्हें तब तक मुझ पर कोई अधिकार नहीं हो सकता जब तक वह तुम्हें परम पिता द्वारा नहीं दिया गया होता। इसलिए जिस ने मुझे तेरे हवाले किया है, वह तुझसे भी अधिक पापी है।"* यह सुनकर पिलातुस उसे छोड़

देने का कोई उपाय ढूँढने लगा, परन्तु यहूदियों ने चिल्ला चिल्लाकर कहा, *“यदि तू इसको छोड़ देगा तो तू कैसर का मित्र नहीं है; कोई भी जो अपने आप को राजा होने का दावा करता है वह कैसर का विरोधी है।”* जब पिलातुस ने यह सुना तो वह यीशु को बाहर उस स्थान चबूतरे पर ले आया जो गब्बता (Gabbatha) कहलाता था। वह फसह की तैयारी का दिन था और लगभग दोपहर का समय था। तब उसने यहूदियों से कहा, *“देखो, यही रहा तुम्हारा राजा!”* परन्तु यीशु को वे चिल्लाने लगे, *“इसे ले जाओ! इसे ले जाओ! इसे क्रूस पर चढ़ा दो!”* पिलातुस ने उनसे कहा, *“क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारे राजा को मैं क्रूस पर चढ़ाऊँ?”* प्रमुख याजकों ने उत्तर दिया, *“कैसर के सिवा और कोई हमारा राजा नहीं है।” John 19:8-15*)

जब पिलातुस ने देखा कि अब वह कुछ नहीं कर सकेगा, बल्कि दंगा भडकने को है, तो उसने थोडा पानी लेकर लोगों के सामने अपने हाथ धोये, और कहा, *“इस व्यक्ति के खून से मेरा कोई सरोकार नहीं; यह तुम्हारा मामला है और तुम ही जानो।”*

इस पर सब लोगों ने कहा, *“इसके मौत की जवाबदेही हम और हमारी सन्तान पर है!”* तब पिलातुस ने उनके लिये बरअब्बा को छोड़ दिया और यीशु को कोड़े लगवा कर क्रूस पर चढ़ाने ले लिए सौंप दिया। *[Matthew 27:15-26; Mark 15:6-15; Luke 23:13-25]*

यीशु का उपहास

फिर राज्यपाल के सिपाहियों ने यीशु को किले में ले जाकर उसके चारों सारे सैनिक लगा दिये। उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे लाल चोगा (scarlet robe) पहनाया और काँटों का एक मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रख दिया; उसके दाहिने हाथ में एक सरकण्डा (reed) थमा दिया और उसके आगे घुटने टेककर उसकी हँसी उड़ाने लगे, *“हे यहूदियों के राजा, प्रणाम!”*

फिर उन्होंने उस पर थूका, और वही सरकण्डा लेकर उसके सिर पर मारने लगे। जब वे उसका उपहास कर चुके तो उन्होंने वह चोगा उतारकर उसे उसके कपड़े पहना दिये और क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले। *[Matthew 27:27-31; Mark 15:16-20; John 19:2-3]*

कुरेन का शमौन और यीशु का क्रूस

जब वे यीशु को ले जा रहे थे तब उन्हें कुरेन (Cyrene) का शमौन (Simon) नामक एक व्यक्ति मिला, जो अपने खेत से वापस आ रहा था। उन्होंने उसे पकडकर उस पर यीशु का क्रूस लाद दिया और उसे यीशु के पीछे पीछे चलने को विवश किया। लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके पीछे पीछे चल रही थी। इसमें कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी थी जो उसके लिये छाती-पीटती और विलाप कर रही थीं। यीशु ने उनकी तरफ मुडकर कहा, *"हे यरूशलेम की पुत्रियों, मेरे लिये मत बिलखो, बल्कि स्वयं अपने और अपनी संतान के लिये विलाप करो, क्योंकि ऐसे दिन आ रहे हैं जब लोग कहेंगे, 'धन्य हैं वे स्त्रियाँ जो बाँझ हैं और धन्य हैं वे कोख जिन्होंने किसी को जन्म ही नहीं दिया, और धन्य हैं वे स्तन जिन्होंने कभी दूध नहीं पिलाया।' फिर वे पर्वतों से कहेंगे, 'हम पर गिर पडो' और पहाडियों से कहेंगे, 'हमें ढक लो।' क्योंकि लोग जब पैड हरा है तब उसके साथ ऐसा करते है तो जब पैड सूख जायेगा तब क्या कुछ नहीं करेंगे?" [Matthew 27:32; Mark 15:21; Luke 23:26-31]*

गुलगुता (Golgotha) नामक स्थान में

जब वे गुलगुता नामक स्थान (खोपड़ी का स्थान) पर पहुँचे तो उन्होंने यीशु को पित्त (gall) मिश्रित दाखरस पीने को दिया, परन्तु जब यीशु ने उसे चखा तो पीने से मना कर दिया। फिर उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया। उसी समय यीशु के साथ दो डाकू एक उसके दाहिने और दूसरा उसके बाएँ क्रूस पर चढ़ाए गए। जब वे उसे क्रूस पर चढ़ा रहे थे तब यीशु बोला, *"हे परम पिता, इन्हें क्षमा कर देना, क्योंकि ये नहीं जानते*

कि ये क्या कर रहे है।" फिर चिट्ठियाँ डालकर उसके कपड़े आपस में बाँट लिए और वहाँ बैठकर उस पर पहरा देने लगे। उन्होंने उसका दोषपत्र (accusation) उसके सिर पर टाँग दिया, जिस में लिखा गया था: *"यह यहूदियों का राजा यीशु है।" [Matthew 27:33-38; Mark 15:22-23; Luke 23:33-34]* यूहन्ना के सुसमाचार के अनुसार, दोषपत्र में इब्रानी, लातीनी और यूनानी भाषाओं में लिखा गया, *"यीशु नासरी, यहूदियों का राजा।"* पर यहूदियों जब यह दोषपत्र पढ़ा तो प्रमुख याजकों ने पिलातुस से कहा, *"'यहूदियों का राजा' मत लिख, परन्तु यह लिख कि 'उसने कहा था कि मैं यहूदियों का राजा हूँ'।"* इस पर पिलातुस ने उत्तर दिया, *"मैंने जो लिख दिया, सो लिख दिया।" [John 19:19-22]*

वहाँ से आने-जानेवाले लोग सिर हिला-हिलाकर उसका अपमान कर रहे थे, और कहते थे, *"हे मन्दिर को गिरा कर उसे तीन दिन में फिर से बनाने वाले, पहले अपने आप को तो बचा! यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस से नीचे उतर आ।"* इसी तरह प्रमुख याजक भी शास्त्रियों और प्राचीनों के साथ उसका यह कहकर उपहास कर रहे थे, *"इसने दूसरों को तो बचाया, पर अपने आप को नहीं बचा सकता! यह तो इस्राएल का राजा है! यदि वह अभी क्रूस पर से उतर आए, तो हम इसे मान लें। उसे परमेश्वर में विश्वास था। यदि वह इसको चाहता है तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि यह तो कहता भी था, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।'" [Matthew 27:39-43]*

यीशु के साथ जिन डाकूओं को लटकाया गया था उनमें से एक ने यीशु का उपहास करते हुए कहा, *"क्या तू मसीह नहीं? हमें और अपने आप को बचा ले!"* इस पर दूसरे ने उसे फटकारते हुए कहा, *"क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी तो वही दण्ड पा रहा है, और हमें तो न्यायानुसार दण्ड मिला हैं, क्योंकि हम अपने कर्मों का ठीक फल पा रहे हैं, पर इस व्यक्ति ने तो कुछ भी अनुचित नहीं किया है।"* फिर उसने यीशु से कहा, *"हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आये तो मेरी सुधि लेना।"* यीशु ने उससे कहा,

"मैं तुझ से सत्य कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" [Luke 23:39-43]

यूहन्ना के सुसमाचार के अनुसार, यीशु के क्रूस के पास उसकी माँ, उसकी मौसी, क्लोपास की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलीनी खड़ी थी। यीशु ने जब अपनी माता और अपने एक प्रिय शिष्य को पास ही खड़े देखा तो उसने अपनी माँ से कहा, *"हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है।"* फिर उसने अपने उस शिष्य से कहा, *"देख, यह तेरी माता है।"* और उसी समय से वह शिष्य उसे अपने घर ले गया। *[John 19:25-27]*

यीशु की मृत्यु

दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में (समूची धरती पर) गहरा अंधेकार छा गया। कोई तीन बजे के आसपास यीशु ने उँचे स्वर में पुकारा, *"एली, एली, लमा शबक्तनी? (Eli, Eli, lama sabachthani अर्थात् "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?)"* वहाँ खड़े लोगों में से कुछ यह सुनकर कहने लगे, *"वह एलिय्याह (Elias) को पुकार रहा है।"* उनमें से एक तुरन्त दौड़ा, और एक पनसोख्ता (spunge) लेकर सिरके (vinegar) में डुबोया, और उसे सरकण्डे पर रखकर यीशु को चूसने के लिए दिया, किन्तु दूसरे लोगों ने कहा, *"रहने दे, चलो देखते है कि एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं।"* यीशु ने फिर एक बार उँचे स्वर में पुकारा, ***"हे परम पिता, मैं अपना आत्मा तेरे हाथों सौंपता हूँ।"*** *(Father, into thy hands I commend my spirit.)* यह कहकर उसने प्राण छोड़ दिए। *[Matthew 27:45-50; Mark 15:33-37; Luke 23:44-46]*

यूहन्ना के सुसमाचार के अनुसार, जब यीशु ने यह जान लिया कि अब सब कुछ पूरा हो चुका है, तो उसने कहा, *"मैं प्यासा हूँ।"* वहाँ सिरके से भरा हुआ एक बर्तन रखा हुआ था, इसलिए उन्होंने एक पनसोख्ता को सिरके में डुबो कर एक टहनी पर रखा और उसके मुँह से लगाया। जब यीशु ने वह सिरका ले लिया तो वह बोला, *"पूरा*

हुआ।" और उसने अपना सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए। *[John 19:28-30]* ठीक उसी क्षण मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया, धरती काँप उठी और चट्टानें फट गईं। कब्रें खुल गईं, और मरे हुए पवित्र लोगों (saints) के बहुत से शरीर जी उठे और कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में जाकर बहुतों को दिखाई दिए। *[Matthew 27:51-53; Mark 15:38]*

जब रोमी सेना नायक (centurion) और उसके साथ यीशु पर पहरा दे रहे लोगों ने भूचाल और वैसी ही दूसरी घटनाओं को देखा तो वे अत्यन्त डर गए, और परमेश्वर की स्तुति करते हुए कहने लगे, *"सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था!" [Matthew 27:54; Mark 15:39]*

वहाँ बहुत सी स्त्रियाँ जो गलील से यीशु की सेवा के लिए उसके साथ आईं थीं, दूर से देख रही थीं। उनमें मरियम मगदलीनी (Mary Magdalene), याकूब और योसेफ की माता मरियम तथा जब्दी के पुत्रों की माँ थीं। *[Matthew 27:55-56; Mark 15:40-41; Luke 23:49]*

वह तैयारी का दिन था, इसलिये यहूदियों ने पिलातुस से विनती की कि (जिन्हें क्रूस पर चढाये गये थे) उनकी टाँगें तोड़ दी जाएँ और उनके शव क्रूसों पर से उतार जाएँ ताकि सब्त के दिन उनके शव क्रूसों पर न लटके रहें, क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन (high day) था। तब कुछ सिपाहियों ने आकर पहले की टाँगें तोड़ दी, फिर दूसरे की भी टाँगें तोड़ दी। पर जब वे यीशु के पास आये और उन्होंने देखा कि वह तो पहले से ही मर चुका है तो उन्होंने उसकी टाँगें नहीं तोड़ी। पर उन सिपाहियों में से एक ने यीशु के पंजर में अपना भाला बेधा जिससे उसमें से तुरन्त लहू और पानी बहने लगा। *[John 19:31-34]*

यीशु का दफन

सांझ के समय अरिमतियाह (Arimathaea) नगर से यूसुफ नामक एक धनी व्यक्ति आया और पिलातुस के पास जाकर यीशु का शव माँगा। पिलातुस ने आज्ञा दी कि शव उसे दे दिया जाये। (यूसुफ स्वयं यीशु का चेला था और यहूदी महासभा का एक सदस्य था।) फिर यूसुफ और नीकुदेमुस ने, जो गन्धरस और एलवा ले आया था, शव को नीचे उतार कर सुगन्ध-द्रव्य के साथ उसे मलमल (linen) के कपडे में लपेटा, और उसे अपनी निजी कब्र (sepulchre) में रख दिया, जिसे उसने चट्टान में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर एक बड़ा सा पत्थर लुढ़काकर चला गया। वह तैयारी का दिन (शुक्रवार) था, और सब्त का दिन प्रारम्भ होने को था। *[Matthew 27:57-60; Mark15:42-46; Luke 23:50-54; John 19:38-42]*

वे स्त्रियाँ, जो गलील से यीशु के साथ आई थीं, यूसुफ के पीछे-पीछे कब्र तक आयी थी। उन्होंने वह कब्र देखी और देखा कि उसका शव कब्र में कैसे रखा गया हैं। फिर उन्होंने वापस लौटकर सुगन्धित सामग्री और लेप तैयार किये। सब्त के दिन शास्त्र की आज्ञा के अनुसार उन्होंने विश्राम किया। *[Luke 23:55-56]*

कब्र पर पहरा

अगले दिन, जो तैयारी के दिन (the day of preparation / शुक्रवार) के बाद का दिन था, प्रमुख याजकों और फरीसियों ने पिलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा, *"महोदय, हमें याद है कि उस छली ने अपने जीते जी कहा था, 'तीन दिन के बाद मैं फिर से जी उठूँगा।' अतः आज्ञा दीजिए कि तीसरे दिन तक कब्र की चौकसी की जाए, जिससे ऐसा न हो कि उसके चेले रात में आकर उसका शव चुरा ले जायें और लोगों से कहने लगें कि वह मरे हुओं में से जी उठा है।"* इस पर पिलातुस ने उनसे कहा, *"तुम्हारे पास पहरेदार (guards) तो हैं। जाओ, जैसी चौकसी कर सकते हो, करो।"* अतः वे पहरेदारों को साथ लेकर कब्र पर गए और पत्थर पर मुहर लगाकर और पहरेदारों को वहाँ बैठाकर कब्र को सुरक्षित दी। *[Matthew 27:62-66]*

यीशु का पुनरुत्थान (resurrection)

मत्ती के सुसमाचार के अनुसार, सब्त (Sabbath / शनिवार) के बाद जब सप्ताह के पहले दिन (रविवार) सुबह पौ फट रही थी तब मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई। अचानक एक बड़ा भूकम्प हुआ, स्वर्ग से परमेश्वर का एक दूत उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली के समान चमचामा रहा था और उसके वस्त्र बर्फ के समान उज्ज्वल थे। पहरेदार सिपाही डर के मारे काँपने लगे, और ऐसे हो गये जैसे मर गये हो। तब स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, *"डरो मत। मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को खोज रही हो। वह यहाँ नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ, यह स्थान देखो, जहाँ उसे रखा गया था। और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, 'वह मृतकों में से जी उठा है, और वह तुमसे पहले गलील को जा रहा है। वहाँ तुम उसका दर्शन पाओगे।'"* वे स्त्रियाँ कब्र से भय और बड़े आनन्द के साथ शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिये दौड़ गई। तब मार्ग में अचानक यीशु उनसे मिला और उन्होंने पास जाकर उसके पाँव पकड़ लिये और उसकी उपासना की। तब यीशु ने उनसे कहा, *"डरो मत; जाकर मेरे भाइयों से कहो कि वे गलील को चलें जाएँ, और वहाँ वे मुझे देखेंगे।" [Matthew 28:1-10]*

जब वे स्त्रियाँ अभी जा ही रही थी, कि कब्र पर पहरा दे रहे कुछ सिपाहीयों ने नगर में जाकर पूरा हाल प्रमुख याजकों से कह सुनाया। सो उन्होंने प्राचीनों (elders) के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की और सिपाहियों को बहुत सा धन देकर कहा, *"तुम्हें लोगों से यह कहना है कि रात को जब हम सो रहे थे तो उसके चेले आकर उसका शव चुरा ले गए। यदि यह बात राज्यपाल के कान तक पहुँचेगी तो हम उसे समझा लेंगे और तुम पर कोई आँच नहीं आने देंगे।"* अतः पहरेदारों ने रुपये लेकर जैसा सिखाए गया था वैसा ही किया। *[Matthew 28:11-15]*

लूका के सुसमाचार के अनुसार, सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर को (very early in the morning) वे स्त्रियाँ सुगन्धित वस्तुओं को लेकर कब्र पर आयीं और देखा तो उन्होंने पत्थर को कब्र पर से लुढ़का हुआ पाया, सो वे कब्र के भीतर गई, किन्तु उन्हें वहाँ यीशु का शव नहीं मिला। जब वे इस पर अभी उलझन में ही थीं कि चमचमाते वस्त्र पहने हुए दो पुरुष उनके पास आ खड़े हुए। उन्हें देखकर जब वे डर गईं, तो उन्होंने उनसे कहा, *"जो जीवित है उसे तुम को मरे हुओं (मुर्दों) में क्यों ढूँढ़ रही हो? वह यहाँ नहीं, परन्तु जी उठा है। स्मरण करो कि उसने गलील में रहते हुए तुम से कहा था। उसने कहा था कि 'मनुष्य का पुत्र का पापियों के हाथों में सौंपा जाना निश्चित है और फिर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जाएगा और तीसरे दिन उसको जीवित कर देना निश्चित है।"* तब उन स्त्रियों को उसके शब्द याद आये। *[Luke 24:1-8]*

मरकुस के सुसमाचार के अनुसार, जब सब्त का दिन बीत गया तो मरियम मगदलीनी, याकूब की माता मरियम, और सलोमी ने यीशु के शव पर मलने के लिये सुगन्धित वस्तुएँ मोल लीं। सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर, **जब सूरज निकला ही था**, वे कब्र पर आईं, और आपस में कहती थीं, *"हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा?"* कब्र पर पहुँचकर जब उन्होंने देखा तो पत्थर कब्र के मुख से लुढ़का हुआ पाया गया! जब वे कब्र के भीतर गई तो देखा कि श्वेत वस्त्र पहने हुए एक युवक दाहिनी ओर बैठा हुआ था। वे सहम गयी। उस युवक ने उनसे कहा, *"डरो मत, तुम जिस यीशु नासरी को ढूँढ़ रही हो, जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, वह जी उठा है!वह यहाँ नहीं है। देखो, यही वह स्थान है जहाँ उसे रखा था। अब तुम जाओ और उसके चेलों और पतरस से कहो कि वह तुम से पहले ही गलील जा रहा है जैसा उसने तुम से कहा था, तुम वहीं उसे देखोगे।"* तब कँपकँपी और अचरज के साथ वे कब्र से बाहर निकलकर भाग गई। उन्होंने किसी को कुछ नहीं कहा, क्योंकि वे डर गईं थीं। *[Mark 16:1-8]*

यूहन्ना के सुसमाचार के अनुसार, सप्ताह के पहले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आयी और उसने देखा कि कब्र से पत्थर हटा हुआ है। फिर वह दौड़कर शमौन पतरस और उस दूसरे शिष्य के पास, जो यीशु का प्रिय था, पहुँची और उनसे कहा, *"वे प्रभु को कब्र से निकाल कर ले गये हैं और हमें नहीं पता कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है।"* फिर पतरस और वह दूसरा शिष्य वहाँ से कब्र की ओर चल पडे। वे दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे, पर दूसरा शिष्य पतरस से आगे निकल गया और कब्र पर पहले जा पहुँचा। उसने नीचे झुककर बाहर से देखा तो कब्र में केवल कफन के कपडे पडे थे। तभी शमौन पतरस भी उसके पीछे-पीछे आ पहुँचा और कब्र के भीतर चला गया और उसने देखा कि वहाँ कफन के कपडे पडे थे और वह अँगोछा जो यीशु के सिर पर बन्धा हुआ था, कफन के साथ नहीं, बल्कि उससे अलग एक स्थान पर लपेटा हुआ देखा। फिर वह दूसरा शिष्य भी, जो कब्र पर पहले पहुँचा था, भीतर गया और देखकर विश्वास किया। फिर तब ये शिष्य अपने घर वापस लौट गए। *[John 20:1-10]*

मरियम मगदलिनी को यीशु के दर्शन

मरियम रोती बिलखती हुई कब्र के बाहर खड़ी थी और रोते-रोते जब वह कब्र में अंदर झाँकने के लिये नीचे झुकी तो उसने दो स्वर्गदूतों को श्वेत वस्त्र पहने हुए जहाँ यीशु का शव रखा गया था वहाँ एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा। उन्होंने उससे पूछा, *"हे नारी, तू क्यों विलाप कर रही है?"* उसने उत्तर दिया, *"वे मेरे प्रभु को उठा ले गए है और मैं नहीं जानती कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है।"* इतना कहकर वह पीछे मुडी तो उसने वहाँ यीशु को खड़े देखा, लेकिन वह नहीं जान पायी कि वह यीशु था। फिर यीशु ने उससे पूछा, *"हे नारी, तू क्यों रो रही है? तू किसे खोज रही है?"* मरियम ने उसे माली समझकर उससे कहा, *"श्रीमान, यदि कहीं तूमने उसे उठा लिया है तो मुझे बताओ कि तुमने उसे कहाँ रखा है? मैं उसे ले जाऊँगी।"* इस पर यीशु ने

उससे कहा, *"मरियम!"* उसने पीछे मुडकर उससे इब्रानी में कहा, *"रब्बूनी!"* (अर्थात् 'हे गुरु।') यीशु ने उससे कहा, *"मुझे मत छू, क्योंकि मैं अभी तक पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ; तू मेरे भाइयों के पास जा और उनसे कह दे कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूँ।"* इस पर मरियम मगदलीनी ने जाकर शिष्यों को बताया, *"मैंने प्रभु को देखा है और उसने मुझे ये बातें बताई है।" [John 20:11-18]*

शिष्यों को यीशु के दर्शन

मत्ती के सुसमाचार के अनुसार, फिर ग्यारहों चेले गलील में उस पहाड़ पर पहुँचे जहाँ जाने को यीशु ने उनसे कहा था। वहाँ उन्होंने यीशु के दर्शन पाकर उसकी उपासना की, पर कुछ के मन में सन्देह हुआ। यीशु ने उनके पास जाकर कहा, *"स्वर्ग में और पृथ्वी पर सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाओ, और सभी देशों के लोगों को मेरे अनुयायी बनाओ। उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और उन सभी आदेशों का पालन करना सिखाओ, जो मैंनें तुम्हें दिये है। देखो, मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ, संसार के अन्त तक।"* मत्ती का सुसमाचार यहाँ समाप्त होता है। *[Matthew 28:16-20]*

लूका के सुसमाचार के अनुसार, कब्र से लौटकर उन स्त्रियों ने ये सब बातें ग्यारहों प्रेरितों को और अन्य सभी को सुनाई। वे स्त्रियाँ थी मरियम मगदलीनी और योअन्ना और याकूब की माता मरियम और उनके साथ की अन्य स्त्रियाँ। पर उनकी बातें प्रेरितों को व्यर्थ सी लगी और उन्होंने उन पर विश्वास नहीं किया। किन्तु पतरस उठकर कब्र की ओर दौड़ा आया। उसने नीचे झुक कर अंदर देखा, पर उसे कफन के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई दिया। फिर वह चला गया। *[Luke 24:9-12]*

लूका के अनुसार, उसी दिन प्रेरितों में से दो यरूशलेम से कोई सात मील दूर इम्माऊस (Emmaus) नामक एक गाँव को जा रहे थे। तभी स्वयं यीशु वहाँ आ

उपस्थित हुआ और उनके साथ-साथ चलने लगा, परन्तु वे उसे पहचान न सके। यीशु ने उनसे पूछा, *"चलते-चलते एक दूसरे से ये तुम किन बातों की चर्चा कर रहे हो?"* वे चलते हुए रुक गए। वे बहोत दुखी दिखाई दे रहे थे। यह सुनकर उनमें से क्लियुपास (Cleopas) नामक एक व्यक्ति ने कहा, *"यरूशलेम में रहने वाला तू अकेला ही ऐसा व्यक्ति होगा जो पिछले दिनों जो बातें घटी है उन्हें नहीं जानता।"* इस पर यीशु ने उनसे पूछा, *"कौन सी बातें?"* उन्होंने कहा, *"यीशु नासरी के बारे में जो जिसने जो किया और कहा उससे यह दिखा दिया कि वह एक महान नबी था। प्रमुख याजकों और हमारे शासकों ने उसे पकड़वा दिया और उसे क्रूस पर चढा दिया। हमें आशा थी कि वही इस्राएल को छुटकारा दिलाएगा। इस घटना को हुए आज तीसरा दिन है। हमारी टोली की कुछ स्त्रियों ने भी हमें आश्चर्य में डाल दिया है, जो आज भोर को उसकी कब्र पर गई थीं। पर उन्हें जब उसका शव नहीं मिला, तो वे वापस हमारे पास आकर कहने लगी कि उन्होंने स्वर्गदूतों का दर्शन पाया है, जिन्होंने कहा कि यीशु जीवित है। जब हमारे साथियों में से कुछ एक कब्र पर गए तो जैसा स्त्रियों ने बताया था, उन्होंने वहाँ वैसा ही पाया। उन्होंने ने यीशु के शब को नहीं देखा।" [Luke 24:13-24]*

तब यीशु ने उनसे कहा, *"हे मूर्खों, नबियों की बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियों! क्या मसीह के लिये यह आवश्यक नहीं था कि वह इन यातनाओं को भोगे और इस प्रकार अपनी महिमा में प्रवेश करे?"* तब उसने मूसा से लेकर सभी नबियों और समूचे शास्त्रों में उसके बारे में जो कुछ कहा गया था, उसका अर्थ उन्हें समझाया। *[Luke 24:25-27]*

इतने में जब वे उस गाँव के पास पहुँचे जहाँ वे जा रहे थे, यीशु ने ऐसा वर्ताव किया, जैसे उसे आगे जाना हो। किन्तु उन्होंने यह कहकर उसे रोका, *"हमारे साथ रुक जा, क्योंकि लगभग साँझ हो चुकी है और दिन भी ढल गया है।"* तब वह उनके साथ ठरहने के लिये भीतर गया। जब वह उनके साथ भोजन करने बैठा तो उसने रोटी उठाई और

धन्यवाद किया। फिर उसे तोड़कर जब वह उन्हें दे रहा था तभी उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने उसे पहचान लिया, किन्तु वह उनके सामने से अदृश्य हो गया। फिर वे आपस में कहने लगे, *"जब वह मार्ग में हम से बातें कर रहा था और शास्त्र का अर्थ हमें समझा रहा था, तो क्या हमारे हृदय के भीतर आग सी नहीं भडक उठी थी?"* वे तुरंत उठकर यरूशलेम लौट गए, और वहाँ उन्हें वे ग्यारहों प्रेरित और अन्य साथी इकट्ठे मिले, जो कह रहे थे, *"प्रभु सचमुच जी उठा है, और शमौन को दिखाई दिया है।"* फिर उन दोनों ने मार्ग में और भोजन के समय जो हुआ था उसका ब्यौरा दिया। अभी वे उन्हें ये बातें बता ही रहे थे कि यीशु स्वयं उनके बीच आ खड़ा हुआ और उनसे कहा, *"तुम्हें शान्ति मिले।"* परन्तु वे चौंक गए और भयभीत हो उठे, और समझे कि वे कोई भूत देख रहे हो। तब उनसे कहा, *"तुम घबराते क्यों हो? तुम्हारे मन में सन्देह क्यों उठते हैं? मेरे हाथों और मेरे पैरों को देखो, मुझे छूकर देखो, और देखो कि किसी भूत के माँस और हड्डियाँ नहीं होती।"* यह कहकर उसने अपने हाथ पाँव उन्हें दिखाए, किन्तु अपने आनन्द के मारे अब भी उनको विश्वास नहीं हो रहा था, तो यीशु ने उनसे पूछा, "क्या यहाँ तुम्हारे पास कुछ भोजन है?" उन्होंने उसे भुनी मछली का एक टुकड़ा दिया और उसने उसे लेकर उनके सामने ही खाया। फिर उसने कहा, *"ये मेरी वे बातें हैं जो मैंने तुमसे तब कही थीं, जब मैं तुम्हारे साथ था। जितनी भी बातें मूसा की व्यवस्था में, नबियों कि पुस्तकों में और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी होनी ही है।"* तब पवित्र शास्त्रों को समझने के लिये उसने उनकी समझ खोल दी। और उनसे कहा, *"यह लिखा है कि मसीह दुःख उठाएगा और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, और पापों की क्षमा के लिए मनफिराव का यह संदेश यरूशलेम से लेकर सब जातियों में प्रचारित किया जाएगा। तुम इन सब बातें के गवाह हो। और अब मेरे पिता ने मुझसे जो प्रतिज्ञा की है, उसे मैं तुम पर उतारूँगा, किन्तु तुम्हें इस नगर में उस समय तक ठहरे रहना है जब तक तुम परमेश्वर की शक्ति से युक्त न जाओ।" [Luke 24:28-49]*

मरकुस के अनुसार, सप्ताह के पहले दिन भोर होते ही यीशु जी उठ कर पहले-पहल मरियम मगदलीनी को, जिसमें से उसने सात दुष्टात्माएँ निकाली थीं, दिखाई दिया। उसने जाकर उसके शोकमग्न साथियों को समाचार दिया, लेकिन उन्होंने यह सुनकर विश्वास नहीं किया कि वह जीवित है और उसने उसे देखा है। *[Mark 16:9-11]*

इसके बाद उनमें से दो को जब वे गाँव की ओर जा रहे थे, यीशु दूसरे रूप में दिखाई दिया। उन्होंने भी जाकर औरों को समाचार दिया, परन्तु उन्होंने उनका भी विश्वास नहीं किया। बाद में वह उन ग्यारह चेलों के सामने भी प्रकट हुआ जब वे भोजन करने बैठे थे, और उन्हें उनके अविश्वास और मन की जडता पर उलाहना दिया, क्योंकि उन्होंने उनका भी विश्वास न किया था जिन्होंने उसे जी उठने के बाद देखा था। फिर यीशु ने उनसे कहा, ***"तुम सारे जगत में जाकर लोगों को सुसमाचार का उपदेश दो। जो कोई विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो अविश्वासी है उसे दोषी ठहराया जाएगा। विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे: वे मेरे नाम पर दुष्टात्माओं को बाहर निकाल सकेंगे, नई-नई भाषा बोलेंगे; वे अपने हाथों से साँप पकड लेंगे, और वे यदि वे प्राणनाशक विष भी पी जाएँ तो भी उनकी कुछ हानि नहीं होगी; वे रोगियों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएँगे।"*** *[Mark 16:12-18]*

यूहन्ना के सुसमाचार के अनुसार, उसी दिन शाम को (अर्थात् सप्ताह के प्रथम दिन रविवार की शाम को) यीशु के शिष्य यहूदियों के डर के मारे इकट्ठे होकर घर के दरवाजे बंद कर अंदर बैठे हुए थे तभी यीशु वहाँ आकर उनके बीच खड़ा हो गया और उनसे कहा, *"तुम्हें शान्ति मिले। (Peace be unto you.)"* इतना कहकर उसने अपने हाथ और अपना पंजर उनको दिखाए। शिष्यों ने जब यीशु को देखा तो वे बहुत प्रसन्न हुए। यीशु ने फिर उनसे कहा, *"तुम्हें शान्ति मिले। जैसे पिता ने मुझे भेजा है वैसे ही मैं भी तुम्हें भेज रहा हूँ।"* यह कहकर उसने उन पर फूँक मारी और कहा, ***"पवित्र आत्मा को***

ग्रहण करो। जिस किसी के पापों को तुम क्षमा करोंगे उन्हें क्षमा मिल जाएगी, और जिनके पापों को तुम क्षमा नहीं करते, वे बिना क्षमा पाए रहेंगे।" *[John 20:19-23]*

जब यीशु अपने शिष्यों के पास आया तब थोमा दिदुमुस (Thomas Didymus) नामक एक शिष्य वहाँ उनके साथ नहीं था। जब दूसरें शिष्यों ने उससे कहा कि हमने प्रभु को देखा है, तो उसने उनसे कहा, *"जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के छेद न देख लूँ और उन छेदों में अपनी उँगली न डाल लूँ तथा उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूँ, तब तक मुझे विश्वास नहीं होगा।"* आठ दिन बाद उसके शिष्य एक बार फिर घर के भीतर एकत्र हुए थे और थोमा भी वहाँ उपस्थित था, तब यीशु ने आकर और उनके बीच खड़ा होकर कहा, *"तुम्हें शान्ति मिले।"* फिर अपने घावों को दिखाते हुए उसने थोमा से कहा, *"अपनी उँगली इसमें डाल और मेरे हाथ देख और अपना हाथ मेरे पंजर में डाल। संदेह करना छोड दे और विश्वास कर।"* यह सुन कर थोमा बोला, *"हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!"* इस पर यीशु ने उससे कहा, *"तूने तो मुझे देखकर मुझमें विश्वास किया है, किन्तु धन्य वे हैं जो बिना देखे विश्वास रखते है।" [John 20:24-29]*

इसके बाद तिबिरियुस झील के किनारे यीशु ने फिर अपने आप को शिष्यों के सामने इस तरह प्रकट किया। एक दिन शमौन पतरस, थोमा दिदुमुस, नतनएल, जब्दी के बेटे और यीशु के दो अन्य शिष्य इकट्ठे होकर मछली पकड़ने गए, परन्तु उस रात वे कुछ नहीं पकड़ पाये। सुबह में जब वे किनारे पर आये तो उन्होंने यीशु को वहाँ खड़ा हुआ देखा, किन्तु शिष्य जान नहीं सके कि वह यीशु था। तब यीशु ने उनसे कहा, *"बालकों, क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को (कोई मछली) है?"* उन्होंने उत्तर दिया, *"नहीं।"* इस पर उसने कहा, *"नाव की दाहिनी ओर जाल फेंको तो तुम्हें कुछ मिलेगा।"* तब उन्होंने जाल फेंका, किन्तु जाल में फँसी मछलियों की बहुतायत के कारण वे उसे

खींच नहीं सके। इस पर यीशु के प्रिय शिष्य ने पतरस से कहा, *"यह तो प्रभु है।"* शमौन पतरस ने यह सुनकर कि वह प्रभु है, कमर में अपना अंगरखा कस लिया और झील में कूद पड़ा। और दूसरे शिष्य मछलियों से भरा हुआ जाल खींचते हुए नाव से किनारे पर आये। (क्योंकि वे किनारे से अधिक दूर नहीं थे।) जब वे किनारे पर उतरे तो उन्होंने वहाँ दहकते कोयलों की एक आग जलती देखी। उस पर मछली और रोटी पकने के लिए रखी हुई थी। फिर यीशु ने उनसे कहा, *"तुमने अभी जो मछलियाँ पकड़ी हैं, उनमें से कुछ ले आओ।"* इस पर शमौन पतरस नाव पर चढ़कर एक सौ तिरपन बड़ी मछलियों से भरा हुआ जाल किनारे पर खींच लाया। जाला में यद्यपि इतनी अधिक मछलियाँ थीं, फिर भी जाल फटा नहीं। यीशु ने उनसे कहा, *"आओ, भोजन करो।"* पर शिष्यों में से किसी को साहस नहीं हुआ कि वह उससे पूछे, *"तू कौन है?"* क्योंकि वे जान गये थे कि वह प्रभु है। फिर यीशु आगे बढा और अपने शिष्यों को रोटी और मछलियाँ दी। यह तीसरी बार था जब मरे हुओं में से जी उठने के बाद यीशु ने अपने शिष्यों को दर्शन दिए। *[John 21:1-14]*

भोजन करने के बाद यीशु ने शमौन पतरस से कहा, *"हे शमौन, जितना प्रेम ये मुझसे करते है, तू मुझसे उससे अधिक प्रेम करता है?"* पतरस ने उत्तर देते हुए जहा कहा, *"हाँ प्रभु, तू तो जानता है कि मैं तुझे प्रेम करता हूँ।"* इस पर यीशु ने उससे कहा, *"मेरे मेमनों को चरा। (मेरे मेमनों की रखवाली कर।)"* यीशु ने फिर उस (पतरस) से पूछा, *"हे शमौन, क्या तू मुझसे प्रेम करता है?"* पतरस ने उनसे कहा, *"हाँ प्रभु, तू जानता है कि मैं तुझे प्रेम करता हूँ।"* इस पर यीशु ने उससे कहा, *"मेरी भेड़ों को चरा। (मेरी भेड़ों की रखवाली कर।)"* यीशु ने तीसरी बार पतरस से पूछा, *"हे शमौन, क्या तू मुझसे प्रेम करता है?"* इस बार पतरस बहुत व्यथित हो गया, क्योंकि यीशु के प्रति अपने प्रेम के बारे में उसे तीसरी बार पूछा गया था। सो उससे यीशु से कहा, *"हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है। तू जानता है कि मैं तुझसे प्रेम करता हूँ।"* इस पर यीशु ने फिर

उससे कहा, *"मेरी भेड़ों को चरा। मैं तुझसे सच-सच कहता हूँ, जब तू जवान था तब तू अपनी कमर पर फेंटा बाँधकर जहाँ चाहता था वहाँ जाता था, पर जब तू बूढ़ा होगा तब तू अपने हाथ पसारेगा और कोई दूसरा तुझे बाँधकर जहाँ तू नहीं जाना चाहेगा वहाँ तुझे ले जाएगा।"* यीशु ने यह बताकर संकेत दिया कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा। *[John 21:15-19]*

यीशु का स्वर्गारोहण (Ascension)

इस प्रकार यीशु उनसे बात कर चुका तो उसे स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया। शिष्यों ने बाहर निकलकर हर जगह उपदेश दिया, और उनके साथ प्रभु काम करता रहा। *[Mark 16:19-20]* जबकि लूका के अनुसार, यीशु फिर अपने प्रेरितों को बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया। तव उन्होंने उसकी आराधना की और असीम आनन्द से यरूशलेम को लौट आये। फिर वे मन्दिर में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति करते हुए अपना समय बिताने लगे। *[Luke 24:50-53]*

यूहन्ना के सुसमाचार के अनुसार, यीशु ने और भी बहुत से चमत्कार अपने शिष्यों के सामने दिखाए जो लिखे नहीं गए है। और यीशु के बारे में जो बाते लिखी गई है वे इसलिए गई है ताकि लोग विश्वास करें कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाएँ। यूहन्ना लिखता है कि यीशु ने और भी बहुत से कार्य किए है, और यदि वे एक-एक करके उन सभी कार्यों का वर्णन किया जाता तो उतनी पुस्तकें लिखी जातीं कि वे समूची धरती पर नहीं समा पातीं। *[John 20:30-31; 21:25]*